





धर्मरत्न वज्राचार्य दत्त श्री महाबिहार

DH 404

ॐ नमः शिवाय वज्रवाय ॥ रुद्र
 पादः दिनक वरासं मुखि काम
 रुद्रासिद्धि सन्धाधियायी पुत्र
 कर्त्यं च श्रुतां रुद्रावर्गीतां वा
 नां ॥ महासक्त महागुक्तं महासा
 जगत्तां ॥ महासक्त महागुक्तं महासा
 मायाति विश्वना ॥ महासक्त



वलीदिगच्च बासुक्तं कर्माच्च
 शिवाय ॥ निखिलरुद्रानि
 सितजितसाक्षा वज्रवायवाहि
 बाहीनां महावर्तना महाभुवः १
 वासुदेवभुवः ॥ महासक्तं महा
 गुक्तं कानां मिश्रं साक्षा महा
 सनीविद्या पदद्वयं महाभुवः

॥ यथाविश्रादुमाणां विद्ययासाधकं भवती ॥ सद्यगन्धर्वगाहनस्यका सद्यजान्तात् ॥ वि
शाधनपिण्डाचाश्च वाक्यमावगतिं च यान् ॥ वसमान्यानि हूता नां जलनस्तुल्यं निच ॥ मेरु
श्रयो कानं विद्या ॥ ॐ दुर्गालिकादीस्तथा ॥ माह्वनं सुकृत्तं चैव विद्वत्तं चोक्तनादिकं ॥ व
क्तव्यं वैश्वकर्म्मनच ॥ अनेकविधविधानि च ॥ अतर्कधर्मादि श्रुत्तं ॥ अलिकालि विधुविगत
॥ चहुकागीति धर्मस्यापुका ॥ अकर्मका ॥ पंचहस्तमयं वज्रमात्राणि विधानि
॥ चहुकागीति धर्मस्यापुका ॥ अकर्मका ॥ पंचहस्तमयं वज्रमात्राणि विधानि
॥ विधानि विप्रध्वस्तं सर्वरुद्रननागतां ॥ ॐ ॥ नवं मया धर्मं मया सिद्धं मया

गवांस्वर्गकथगतकायवाञ्छिरुक्कवावाहीहृगष्विजहावाश्रय्यातन्प्ररुमिहिर्यागिनीध
रीवीतवागश्रय्यावलाकिमभवादावगीति कोटी योगिनीधवीमध्वर्जवावाहीमंवलाक
सिंममकायीत॥ कृवीयभवीउवाच॥ ॐ उजालमयादृष्टंमहासूखश्रालिंगनामहासूखं
नवजीवावाहीकल्पयोगिनी॥ प्रकारयदृहगवानस्वामीवावाहीवीतसंरुवं॥ उच्यते
नितंकावास्वास्वमिथ्या॥ किंवाभवांमहद्गुंकिंवाचाकथाजनं॥ ॐ उच्यतेविषयं सर्वं
नाहिमभुल्लवहृष्टंमूलंवायुर्मूर्ध्निवजोयंअव॥ वागमाहृष्टमध्वरुलीनाहृष्टं
ऊर्ध्वम्॥ कृजोर्गुरुवावाहीऊर्ध्वम्॥ कृजोर्गुरुवावाहीहृगलिङ्गमनाहृवा॥ महासूखं

याथाहुं न हि श्रुतिरुपमा ॥ स्वरावने वास्यं कुरु खमं श्रीगान्धर्वकं कान्धं जानमहि ॥
कान्धं नृपं सधो ह्रवं ॥ पशोर्जनं दयमिच्छा ॥ मृगायागपसाधकं ॥ त्रयाधिपत्यकीर्द्वी-
संसाधं यद्वा नवी ॥ सकुमात्ता मनावश्यं श्रीजाना यश्च न किञ्चु ॥ अथ वामल कं वा साकव-
चमर्क ॥ समन्वितं ॥ न के का ऊ न मे कुसरादावा वा हियागन ॥ उत्पद्मिव न धारि न्या नाधिका-
या म्च न पंग ॥ दामफति सहस्रयुग्मं धावा वधु नि कां ॥ सर्वं न वा वधु नी श्रव्याय कर्त्तव्यवस्ति-
कं ॥ न सा द्वा वा हि विरुया नो य की च पत्रं पदं ॥ वजादिपथं मंता मश्रुवर्जा च कवजीवा ॥ न वं-
साया रु मज्जा न मथ वा हि न्नि न्नि न ॥ यस्मिं का ल्प ज्मन्तं न सिन्ता ल्पया गवा न् ॥ गः

सागतिपवाध्वरनाहिमज्ञोहृद्वर्धकर॥ विस्मृतंमिसदात्मानंयागिनीवीवतायकी॥ ऊर्ध्वऊर्ध्व
पूजायकस्वचक्रायकाश्चयागिनी॥ अधिपतीचेस्वयादेवीमयासहकृतयागिनी॥ कासुनवाका
नकतुव्यामनकाकनवहिरु॥ एवन्मरुविर्जकृयागिसारोवहिरुगं॥ कृत्तकृत्त॥ चक्रंस्वनंस्वयविवि
ध॥ ऊर्ध्व॥ नाभीपूवपकाकृत्तकृत्त॥ ऊर्ध्वपव॥ कृत्तकृत्तमहाविद्यालिप्यमस्वतात्मना॥ यदि
श्रुवेनाचनानाहंनोहिपि॥ मयधुमशुद्धउड्डासासुगलजकृत्तकृत्तदिवायमशुद्ध॥ अत
मनासवनापष्टमंमजावासावासाहंनानिन्निशाहना॥ मथ॥ ववामकुक्तिरु॥
जनश्रुश्रुनि॥ पू॥ दयहनिमंश्रु॥ धीय॥ मावगुजावर॥ दाय॥ हि॥ यासादिति

त्रि० ॐ असुधना इति त्रिषु च गन्धसु तपि ॐ उवी दश्रुता ॥ बाहनां सहनया ॐ साङ्ग ॐ ॥
अं सुचनता हीवी अं ॥ आ आ वकहन्नाहना ॥ हससिकह वधि व ॐ ववहता व ॥ यवगोय
दि अवी अन्दम ॥ अ न गुणो गा ॐ दसस अमनर सा ॥ सा अलपद अक इति वसहि अदी
यन्ना नन्दवउ ॐ ॥ सचनता वा अनाहा व ॐ सतपि अ व चउ सवशि हा कदाह वदसहउ ॥ व
चलदच ॐ हिहि साह सउ मय अनागा हना सहव सन अनाहि निगुणो अं सदा व नच जमा
अधउध ॐ उनाहा गहन सहा व ॐ धनविहि साय ॐ ॐ उ स क स न ॐ सी उ वद सह स न ॐ उ
पविहति अहं श्री किजाल रूप ॐ नन्दवा अजर वचमुवि ॐ पविहति इत्यनवाहि चिरु ह ॐ ॥

ॐ ॥ अवमूर्क श्रवमकाहिन्नकमाकुश्रुजवाः ॥ यागिनीनामसंयुक्ताकर्मकालचवधाय
ह ॥ अवमूर्कस्यकुसहात्म्यमकुमस्यादिरुवपः ॥ विस्त्रुवक्तिमहात्मानंकलावाकुसहृदुकाः
॥ श्रीः ॥ ॐ विवेकाचेनामहाउधमोधाउकाजहवृत्तः ॥ नमस्तनयः ॥ ॐ उपसंचउत्कवृपनच
सचवाधिनहहविस्मउरूनवननृश्रपहदन्वीकउसेशः ॥ माश्रुतासः ॥ श्रवविन्दः ॥ ४
कदः ॥ तसूपनवगाहसीचन्दचकुपूतिरूपधवापः ॥ श्रविनिविस्मयहः ॥ यत्किहसूठयः ॥ ग
हमचउकावगुजायमचक्रवाहिवीवृजघः ॥ पनचदयदिश्रुतगपहवीः ॥ ॐ सवमथ
हवयः ॥ जालहमूकखनः ॥ सं० ॥ ५१ ॥ स० ॥ हकावगुहाः ॥ चवगमः ॥ मज्जिणिश्रुगहनः ॥

श्रीं॥ नयहन्तउसन ह्रूउ ४ आह लदकर्मविषसुवमउवीउ १ श्रीश्रवकन्त्र ॥ लघु ॥ इति
 वनजा न सदाउपमशु ॥ श्रीवि श्रीवी ७ हिनि सव ह्रूउ ॥ संसव हवाम ॥ सहावे ॥ सववा ॥
 सवगा ॥ ससवस ॥ धाहससहा ॥ दिम ॥ हिनि संवगाहि श्री ॥ श्री ७ अवनिव श्री सग उदा
 बा ॥ जिमजा ० ॥ ७ ॥ श्रीवश ॥ श्री सवपा ॥ धा ॥ हिनि ॥ हकाश ॥ न ॥ ० ॥ व
 ग ॥ सपदि श्री ॥ श्विनिनका सयल सव श्री ॥ न ॥ श्री सवशु ॥ सवह ॥ ० ॥ स्रुवा नहा उरु
 १ ॥ श्रीवा ॥ गाहिगहि श्री ॥ ॥ सवमाया ॥ ॥ स्रु ॥ द ॥ दवी ॥ ॥ सवहल गन ॥ ॥
 नहहिन् ॥ श्रीमहं ॥ श्री ॥ कव ॥ ॥ धा ॥ उ ॥ स्रु ॥ यानवि ॥ ॥ मानम ॥ ॥ लव ॥ ॥ ॥ ॥

धाम्ना वा ॥ लिका न न धम ॥ क ध्य च य स न रु ॥ १ च उ म न ॥ ६४ स हा उ श्रु ह न ॥ प दं नो
स न अ सं ० ॥ उ ति ह अ न मा ति स न वा क च्छ न ॥ च अ उ सि अ ॥ स ह अ व ॥ ७ ॥ प लु प
ह ॥ म रु स रु ज स अ न अ प मा ॥ १ स च न ॥ ७ ॥ अ रु ॥ अ व ज स उ अ नो ह जाम ॥ २ ॥ स न
ह रु ॥ ज व मा दे का वि ॥ ७ ॥ न ० ॥ उ अ न स न अ ॥ ७ ॥ अ म नो ध म स द ॥ ७ ॥ व प ॥ ७ ॥ स अ
ल स हा अ ॥ स अ नो व रु ॥ ७ ॥ व रु ॥ ७ ॥ क अ न वि रु ॥ ७ ॥ स न ॥ स हा अ म रु ॥ ७ ॥ प च
उ ॥ ह ति अ ॥ स रु अ न न ॥ ७ ॥ ॥ रु रु न रु अ ॥ ७ ॥ न म नो ना स रु ॥ ७ ॥ प ॥ ७ ॥ प स च उ रु
॥ प उ उ व व च ॥ ७ ॥ ॥ प रु न रु वी अ ॥ ७ ॥ अ रु व न रु ल य म नो न रु म न रु ॥ ७ ॥ अ प उ ग रु न रु ग

७

हन्तामा नृश ॥ सवभा प्रश्रवशुहाह कउति ह्यनरुनति ॥ परनका नृम कू स
वृश्रमचवाश्रश्र नई दुआ ॥ विसनिरुधम ॥ जवगम सहर्को नृयमह ॥ श्रुक्कनृगावा
चवेगेन समजू वीआ ॥ व समनधिआ ॥ प्रश्रानृग सपन लघ ॥ देवसेवक सदाचे अवमेका
हयपरुदने शशवनचिंदेअ सकुका म्म सनृश्रवका ॥ ॐ ॥ नृनिधीवज वावाहियात्म
हानुवाज वज वावाहीनास संयका ॥ यद्विपथमः पठलः ॥ ॐ ॥ नृसाहकगवां व
ऊवा वाहीशा गकात्यक ॥ कनृधम कामना हृगकचथवच विसुवा ॥ यकुचकपव अगमि
समकुलं घूविसुनं ॥ सिखशयोदमलं लाहु समस्तान्यदविसुवः ॥ वादशं पठरुवद

वाषां भवेत्सुखं ॥ आरुग्णो वा कुरु यस्तु दया कुरु मया पवित्रं ॥ चतुर्विंशं जन्म तत्त्व
कर्तुं वा यास्तु सर्वं ॥ कुरु उत्तमं यत्तत्त्वं स ह्यसिद्धिं सफलं ॥ त्रैलोक्यं पवित्रं न वत्सवत्त
चतुर्विंशं ॥ सर्वेषां श्रेष्ठं नूनं वेत्तु सर्वं दत्तु समन्वितं ॥ कुरु सुखं मया न यत्तु कुरु यथा नृचि
४ ॥ विदुषां वा रुतं सर्वं नाति कादिय कालं ॥ इन्द्रियं विषयं कुरु मया यत्तु कुरु मया कालं ॥ ५
उच्चाटय तन्नाम ॥ वत्तं कुरु कुचिदुक्तं ॥ कुरु वा यत्तु मया वत्तं कुरु पृथिव्यं कुरु ॥ वा
कुरु च सर्वं यत्तु मया कुरु मया कुरु दत्तं ॥ वा यत्तु च यत्तु चिदुक्तं कुरु यत्तु कुरु
न ॥ मया कुरु यत्तु मया कुरु मया कुरु वा यत्तु ॥ मया वा यत्तु मया कुरु मया कुरु

कं॥ कालस्य महात्मा नाउत्पत्त्या रुगमकुना॥ द्वितीययुक्तं पव आमि वा ना ही कस्य संह
को॥ १॥ अहमिहामिह गवन्त्य क्रियकुलकुलं॥ उत्पन्नं च कथं देव सर्वकारे कथागिनी
॥ कथं वा घाति सापथ पृथिव्या वाक्ष भवच॥ पंचकारं कथं देव वक्षिष्यामि कतः पुनः॥ कथं हि
कायमविस्मृतं वाक्चकार कतः स्थितिः॥ कथं हि देव किं नृपं कथयस्व देवतापहाः चन्द्रसूर्य
कथं देव कथं पंचस्वरावर्कं कथं गेहवीवस्वरावर्कनाडी नृपं कथं कतः॥ कतनाडी प्रमानस्य
भगवन्पिबुनः कथं॥ समयसंज्ञकक्षमस्य कथयस्व मम पुनः॥ कतपीभदि संज्ञकं वा
काव्या स्वकं भवच॥ कथं ह्यस्यादित्वा हस्य कथं निमिह दर्शनं॥ कथं गेहदशकं मम मनुः

जापं कथं हवत् ॥ अजमाता कथं पंक्ति कं न जापस्य लज्जं ॥ किं मम सुलमावर्द्धं देवता कालिदा
गक ॥ सिद्धिमर्त्यं कथं देवता मावी कथं कथं ॥ कं न दिवस न वर्द्धं अलिवलि कथं पहा ॥ पं
चामतादिकथं देवपंचाकं च न हवत् ॥ कथयस्य मम सुलमावर्द्धं देवता कथं हवत् ॥ कथं न ह
मिसं ॥ अजमाता कथं हवत् ॥ कं न वा नाहितं कथं योगिनी कथं हवत् ॥ आचार्यक
न क हवत् ॥ कथं सिद्धिं च संयुक्तं ॥ अतिथि कथं प्रमानं च चतुर्थं च कथं हवत् ॥ यूगायुगा कथं सि
द्धि वर्या वावी कथं हवत् ॥ कं न वा नाहितं कथं योगमर्त्यं कथं हवत् ॥ कथं सुजात प्रमानं च कं न
पावसिता सुथ ॥ प्रतिष्ठो हाममासास्य सिद्धिमर्त्यं कथं हवत् ॥ वसायनं कथं देवमथ पान कथं ह

धरु॥ मञ्जुदयं कथं देव मञ्जुदयं कथं देव॥ निगृहं च कथं देव मृत्युहं च कथं देव॥ न
स्वानां च कथं देव गवन्मन्युना कथं॥ कथं शुन्य स्वरावत्तं कथं॥ कथं सुखावत्तं॥ देवीनू
पं कथं नाम वागोही लेखं वलि॥ सर्वधर्मपवित्रं तं हावा नां कथं॥ ० ॥ हगवाना
ह॥ साधुधीनं श्रीवर्जवागोही लेखं कथं॥ दिगीययं वञ्चामिला कानां हि कवा मया॥ य
वगमहनां न्दवा॥ सहज॥ हि न जिग्रं सन ह रुडु॥ असन पति अञ्जो अन्न मन्ना॥ सा ० ॥
म्रम्र चल उञ्ज॥ नञ्ज॥ सञ्जुञ्ज म्रम्र मि॥ म्रञ्ज ० म्रम्र पदि म्रं गुम हावा हि जि
म्रञ्ज॥ सन सञ्ज हल धाति हवन धय सन वगा॥ हन सन श्व॥ पहन वगा पति म्रञ्ज

[illegible]

3

[illegible]

जायन्तवावादीपी ० मलकं ॥ चतस्रो यानधारुताना ना कर्मस्वरावतर ॥ नृकुजाश्च रुगायश्च सं
खिदापपाइवा ४ ॥ हंसकोचैः मयनश्च सूकसायादिश्रुजा ॥ हस्तश्च गवमादिमश्च खल
मान् खजला यजा ४ ॥ विमिकीटापतंगाश्च मसकादिश्च खदजा ४ ॥ देवननकसत्तानां श्रुंवा
रुचमवच ॥ उगदीपपाइकासत्ता ४ पथमकालिकादयः ॥ पूर्ववदहा १ पनरा ॥ दानी ५ रुच
रुमवच ॥ महाहागानसंरुद्रा ४ धन्वायुर्विवकिने १ ॥ जयद्विपमेनूष्याक्षोनिर्विकल्पाविवर्जिता ४
जम्बूदीपषुजाकस्य कर्मरुमिपसमरु ॥ सत्तागइत्तुक्तक कर्ममध्यमा १ धममूरुमा ॥ पूर्वजन्मविषा
कारुदग्धर्तेश्वरुषु ॥ मदमान्तर्यइष्टानां ० कर्मोहिमाक्षितः ॥ वागद्विषादिमाहातां जलाव्याधि

पाठिता ॥ जन्मदीपवन ॥ अष्टमध्याय ॥ सापपद्य ॥ मृदुमध्याय ॥ क्रुद्धिगज ॥ मयवेक ॥ मलंमयकिं ॥
मनषजातापथमस्यमरुतं गृहान्निष्ठाकद्वितीयस्यलाहं ॥ कृमलंपवशासाधनंरुहियं ॥
वृकागमातसंलाहाचउर्थेकुउदाहृतं ॥ सायापमसमाधिचनपुजानक्तिमानषाठमृतादिका
लिककृष्णवासन्यपवलीकृता ॥ तनपुवाकृतं कर्मच्युत्यहिसंतवत ॥ सामयील्लसः
तमावत्सफादमनवाहवनिष्ठति ॥ अंगवाहवसत्यस्यदशमकवगमिच ॥ कथंचित्कर्मसंयुक्त
वृद्धिचिपुजायत ॥ मातापितादिस्तथागादुक्तयहवजनिनह ॥ अतिनिर्हवमानन्दसूख
मार्गपवभवत ॥ भीष्टंनवहिमागस्यमूमरुहंजमावतं ॥ दासफतिसहसुंचनाजीसंचायत

ॐ ॥ परमानन्दसंज्ञाफलालिखितविरुक्तं ॥ शुक्राभाक्षितवार्मस्वविदुवृष्यविहति ॥ पृथ
 संकवलाकालमवर्द्धं च विनीयता ॥ रुमीयंप्रसिद्धाजानं च दुर्धनमवच ॥ वायनाय्यमानस्य
 मत्स्याकावचकृवंत ॥ पञ्चमासगतं वीजं पञ्चमूलाकं प्रजायत ॥ कसंबामनखाचि ॥ सफमास
 नजायत ॥ ॐ ॥ योयानिचवृषाभिच्यंजनात्यष्टमासक ॥ संपूर्णेनवेमासतचरमाससमासक
 ४ ॥ कललादकारवृषाग्रस्त्वदं वत्ससंरुवं ॥ पक्षिभूमिथनाकस्य यन्मासमायसि दयते ॥ य
 मखावेवाचनस्यापि पंचाकावकुद्वेयं ॥ अजायमूयवकस्यमिनारुगुक्रवृषिनक्षत्रि
 माउरुवत्ससनामिथवेवाचनं स्थिगं ॥ दनाशयानिमध्यगुवासदकिगशोक्तम् ॥

१०

गमशुक्रवीजानीयादृक्किंननभवच॥ कथाम्नालितमकलधर्मधनुस्वहावकर॥ कर्म
बीजववगत्याफः वायवापविवसच॥ धर्मादपाभिहोवाभिमहिमस्वस्वनिनिश्चिन्त॥ उर
यामध्वगमविजंनपंसर्वंसदास्वव॥ अष्टादशपैत्रिकाहृयाहजाध्वस्वमाहकार॥ त्व
गमान्मन्त्रनकृष्णमाहजाह्विकथ्यते॥ नवंपदकोषिकपिभुंजसस्ववचायथा॥ नृपवद
नासंस्तुसंस्तुनविस्तनभवच॥ पञ्चवदस्वहावेरुस्वाध्यायिनिनिश्चिन्त॥ कथाम्नालित
कसंस्तुनासमास्तुस्वस्वमाहजाह्विकथ्यते॥ नृपवदस्वहावेरुस्वाध्यायिनिनिश्चिन्त॥ कथाम्नालित
नस्ववउत्पदिक्कथितवादिना॥ साध्वस्वनासमादायपञ्चात्मनस्तस्वध॥ ययवेरुस्वना

आसन ॥ अपहृदि यथाम् रग चउपचि श्रुता न आवर्क ॥ हं नत्वा रुच नमक ॥ कमरुति श्रुता पाजडा श्रु
ध ॥ न ॥ मरुश्रु ॥ निमादिविस्पदा ॥ पप रु सह मंगल आव ॥ मरु ॥ अश ॥ न च ऊ वरु ॥ च मरु गद
॥ वृग ऊ रु ह मरु ॥ पच श्रु सं द द व स मरु ॥ मरु आव स हाग ॥ यव न द ना ॥ ॥ ति ति वा
न सि व सि श्रुता वि स ह मरु ॥ जा त स व श्रुता वी उ ऊ ल श्रु न ॥ यव न ॥ जा व ॥ स
क जी न ॥ दि ॥ गु ॥ च व श्रु ॥ ति ॥ ऊ वी उ ॥ ऊ रु द श ॥ व श्रु वा श्रु ॥ य ॥ ना च उ रु हिव
श्रु ह न ॥ गु न वा स ॥ ऊ रु ल ॥ मरु ॥ ति नि वा व र श्रुता ति स ह सि वा ह न न श्रु ॥ श्रु स द म
स हा रु ॥ श्रु ह न ॥ मरु व ॥ स ऊ न ला श्रु ॥ र ग ह ॥ मरु उ व ह च उ ग द ग श्रु न श्रु ॥ मि म

काश्वन संकि ॥ अरुग ॥ परना ॥ अश्वसमदुलघ ॥ माऊनू अश्वजत ॥ विसं ॥ सव
भावसुसकसहाश्वमिश्रावधममाश्वसमतिमश्वअयवनेहनाज ॥ ॥ निश्वरुदन ॥ जल
हासनमलु ॥ उह ॥ सुकुचहा ॥ ॥ पनायवगदरु ॥ ॥ अश्वकडादजडा ॥ ॥ वम ॥ ॥ वगुप
मपवय ॥ ॥ अरुग ॥ ॥ अरुग ॥ ॥ सववातिनिवासमिबेसं ॥ ॥ अश्वनिमयले ॥ ॥
नावह ॥ ॥ मोला ॥ ॥ अरुग ॥ ॥ अश्वसचवाश्वश्वरुनिश्वकावनिनू अमउदश्वव ॥
॥ पचवुडा मश्वसमिअश्वसज्वरुअउपहाव ॥ ॥ कमजुअउ ॥ ॥ अश्वतिनिवातसिबस
सुउस ॥ ॥ अरुगिअनसबअतिकवामिस्सहाव ॥ ॥ जान ॥ ॥ हिनिवगापह ॥ ॥ अश्वमद

ॐ॥ जन्ममया मया॥ यवनहन्ता नृशत्रु कृपासयन ॐ मह ॐ महा ॥ अंधधीवदन्ता अयवसाह
क ॥ ग्राहने स्रक् वा अशा अहिन् ॥ यावत् ॐ उ ॐ वी ॐ धि ॐ अहमि कुरु साहकव अउ
काहि वी ॐ अक स्रक् वसा विम्ब ॥ अउर समासवी अउ आन कर्मा हवामन्च ल ॐ कल्लन अथ कय
मसहा ॥ नवपह अरु अवि दन् सत्ताव अरु मरुव ॐ हि हाक ॥ ॐ ॥ अमिथी वज्रवा ना
हिवा ॐ महा कुरु वा अय कुरु चक्रा स्रक् विमिथी वज्रवा ना ॥ ॐ ॥ अहह गवान यागि
मकु सिद्धि पद ॥ मंजु संचा नया गा सवाना ही समय लिता ॥ नृगीय चक्र सामर्थ्य कर्म कर्मा
याथ प्रितं ॥ माहितं मायया सर्व कर्मा कास्त यथा गिनी ॥ अथाह संपव अमिडत्पन्न कमहावेना

॥ यनविहसुतमापुनः श्रुमलुंमवाप्नुयात् ॥ पूननूलायमवजी श्रुत्यचक्र स्थयागवान् ॥ गच्छ
मालिङ्गवावाक्कापवमाज्जनकंविद् ॥ तमेकां हिन्रि साजहाय ॥ ॐ श्रुतिमवतवीअम ॐ
सू ॐ माअ ॥ तस्माहिम्रिवाअश्रुश्रानमून ॐ अमनदेहचउपाउसवमम ॐ ॥ पवहाश्रुश्रम ॐ
मूक्तं नृपदममहा ॐ मिनि ॥ तश्रुश्रु ॐ पू ॐ विद्यानद्वीअ ॥ दसङ्क ॐ अचकं एमहम
ॐ ॐ ॐ निमदमनश्रुपू ॐ विहनिश्रुगजनि ॐ पा ॐ श्रुहिन ॥ मववानमकापू ॐ विह
निश्रु ॥ डकासिमहगाहं नृमू ॥ पवका ॐ श्रुवीअयमरुहहो ॐ श्रुहकजश्रुउनजउश्रुकि ॥
रहश्रु ॐ मदिह ॥ काकमचिअमिनिवाहाहिनिह ॐ विनिह ॐ निमडेवश्रुन मय

गणननिनिचिअतिनिवा नतिइसह ॥ तचइहिउवूअपुनअमरुपउहिनिरुनिहं ॥ सपल
 विअकनचअउ ॥ पफममभा ॥ वजीनच ॥ माअ ॥ चमच ॥ डावीअ ॥ नयहसनमं ॥ शाकव
 व ॥ माअनाअ ॥ सचवासादअवय ॥ ॥ वर्ग ॥ ॥ सतिन्नरसका ॥ ॥ अं ॥ ॥ अलकठादहवरणाअ ॥
 शिमलाअ ॥ अमरुधाअन ॥ सक ॥ सामयमरुपइतिनिरुनिअ ॥ ॥ अं ॥ अतअउवावू ॥ १३
 रुअ ॥ वाअनअनिगल ॥ ॥ वंइदिसपव ॥ रुमरु ॥ व ॥ कर्मसवअ ॥ ॥ अथातहसं
 पुवअमिउत्तन्नकुमहावना ॥ यतयागीमरुतनसर्वमिधिंसमोसह ॥ कायमाधिपमरुलंघ
 मंसंतागंविशह ॥ ॥ इमरुलमिअकंस्वाधिकमसोधनं ॥ ॥ उचुहिमइमअ ॥ ॥ मरुलंघव

हावनां॥ अविमर्शप्रतिभाकाव मधुर्नचिरसाधना॥ अठिगाकावशागतउत्तन्नकमहावनां
॥ उधुधुर्कमेयंकुदंष्ट्राभिनामधुल्लयगोठ॥ कन्मरध्विदलाकांतंरागारीमधुलाधिप॥ अंगारः
हृन्निपुणकायवाकचिरुमधुल॥ स्वर्गमर्त्यचपातालभक्तमूर्तिहृत्तुल्यभात॥ विदलाकाव
पागानविदलमरुमन्त्रवत॥ सर्ववीरसमाधारकोलमूर्तीमरुसेसख॥ नखोवाधनवेरक
अधविषयात्मकसुख॥ देवीवांगारिहृत्तुल्यकायहृदलुक्कल्पयत॥ तथताम्रिगन्धकंखमि
वगून्मनात॥ नैवात्म्यातथताविभमप्रायकनूकभवले॥ युगनधसहस्रगमधुलयागमरुमं॥
चिन्ताविकल्पयागपिहदाचिन्त्यसकल्पकं॥ सर्वोकोलवर्नमर्वानिलाकांतसूखदिय॥ हावहावत्स

कंचेवरावंचकानि क्षादिकृ॥ अनाभापमनाहागंनिष्ठादिमहत्सूत्रं॥ मकुंषाप्यसमस्यनमनस्य
नस्यहावकृ॥ अमुकत्वासत्त्वंवयमजानकमपस्यकं॥ निवृपत्वादकृत्स्नंनिसंनयवेकावकृ॥ न
चाहोवाप्यनस्यदोस्त्वास्वभापदसंरुवाकृ॥ सहजंसर्वधम्मोभांनिजानंदस्वनूपकृ॥ बाधिका
तंस्वयंरुत्वादनाहकमनाकाकृ॥ अनत्वादवसावधहावनापिकथाविष्म॥ पुह्वहिरुवध्या
नशुभाप्रवेवधिका॥ सर्वधम्मोपनिष्पन्नंरुवनातेवहावना॥ महासूत्रादिहंवाधिमहामजाप
नादाकथं॥ धम्मकत्वावतावायकृत्वाददंपुदगितं॥ सज्जुवावपदंननस्यद्ववतिनान्यथा
यागितिंसर्वेकृत्वानांनवेकावपतिस्तिगं॥ कायवाधिरुत्कर्मसर्वाकार्येकयोगिनी॥ वावाहां

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धिक्कमपुण्ड्रकम् ॥ धाश्रुतवाञ्छाश्रुतलुगविष्णु। तिनित्तिवाहउत्तिश्रुतं ॥ सत्कन ॥ श्रुतिरुद
 श्रुत ॥ ममना ॥ नो ॥ म ॥ श्रुताश्रुतसग ॥ संश्रुतिमरूपश्रुततिनिहतिश्रुतं ॥ रुययउवाहन
 कतु ॥ कथमसंश्रुतमकुश्रुतनिधमवश्रुत ॥ हसना ॥ श्रुतिरुहश्रुतं खदहउजायतिनस ॥ वव
 श्रुतश्रुतश्रुत ॥ न ॥ श्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥
 मश्रुतश्रुतश्रुत ॥ न ॥ श्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥
 न ॥ श्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥
 न ॥ श्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥ नश्रुतश्रुतश्रुत ॥

[illegible]

अथ खलु संप्रवक्ष्यामि चतुर्हं जस्रतावतः॥ यद्गुरुदत्तु सर्वाणि तद्गुरुदत्तु तावतः॥ पृथिवीरुद्रव
स्तुतिः अग्निना सर्वपात्रात्॥ आपोऽक्षीकृत्य वायुना सह प्रविक्तं॥ आकाशं न्यदशं स्तुतुं न सर्वं
जायते॥ यदेकस्मिन् च त्वानि तत्सर्वं मयि तिष्ठते॥ गुरुगुल्मले तान्नुज्ज्वाला विह्वलमाकुरुते॥ यद्भक्ति
काश्च यस्तस्या विह्वलमाकुरुते॥ मनसर्वं कपिभुक्ताङ्गीया रवे विधीयता॥ मयि बोद्धिषु सत्त्वा नां वायु
सर्वं कवा ल्यते॥ गुरुदत्तु अग्निना स्रज्जति आपं शुष्कं सदा रवतः॥ सर्वं कस्मिन् स्रज्जति ता निश्चयता
रवतः॥ पृथिवी मातृका पृथिवी त्वादि मातृकं॥ जायते च मयि न च च त्वानि तद्गुरुदत्तु सर्वं स॥ द्वा स
वमनं व्याध्वा विना रुरुर्न जायते॥ द्वा तान्ना कपालादि सर्वं सह संस्तिताः॥ समस्तं ददसि धनं

मन्त्रकहापि न स्यात् ॥ सर्वं सर्वजं सर्वयं कृतिं कुरु हूमिजं ॥ चतुर्हस्तपदं श्रद्धं सर्वभक्ष्यं संमता
४ ॥ प्राग्वायं समादृश्य अग्निं जीवितं नृजं ॥ अमृतं स्वरावपस्य पृथिवीं कुरु मातृजा ॥ नृ
पवंदना संज्ञेन संस्तुता न विहसत भवत ॥ समता आदर्शपथे वं कुरु ॥ कस्यानूष्ठानं भवत ॥ स
विशुद्धधर्मो धातु ॥ कुरुतिष्ठत्सदा दत्तविहसतं पदं भवत ॥ तस्या च वरुणं हस्तं नृणां वरं च दत्त
ता ॥ वं वाचनं नत्तं संस्तुता मिता ता मां घाता आस्तुत ॥ पंचाका वं कुरु संवाधिं विषया श्रवति स्म
ता ॥ नृपगच्छतथा गच्छत सस्य र्गधर्मो भवत ॥ नृणां विशुद्धिमाख्याता धातु न ददात्त स्म ता ४
॥ नृणां वं वं नृपत्या नृवयं सव मातृजा ॥ वृद्धत्वात्तं हस्तं च कुरुमादि कुरुता वयं ॥ च कुरु विदि

यविहृतं चिह्नवर्जं विकृतिं ॥ उच्यते सावविशुद्ध्यर्थं प्रहास्वनपदं हवत् ॥ विहृतं सख सर्व
वृणदस्य मूलं सख सावत् ॥ द्वाहाविहृतं श्रुतिविशुद्धिस्तथा सास्वत् ॥ वेमज्जिह्ववि
हृतं विहृतं पवनमार्थं ॥ कायस्यार्थं कायविहृतं मायात्यन्तं सावत् ॥ ननाधर्ममना
विहृतं हृदयं विहृतं ॥ मन्त्रविहृतं आलयेत् कथागाता ॥ वज्रवाक्का समाधिं
प्रहास्वनपदमाप्नुयात् ॥ विषयाविषया एतन्निर्विकल्पपदं हवत् ॥ विषयविशुद्धिं वाध्या
ह सर्वकारवन्निहि ॥ वृद्धधर्मस्तथासंध्यं कापिकल्पनाय ॥ किमनं किंत्वं किंवायसि
विभाज्यते ॥ किमस्वस्वज्ज्वरं किंस्वसाधुधाम्नास्ववृत्तं ॥ किमस्वस्वज्ज्वरं किंस्वसाधुधाम्नास्ववृत्तं

कुदनिता॥ तिस्रस्यश्चयजल्ल्याभंकायवाक्किरुभवच॥ पक्षीयाश्चउपायाश्चयागंतस्यरुनीय
कं॥ त्रिगुणंचपथाहृंधर्मादयस्त्वहवतर॥ त्रिमुयानपलमृयागाननृयाभांमक्रुवृष्टितर॥
उयताजीस्ववृपाचवाक्कास्यनववक्तुतर॥ वाक्कालोकिकोधर्मास्यनवद्वताधिकं॥ वाक्का
स्यनवगुद्वितीयागीवृद्वत्सामरु॥ धर्माधुस्त्वहवक्रुद्वतालंवरंपति॥ सर्वकावस्ववृष्ट्या
द्वेतीयानिकल्पितं॥ आदिदेवतावृपलुचजसत्तच्यवस्तितर॥ पी०ऊ०कुसुंकरंयागिनीयागेम
लेकं॥ तथाद्वयसमायागंकास्येत्ताद्वयवतर॥ असंख्यंद्वतास्त्वलंवरंसंख्यामस्तुलक
ल्ययत्॥ अचिन्तंद्वतायागमचिन्तंवृवनाटकं॥ शीतानाहंचसमायागंयागिनीगनवृप

[illegible]

॥ कानकाशमिनीचक्रचतुर्थपटलः ॥ २५ ॥ ॥ अथाहं रावन्नुपहृष्टोऽस्मि च दायकः
 ॥ अहं यावानधर्मोऽहं दयासख्यसंग्रहः ॥ अहं न पशुवत् सर्वथा कोऽपि शक्तिर्नाहं
 ॥ ह्यो विहृतलाहाय दक्षयित्वा न सन्नयं ॥ हसन ते न सन्नु ॥ विमरुवश्रुत्सलश्रुतं ॥ जा
 लं न किञ्चित् स न स कपटः ॥ सत न विमड्जालरुमादिसुडकरविस्मड ॥ पिग्धग्रीवा
 मोमं नुवन्ना विजान ॥ वज्रसंनयनं न स कपटकोरुहविजान ॥ चक्राश्रुश्रुतमनाप्यान
 विस्मडलश्रुतं ॥ पिलं न कपटशक्तं विजान ॥ चित्तिमनुसूनजानविस्मड ॥ हसनहि
 निरुक्षिग्रहं ॥ सद्यसि सश्रुतं सद्यः ॥ सवनजानहिनि न विजान ॥ न स मरुयश्रुतः

[illegible]

कहसदिसहावडां॥ नमोदसुड॥ मरुपड॥ सुवतसुडरुमश्रुनिश्रुतां॥ अथाकसंपवका
मिचनुसूर्यपुनदकर॥ वामदक्षिणायागनवहकचयथक्रमं॥ कान्तादावसवांसनपुनस्यना
हिमसुत॥ नाहिकाधामसुखीचनुश्रुलिचनुसमाहना॥ नासवाचसुसव्यनपुनरुकाक
दशकर॥ नाठिकाधमसुखीसूर्य॥ कालिश्रुतसदावहा॥ वामनाठीपवनाधमसुव्यानिष्ठाग
पदकि॥ नासावन्धुदयंदावदयनाठिपमानकर॥ नववदयसावसयावदष्टमयादितं॥ नि
सासुमयासावसयावकथादयाहवक॥ अहर्षिसमहाबागंपुहवायामउज्यम॥ चतुर्थीम
न्दिनेविशाचतुर्थीमकथानि॥ सक्ताकथाएवाथासुवहावागनेखादश॥ अथोईयाम

संज्ञाया न्नासि जातः शुभाह सदा ॥ इति पदं समावस्य सिताय यदि न कृतं ॥ प्राज्ञवदति सूर्यश्च या
वत्पंचदशी क्रिथिः ॥ नाडी द्वाडी भक्तं विद्यादहा गुरुनादिकोः ॥ पुरुषश्चतुर्थोऽथ नाडी च
टि किचा च ॥ चतुर्थ्या मन्दि विद्या च चतुर्थे विपमोऽहोः ॥ दक्षिणार्धे नाडि कृष्णं सामान्यं कुरुति स्मृत
॥ वायव्यार्धे गुरुश्च ॥ साता संयाप विनीहि तार ॥ षड्विंशत्वा मे विंशः प्राज्ञं वायव्यार्धे गवि च ऊर्ध्वे ॥ प्रा
ज्ञो पंचमक षड्विंशत्वा मे क्रिथि कृत्याद संयुक्ते उरुत्तापान काले सदा ॥ पथमा वासन ॥ दक्षिणार्धे
जालस्य निवायाया कथा कुरुत ॥ दक्षिणार्धे जया हवि जानीयात्काले रुद्र ॥ स्वामेऽस्य दनुर्ध्वं ॥
संज्ञा मनस्य हवि निजा सोऽथ ॥ स्वामेऽस्य न च तापाद्विषं चतुर्थ्या मनो नान्दिदं ॥ अत्राद्वयाम संज्ञा वपविषा

दिवि पयं यातु ॥ कलहादि रुचन्तं मकर सलज्जय सुधी ॥ नकादि किंचित् पंच षड्भि नाति विपर्ययात् ॥ व
 दवाय र्बेदि कजाय काल हा म हात ॥ नका पके विपर्यय म हा वा भि सु मूह्वर ॥ पञ्चदश विपर्यया सो
 सुहृद्वन्ध विपद्रवत ॥ यञ्जय विपर्यय मासे षड्भि सु किंचित् ॥ सामान्य काल जाती यादन्य च पून न च
 म ॥ सुमगक गक सूर्ये जल ऊचन्द माय दा पो कृता माग दा काला म सु निच य का र कर ॥ यद वा सो न वा जात
 कृष्णा शर सफ भा उप नर सफ सफ न्द्र किल्या कल ऊर्ध्व ॥ सम सफ ग ॥ सर्वे सूर्य मा र्गो न र्गो न स क
 मा सि चर ॥ कालं निरूपय दि मा नि वं न कं ऊर्ध्व ऊर्ध्व ॥ यद वला ऊर्ध्व वा या रा कि न न्य प व रुत ॥ क
 वला ऊर्ध्व पूर्व म न वां स्या न्न सं ग य ॥ आ दो कृष्णा दि ता र्ध सल दिन म था रु नि र्गं या व द्दव ॥ क स्या द न

इयं च त्रिदिनमथ चतुर्वा सता द्वा प्या या वत् ॥ पा ॥ ५ ॥ ता मा शि मा या व ह ति दि न प र त नू ज म स व य ह म
॥ त स्मा दि रु य म म द्रु व ह न वि दि क्ष म ष दि ध न च ॥ प व त् ४ पं च ष दि वे स ग ति नि हो वा ह न पं च वे
द्या ॥ त स्मा दे का रु व ह ति गु षि कां दे न वां शु क नं या व द व ॥ पो ४ स मा स्ता क्ति न य न श शि न र ष दि
य म न्द वा म मा सा सं हा नि क्ष मा मि ति दि शि ष गु षा दि न्द वा जी वि त व ॥ छि ष्ट च कं मां लि ख्य म फ किं
कु हे न्ति तं ॥ आ य ष ४ पा षि वा या श्र वि ता ल ख्ये क मा लि ख व ॥ पं चा ह पं च विं श या व न क वा लि ष
व रु चा ॥ ता का ४ वा उ षा सं ख्या य ४ क षां सा ध न म च्च क ॥ ष ष्टे फा ष्ट न वा हा नि य दि वा त् य नि ल क
मा न् ॥ गु षा पा फ च तु र्विं श ए ने व रु न्प व त् ४ ॥ नू ज क का म मं ध्वा ख्य दि ता नि प वि पा ति त ॥ गु षा

प्राक्चक्रविंशसु हनू नदिवत्समे ॥ पाठ्यमहंतथासफदमहंवातिमागूत ॥ अष्टादशार
 मकाशविंशतिवद्विचंकोमात ॥ गुणितर्जदितभूनादवतिवर्षायेमातलय ॥ अष्टादशपरिकाल
 पंशममगितनशंसय ॥ एकद्विचक्रविंशपहोतिकमाधमयदि ॥ गुनपाफेदिनेषदिन्य
 मातयशासतामृति ॥ विपुलचक्रमालिख्यदाहिंमरुसंयुक्त ॥ कलाशमाज्ञवापयस
 ल्याकसंममालिखत ॥ स्वचैतानिसनलदिमालिंमसर्वथा ॥ विधिवद्वचनंमयायदि
 दृष्टवर्तपदं ॥ नाडीसंशमधनंरावकयादायंविष्णुधयत ॥ पसुवक्रमसायागीभचयि
 त्वापनपूत ॥ पिधायिकादानस्यासमाकृष्यवेवचदुते ॥ अधिकाविगतेषहिहसह

शान्तकविमति॥ अक्षयवर्षासत्त्वात्तां स्वाससंख्यातथकमात॥ माहृद्वं हवंपाश्चं वामुक्ष
नाथसंरुवर॥ अक्षयवर्षासत्त्वात्तां स्वाससंख्यातथकमात॥ माहृद्वं हवंपाश्चं वामुक्ष
वववज्जुक्क॥ वायव्याकालरुवेगवासकभाथरानिकुक्क॥ माहृद्वं धनधन्यादिलोकोफसं
गकावक॥ वामुक्षवीभनंस्वाय॥ सर्वसिद्धिकामासक॥ कस्ययागवमंस्थद्वजसत्त्ववमाय
था॥ वायुस्ववर्षाहृगवावावाहीरुवकिक्कि॥ वायुपुस्तवतावनदकिहोवमभाभ्रना॥ व
पावतित्रयागानचमस्तुहृयकपन॥ अक्षयवर्षासत्त्वात्तां स्वाससंख्यातथकमात॥ माहृद्वं हवंपाश्चं वामुक्ष
हवभाहोषमांगल्यचशुहादय॥ वस्तुसक॥ पक्षसंस्थासदाश्रावमभावल॥ कपोतसकस्तु

संग्रामवन्निद्वननु किं पु॥ यदने ह दन कर्म दाहयारगपुत्रस्यत॥ दयात्मकपूतवज्रीसं
 दहजनकाशवत॥ शुभं संदहं मशुभं लज्जय च्छादवायवितु॥ गच्छत्या ला यदा नाथे कालि
 स्त्रायहि पदोति॥ कालोपाया ललागस्तु सुखे स्वर्थे केति र्वदु॥ यदुकिष्ठमि तं नाथी
 ननु सुखमुपदुकि॥ तस्य सर्वार्थे संसिद्धिदयं सु संजया हवतु॥ वायद्वयं च नाथस्य जा
 नीयात्येव नात्मना॥ पवित्रं धर्मं काये स्मंतिष्ठं सुभागा विगृह॥ निर्यानिस्मोक्ष कायाख्य
 न्निर्वाणायकयो मतं॥ धर्मं कायशुभं सर्वं सु॥ शयाधर्मं विगृहं॥ निस्मोक्ष विगृहं॥ शया
 पदकस्यात्मना पिवा॥ प्राश्नया संलिङ्गोपाया पंचवृद्धस्य वा वरु॥ वामदक्षिणयोः

स्वास्तिविचनंतियथाकाम॥ दक्षिणनिर्गतामसि श्रुत्वा नय मनु लं वदत॥ जवाकूस्मसं
जातं क्रमितां कुरु देवता॥ चामाविनिर्गतामसि वायुर्मल सं सदा॥ हविरवर्धु सदृशं
माघं पवनमदेवता॥ द्वास्यां विनिर्गतामसि ४ शां चनं पुरुषं निभं॥ साहस्र मनु लं वदत वायु
वत्सं सदा॥ तदा मन्दे पचा न सु शिक्तं कृच्छ्रं सं निरुह॥ वायु मनु लं वदत च जवा मा
हि मेहाशुक्तिः॥ सर्वदेवानां वायुः सर्वधरापदभीकः॥ वेदाचन स्वतावा सोमहा वा यज्ञी
हिः॥ मानं गताय शानि प्रविशन्ती स माहिः॥ लज्जादि संख्यया या वदन्त्या यं ऊप स
दा॥ लज्जामा न जाय न पति पार्श्वं न साधकः॥ न ह्ययं वपि पंचाद्यां न जीव नारु सं गायः॥

॥ प्राग्वत्सुखमपवतसुखसंगमयन्मदा ॥ अनामायकपाशानतिष्ठविसं समाहितः ॥ यदा
 कृत्स्नपाशानमसुखं जयेति सर्वदा ॥ आयुष्यवायुना सर्वमायादंगलमात्मवित्तं ॥ कृत्स्न
 कंचलं कंचलं शान्तिविधिमतः ॥ यद्विनाशो रुकायावमध्यमादिगुहास्तथा ॥ क
 र्त्तुं विनाशो रुकायावमध्यमादिगुहास्तथा ॥ विधायकमेकं पदं आत्मना जानमनुत्तं ॥ डि
 पनीमथ हस्तनवदशाद्विदिका रूतः ॥ बहिर्भासाजि को यावे रूतवन्त्यः कृत्स्नकजियाः ॥
 विनाशो रुकायावमध्यमादिगुहास्तथा ॥ सववजययन्ननगमधनं पदमिदं ताः ॥ डि
 कृत्स्नकपाशमसुखं पवर्तुः ॥ सुखा कृत्स्नकं सुखी ह्यनुनिबाधनाविष्ठः ॥ न

सकल्यसखाभिर्मरुतायाति संनिधिं ॥ द्रुदया कुगर्गवायुभी ॥ रुद्रैकावसन्निहं ॥ ध्यायाम्
माहितायोमीवाधनविषयादिहि ॥ संस्यन्दुर्धराभ्यायनिर्वाक्ष्यादधगगन ॥ अथति
ष्ठानिनिर्वाक्षं द्रुदयांतावहस्त्रिगं ॥ दुर्धराभ्यागर्गवायुसंपृष्टीकृत्यमानसं ॥ रुद्रायासया
गतसन्निधं पदमाध्रुयाते ॥ वायुयागंनजानातिथास्तत्रापिकृतातिनं ॥ सप्तसावस्यकिं
रुद्राताताइवपदुत ॥ तातागंनचयावायुंनजयसर्वविमानं ॥ वायुनाधिष्ठितं
वैवायुं सर्वगतारुवेत ॥ ॐ ह्यारुगवानमास्तुमहासमयतायकी ॥ वादमः ऊपकी
त्याकर्मभिर्मरुजां नृके ॥ उत्पत्तिश्चन्द्रसूर्यादिचक्राकावस्ववपका ॥ चक्रंनवर्कः

मं
एव धूत पात सूत्रकां ॥ नाकावां कदितिया नाम संस्पृष्ट कथं ॥ ब्रह्मवजा दिक्षुवन कृष्णोऽव
धूतलज्जं ॥ थ ॥ हस हवीन नमरूप उतथ श्रव श्रगुह मरु ॥ ॐ नरु चक्षु ॥ हाश्रम श्रवीव
ॐ हाश्रु ॥ हृदि निरुति मरु ॥ स्रु मरु व ॐ स्रु धा ॐ हच र्म दिक्षि ला कना सनि ॥
सम ॥ इप कवाचि मरु ॥ स्रु स्रु स्रु क मरु ॥ स्रु क मरु ॥ पवे ॐ वाश्रम ॐ स्रु ॥ स्रु व मरु ॥
ॐ उ मरु ॥ ॐ म मरु ॥ ॐ स्रु विन्दु स्रु ॥ मरु ॥ स्रु स्रु स्रु स्रु ॥ स्रु स्रु स्रु स्रु
मरु ॥ स्रु स्रु स्रु ॥ ॐ मरु स्रु स्रु स्रु ॥ स्रु स्रु स्रु स्रु ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ॐ
तिथी वजवा बाहिक ल्य महा मरु वा गच स्रु स्रु स्रु स्रु स्रु स्रु स्रु स्रु ॥ ॐ

॥ ॐ ह्रीं गवाक्ष्यागि श्री ह्रीं सिद्धिप्रवर्तका ॥ वाकसम्भवाऽशिक्षानामन्यवानाहिन
कुका ॥ उक्ताश्च यागिनीककुषकस्यैव सिद्धिदं ॥ श्री ह्रीं चक्रपथोऽगानसिद्धिदं नान्यथागवान
॥ पनाहिसवनामथपाशपासञ्च ॥ श्री ह्रीं साक्षात्सिद्धिदं विहिता रुरुवीडा ॥ पाप
मरु ॥ वीवीडा ॥ पदाव ॥ रुरु ॥ हिजाल ॥ दशरु उदीव ॥ धममरु ॥ सिंहव ॥ श्री ह्रीं रुरुमरु पउ
विनायकविधसनाश्रु ॥ राजव ॥ श्री ह्रीं गमेरु ससरु विकर्णकश्रु ॥ वेलोश्रु उदीव ॥ पदव ॥ रुरु
ध ॥ सगुल उश्रु ॥ समुद्रल ॥ श्री ह्रीं गहनिपउमरु ॥ साजव ॥ उमरु ॥ श्री ह्रीं मउ ॥ इरु वाववा
॥ निपरुश्रु ॥ वीव ॥ रुरु ॥ ससरु पदपक ॥ उश्रु ॥ यउहिनिश्रु ॥ श्री ह्रीं ससरु पउमरु ससरु

श्रुतांशजानहामुद्रांशमन्त्रहा॥ ॐ ॥ अथाहहगवां वजीहानहमीसुहावका॥ सिद्धि
 कामचपपयनसत्त्ववज्जित्तल्यदं॥ पृथापक्रिश्चमार्गसुवृद्धवर्जधनानव॥ मायाकामश्चमाया
 चत्वात्मादिप्रवृत्तक॥ इहातिनिमहापसनाश्रुत॥ मउसमगउथागउसम॥ रुमक्रासा
 किनूश्रुति॥ चो॥ नीलाश्रुतावचन॥ प्रउवा॥ नितानाश्रु॥ सुरुकर्मइहइमनकपउचउही २॥
 श्रुहस॥ श्रु॥ रुकलासन॥ प्रउतीथशजाननास॥ ॥ ॥ श्रुसंरुमरूप॥ रुहीश्रुवाव॥ अ
 थाक॥ संपवक्रासिहसनहमिष॥ स्वपमार्थंयागिनीचर्कशुभाशुभपवीऊच॥ अग्निंयेववाययेच
 माह॥ उवागु॥ मगुलस्यु॥ संचागंलऊयचविचऊ॥ ॥ शक्तिपूष्टिवेसाकृष्टिमाव

॥ अं च्छादनं तथा ॥ तस्य यागं न जानाति यथा तस्य पवित्रमः ॥ अग्नय न हवन्तु रूपाय न ध
न ऊयः ॥ महर्षेः शिवदाई वा वः शतधनार्थदरे ॥ दक्षिणा यमवाधा रुद्रं रुद्रकमगुलं च
वतः ॥ वक्रवर्णु मिदं व्यकं पयनाथस्य संचयनः ॥ नामां च यमवाधा रुद्रा यमगुलं न संदिग्
॥ इति तस्या मसंकाशं कर्म नाथस्य संचयनः ॥ इदं स्य यमवाधा रुद्रं कतकवर्णु सन्निह ॥ मा ह
दमगुलं चैव न त्वनाथस्य संचयनः ॥ सुधो मरुप सवाधा रुद्रं ऊर्ध्वा वृक्षमगुलं ॥ शुध
रूढिकसंकाशं वज्रनाथस्य संचयनः ॥ सर्वधरुं समृद्धं स्रग्धना धिधा विरिह ॥ वेनाच
न स्य महावाया स्मृत्कायादि निश्चयः ॥ वायुगन्तं न जानाति कर्म कर्म न सिद्धयः ॥ तर्कि

आसुजायनं वायुः सर्वगता हवः ॥ वायुः तत्त्वात्तत्पूर्यं मरुतं तत्त्वं तु साधयत् ॥ प्राञ्जलं हवः स
 त्त्वात्तत्त्वात्त्वात् सर्वकर्म हवः ॥ विष्णुतवाहन्तं चैव वृद्धत्वं तु दमा प्रयात् ॥ नरस्यं सर्वं
 कुम्भे उपायं वाधि जायमानः ॥ पतन्मवाचरु गवान् मरुतं प्रपद्यवस्त्रिहः ॥ पञ्चवदलमर्क
 कर्मजं मरुतं वृद्धः ॥ वादेभ्यो महेयः कुरु कथितं मम सर्वज्ञः ॥ सर्वं च कामिकं यत्तु वा
 दशः सहवा नयः ॥ जुक्तं कुरु महोच्चकं कृष्णं पृथक् कर्मतः ॥ लएतवा दशकं दवी
 साधयत् साधना मवां ॥ परुता सववा अशुता ॥ यदुता ॥ सशुतं उशुता इह दवा
 ही ॥ सावा ॥ सशुतं ॥ अशुतं नातिशुतं ॥ उशुतं विहिना सधना ॥ सहवा ॥ अशुतः

संप्रवक्ष्यामि नाडीचक्रं यथाक्रमं द्वांसफलिं सहस्राक्षिनाडिद्वयं नूतनं हृदयं ॥ नाडिकाड
पनाडीनां कृष्णं स्मृतं समाधिना ॥ विंशतिरुत्तरं कंतामनाडी प्राधान्यं च ॥ नाडीसु
नंच पीठं चैव कुर्विं संप्रसादात् ॥ कृष्णं सध्वं कृष्णं नाडी आश्रयं किंच सर्वगतं ॥ पञ्च
मलयं नखदं कवहासिना ॥ जानं धनं शिखास्मान् केशं वासं सहावता ॥ ओदियाभदः
किं ह्यकार्त्तुं नाडीत्वं मलवाहिनी ॥ अर्धदं पृष्ठं वसति नाडीवक्त्रं वाहिनी ॥ एतदावली
यामकं नाडीवायुश्च वाहिनी ॥ वासं श्वं नाडीमाध्वं श्रुतिवह्निं सर्वदा ॥ द्रविणाक्षं
स्मिताचक्रं नाडीवक्त्रं वाहिनी ॥ मालवं स्वाध्वं दधं नाडीद्वयं वाहिनी ॥ कामं

ऊरुपास्तुनचक्रुर्वहति सर्वदा ॥ आरुस्तुनयगत्तनाडीपिरुवहासदा ॥ नाहिप्रिभकनिस्तुननाडी
रुद्रसावहाकाशस्तनासिका ॥ यदुसंभुमालावहासिका ॥ मखस्तुनकलिं गयगुधवर्हिमदा
सिका ॥ लंपाकाकनदेरुद्रनाडीउदमेवहासदा ॥ काश्चित्द्रदयस्तुनपूनाडीविमनप्रवाहि
नी ॥ हसालयनदस्तुननाडीसीमान्कसंध्यगा ॥ प्रकाधिवसिनीलिं गनाडीस्तम्भवाहिनी ॥ गुरु
दवतागुडस्तुनसामानप्रयवाहिनी ॥ सीनाडुडुवृयगन ॥ अनिकंचसुदावहा ॥ सुवर्द्धजधस्तुन
नाडी ॥ ॥ पुस्तदेवाहिनी ॥ नगनयादोनुलीरुयोनाडीमदसुदावहा ॥ सिंधीपादपृष्ठस्तुनः
मृच्छुर्वहतिवृषिणी ॥ मन्त्रगुणसुधास्तुनविठंवहति सर्वदा ॥ कृत्तेजातानवयास्तुनवाहसिंहः

ना
नवाहिती ॥ मयां मध्वस्तिताडीललनामरुवाहिती ॥ दजिखनमसनाख्यातानाडीचनकूवाहिती ॥ सं
वृतां मध्वस्तिताडीललनामरुवाहिती ॥ कदलीपेष्ठासंकाशमलस्वमातात्वाध्वमस्वी ॥ केलीवज्जि
विवादीकावाधिविहसमावेहा ॥ साधवतीकिविहयासहजातन्ददायिको ॥ प्राधन्यस्ताऽसर्व
वीजानांललनायास्तुनाडिकाऽ ॥ मरुतवाथयमत्यागंगसिंधपवापग ॥ तानवयानिनाय
स्यऽभकीरुताऽखगमनत ॥ संहागकायवपास्तानीयादहमाविताऽ ॥ स्त्रिमृष्टिपांप्रधनाया
ललनायाश्चताडिकाऽ ॥ ललनापक्षस्वरावनवसनापायनसंस्तिताऽ ॥ श्रवधनिमध्वदखा
दुग्धाकागमरुवर्जिता ॥ ललनासंहागकायाथाऽवसनासंमोक्षकीतनऽ ॥ श्रवधनिधर्मकाय

१ ष्यादिति वा य सं मतं ॥ न तानाठिकां सर्वो भवो न शुभं वा विधी ॥ तस्मात्समूहसंज्ञा तापि शुभं न द
वता संकं ॥ वृषा तीर्तं ह्यसि शुं पि शु ॥ तीर्तं च दवता ॥ तस्मादचिन्त्यया गते तथ ता मय सर्वग ॥ य
नयन प्रकारेण पि शु ॥ कीत पद स्थिता ॥ तन तस्य तां प्राप्य यागी वृद्धं सा प्रयात ॥ अथ प्रा
वाच ह्यगवा न्कणि का द्वा दशै र्युक्ते ॥ वीजा ऊवश्च शुर्विंश पृथ्वी वादि उ विधिते ॥ श्री हनु क
वज्र वा मोही न ह्नात रु विद्या नि ॥ अथ मनु स्य सा मर्थं धा कं का ठि सह युक्ते ॥ एतद् अने
नवी वपु र्गम सा वस म च येन ॥ अथ ततो रु मनु ॥ नृदं मनु स्य सा धेनं ॥ अजा फा संकुने
ऊंच आ वपु र्गम सा नो कथो ॥ सवना दवसनेन सर्व सिद्धि कता त्या हि कं ॥ प्रवध का वसा

सन्तुमावयत्सर्वमाजवं॥ निष्ठासकालमाहूयात्तुष्टिहिरसर्वधाराजं॥ स्त्रिकालेडुयाशा
दुष्टेनदिनंवृद्धजपकं॥ त्वासचाववजवावाहीमगम्पवातयागिता॥ अहिरव्यकंयमिष्यश्चव
दुष्टेसहकलेहिरपविपाचितामहायात्रपश्चात्सन्तुपकाणयत्॥ सन्तुलंवृद्धेसर्वदावाहीमथहव
का॥ प्रहृष्टपवणयद्रुद्धवजकंपासथान्ययात्॥ अत्यक्तजामिषिकस्यनदेगयेदिदंनयं॥ सुवधमीन
गुलंकृष्णोत्तनहृष्टयसहावकं॥ इतिनाकावाश्ववावाहीहूयातिंग्रथीहवका॥ जितयावादेवृषिः
॥ चक्रुर्मखादक्षाकट॥ रुक्मिणीदक्षार्हियका॥ मेयोक्तानसहववरे॥ पंचमूढास्तुदिगभक्तु
पलयाग्निविवपहार॥ दक्षिणावजकदिशपवणुत्तमवृकांथा॥ जिहला नंगजवर्मचवा सपारथे

तथेवच॥ वामघट्टकपालश्च वामखट्वाङ्गमूशुकं॥ मकरकेशनगन्तश्च मण्डुमालाकुक्षानिका
गुंतामवाहनाक्षायकूशमिनकपालमालिका॥ मयगतं वागवजं नम्रुथवाह नूकनरु॥ दिव्यग
न्धनूलिफोक्तं नौपूनकायतान्विता॥ दिव्यशुभ्रदामरुषियदुचन्द्रश्चवेजकं॥ लेलाटचसदाध
र्यंप्रत्यालीरुपदान्वितां॥ क्षोला मालात्कूबंत्काला योगिनी यथ सगुन॥ हनूककेशु ५ जेना
हंजटा मकूटस्यागुन॥ व्याघ्रचर्मनिवसनपंचमूडा विरूषभा ४ कपालमालिना वीभविश्ववजा
वैचैरुक्तं॥ त्रिभुजदंडकालात्तचन्द्रवासां हयानककुंजद्वयभाविश्या भगार्द्धमण्डु रूषभा ४
॥ यक्षपूगीगरुसंचक्षोला लोमा कालादिहि॥ यानि मूडादिह संकु वज्रवासादि विंशति

दु॥ यदि ह नूक नायक सुदावा वाक्का दिह सुषच ॥ याति मया दिह सुषच न गच स्म प वा ह गां ॥
 ह नूक सा दिह सुषच न चिच स्म सुध विवा ॥ उपाय प ह स म वा गां म हो सुख दिव्य म ऊ वं ॥ दया क
 लिं वा दो च ह व नि वा ध नू प क ॥ १० ॥ य च क स या ति न्य जा किं न्या दि य थ क मं ॥ दा त वं सर्व वि वा श
 खं गु क पा ल मे क वि ॥ नू क क स्या पि त रु रं य थ प र्व ॥ ११ ॥ ल ल न वा व स ना ता ठि पु ह पा या श्व म व
 क ॥ आ र ध वा श्व ध नी स्या त्म स व स य न रु ग ॥ १२ ॥ कि च कां डि गु धि ता द व्यां जा कि न्या दि य थ क मं ॥ ह
 नू कं व ज य वा क्ता नु जा ल रु स म्भ कं ॥ दि नु जा दि म र्वा या दि अ न्या श्व या ति ता नि च ॥ १३ ॥ दं य वि स
 रु न दि व्वा द ॥ न रु म न ॥ स ह स दान रु ॥ स रु प प चू ता मू क क मू श क उ ॥ मा ह प स रु प वि

स॥ मतिमाकालयागमला मतिपा कावशागल्लक॥ बीजस्य द्रविन्दस्य लुबधसं हवधमदिकं
मकुलं च समानीय पूजापापदशनादिकं॥ वज्रसं चरु हागं मच्च कस्य लुलं खेन॥ सर्वनात्ता
विधं कुर्याद्यथा हि समयल्लकं॥ उपायिका श्रुत्यायं सर्ववर्तिनं नृत्ति सन्दर्भः॥ बलिं च दापय
कुण्डपूजय सं च मादिकं॥ मकुलापश्च कर्वाक मकुलवज्राल मकुलं॥ चकुलिल्लवयं घ्राणं क
लितादिमर्धमकुलं॥ चरुस्य च मरुता नाडी कथागता ह्यनं ककुलं॥ जाकिन्यादिसमस्तं उद
हति ह्यनं रागिमेका॥ विह्वलं लीलयां याति दरधा शुभं तहं मणी॥ २४ स्याहं रुगावां यागी वज्रं वा
वाही नायकी॥ सर्वथा निस्माशारा मच्च कस्य लुलं॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

३२

॥ ~~स्य महाकलुषां वज्रवाहां ह्युत्पल्लिख्य चक्रमनुत्तमपंचमयदत्तः ॥ २८३३ ॥ अथ~~
रुसंप्रवृत्तामिषागिनीनां यथैव देवं ॥ यागिनीयागमाधिप हरावानकशुकीठनं ॥ पर्ववावाकान
कनूपश्चस्त्रविभाजालसंवर्तनं ॥ कायहावश्चरुदश्च यागिनीनि-रुनूपकं ॥ कायिका सखमार
त्रिस्तुतिविधजायकद्वया ॥ उद्यानन्दप्रितादीचचक्रुथं सरुजं व्यक्तं ॥ रुसंयास्त्रु म्प्यां खरुमुवाद्या
दशमध्वकं तथा ॥ पूर्ववीदसमास्तुताद्वयं नवसिंहं वृद्धं कायमहावर्तं ॥ मरुत्तं श्रुक्खवावाश्च
वावाहीपदमाश्रयात् ॥ महाजं चक्रुप रू म्प्यां व खरुमुवाद्यादशमध्वकं ॥ पूर्ववीदसमास्तुताद्वयं नाहि
मालम्नमकावकं ॥ उत्पल्लिख्य पूष्यादिस्तुचनोडि कापाधवाहकं ॥ वाक्काध्वोत्तमं देवीवावाहिनीपिनी

॥ दिग्जात्रकवर्णमुद्रितं जलकवर्णिका ॥ इष्टा बोधकलालीचपंचमूद्रा हि ध्यानं ॥ सवानुष्ट
मककभाष्यामीरुपदान्ति ॥ कपालमातिनीधावादकि ॥ कद्रिध्वनिता ॥ वासकपालखदा
इष्टवत्संहावविगही ॥ मध्यमगुल्लसोप्याहु सफडी ॥ वासचानका ॥ वासींमज्जमंददयंवागहि
सहसंयट ॥ उं श्रीं ध्वंजजइडाहकिवनीनूपइकीरुधीजादसंस्वारुहानइंइंरुदस्वाहा ॥ म
धुलयाश्चद्वीनांश्रुजंनवकिंमेनंबोवाकाधेनमथनीकूलनाजोपमस्येन ॥ वावाहोस्त
नमासाश्रधागिनीरुद्रतिष्ठति ॥ स्वाहातायमखादित्वाभफेक्षितिद्वयमा ॥ कायंस्वइवि
धास्तायइयासिधानयागत ॥ सफक्षिभक्तिरुक्मउत्पथनंमहासूवाह ॥ अधिकांमंजाकि

३३

धीयस्मा रुद्राकिनीकृतं ॥ पुरुषम्यहं त्वया स्वामिकथ मृत्युशक्तमम ॥ नापि चारु रुद्रावं वा
माहीसूत्रयोगवा ॥ १७८॥ वृत्तिमित्रयात्यहिन ननर सक्तमिर्त्यं ॥ वक्तानं गुप्तं वात्सा कीं देवका
वदसुक्तं ॥ भववृत्तं संमयकविषयद्वियवृत्तं ॥ बाधिविह महां विद्रुगुह ॥ कान संरुक्तं ॥ व्याघ्रा
तिनाडिचक्रं रुद्रा गतिमहाजकं ॥ वाकनकनप ॥ श्वेवपुहास्वावादिनिर्मितं ॥ कर्मणां सर्वथा
दुष्टां भक्तिवृत्तमहासक्तिः ॥ नावापमचनकनवाचां मरुजमंजुनं ॥ नववृत्तं सदा मानाविस्तुनं कि
महासूत्रात् ॥ १७९॥ सर्वा च महारुर्गमी श्वेवादिद्रुदर्शनं ॥ १८०॥ तिपिङ्गलसूत्राच उत्पद्यतु कदा
लयात् ॥ १८१॥ रुद्राकिनीनाम कर्मणां च लज्जयत् ॥ नागानां माकर्षयत्संमय कवर्षापदां दुष्टाव

धं॥ द्वातां सर्वहृतां वाजां च महर्षि कार॥ वग्धा हि चायकं सुसंसाजं चाटनादिकं॥ सं
चावकालताहृयाडस्य हि ४ खनदीपन॥ पक्षपायसमापणाभृत्य माकनूयसकं॥ यारगु
ह्रवगत्तुचिद्रुगुक्तादिभूक्त॥ कुरुयकुरुसुतार्थकुर्यात्ताधिपयाराक॥ हि साहस्य महा
साहस्ययुगसचननेयु॥ कुरुवादनखरुषु पक्षेति स्वनपनायका॥ लयराधिकां काल
संचरन्ति महर्षिणा॥ विरुयासासचाबुद्धयायुगं भक्तवर्षा॥ भक्तनदृष्टा ४ पा ४
संक्रान्तिमहिकथ्यत॥ वादेभ्यो वरां गतं स्यात्तु न दृष्टा हि ४ कसाक॥ जगन्वत्सावर्कं कचा
कालशरीरसंचनत्॥ एकीवधूतिविरुयागताधनकुवावकं॥ हि ४ पंचाभा ४ सं

३३

कश्चाद्वाप्युक्तं ॥ कचवर्गसमाख्याताश्रुकावायादुक्तान्तर्क ॥ गुह्यं प्रकृत्यशाद
॥ १ ॥ द्विगुह्यमहताद्वै ॥ सह ॥ कचवर्गसमाख्यातामृद्विदाकिनीमिदं ॥ खचनीरुचनी
श्रुत्यावाकाल्येष्ववाहिनी ॥ जिविधोदिव्यागिन्याजं ॥ मरुसहजास्वर्णं ॥ याचयस्या
धिवोसंचम्यातस्यद्वै ॥ कचवर्गसमाख्यातामृद्विदाकिनीमिदं ॥ खचनीरुचनी
नंमृषमहापशुस्यननपिहं ॥ मृद्विदाकिनीमिदं ॥ खचनीरुचनी
हीनचमृषहीनापहीनकं ॥ मृद्विदाकिनीमिदं ॥ खचनीरुचनी
प्रहृदिश्वकवर्गसमाख्यातामृद्विदाकिनीमिदं ॥ खचनीरुचनी

स्त्रियापाशवायुभां नसिद्धिजायतस्तु ॥ वेगचभनमूडयंदवीश्रुजासवजहकस्वयं ॥ वशिंभा
मंडयतीसांवर्द्धकस्वस्वकातगरसंस्तुतंचयथाधिपतिचहुजचिंद्रयथाक्रमं ॥ अथवाश्रुतिभ
नवृत्तश्रुतिसमयतज्जुहोत ॥ डागापेन्नास्वयंदवीवालककर्त्तृलपागकर ॥ कतरज्जुआचिरिल्लेपः
एषस्तुमवसं सर्वमधुल ॥ आकोणरुनितादवीसंचादयानिमपह ॥ वमवमवमममहासूवज्जुपक्ष ॥ ३१
पायनंमिज्जुतककुलोश्रुनकनृभाहावर्द्धुत्सनश्रुत्तसूवासववृद्धज्जिभ ॥ आवाहिश्रुमहसूहिवा
आहिवर्द्धुहवाल्कसूहा ॥ सहाहिश्रुश्रुहसिद्धुम ॥ वायवर्द्धुयसंश्रुत्तनिवाहर्द्धुजिभहसूहा
समाहिश्रुश्रुत्तुम ॥ आनहिहुमिपुचउकंउवीथाश्रु ॥ उवतिचश्रुलेनिंवधर्द्धुसज्जुश्रु ॥ ति

[illegible]

शुद्धादानपतीकचिह्नं ॥ आचार्यपर्वंगसंस्तुतावर्द्धयत्सुल्लंभुहं ॥ आचार्यहिषिकागुह्य
 नीलावाधं च शूद्रपिका ॥ एषा कृष्णलपविलसक ॥ कर्द्ध्यागधनायकर ॥ निरुपकोटसंकुर्वं
 शालशोपिसंयत ॥ लोकोर्षाधनकर्द्ध्यादाताभवद्रिमान्सदा ॥ यागहंनेष्टिताहाकासवकोलाज
 तीवहिक ॥ सुधर्मविक्रमीमूर्खान्तचक्रगधनायकर ॥ जवंसर्वगुह्योपगारसर्वहृद्यजपानक
 ॥ वीर्यवीर्योऽसम्यन्नातिबोहीतिनहंक्रही ॥ सत्वसाधकिकानित्यं श्रयसीकनहृद्यं
 ॥ वज्रघटसमापन्न ॥ कपालाहरोऽध्यात्मक ॥ वासांचवाभप्राश्वस्यपयचैविचक्रा
 ॥ जवंगुहामेयाचार्य ॥ सर्वकर्मविचक्र ॥ निमलितं गगनाचार्यदेवताचार्यअचक्र

मं॥ गार्वाक्षं पथं प्राप्य पादस्य ऊर्ध्वं शोचो॥ पत्रकालि तहस्तं न पवन्तं चामनं हिमं॥
कुक्षं न हृदं न आचार्यं यूपं न सार्वभौमं॥ इदं बन्धुमन्त्रं काशीशुभं कल्पकं मवच॥ अदीर्घं
जास्रपं जाम्बोदसिं दासं कथेवच॥ न पृथग्भूतं यः समयसाधकं सिद्धिमिदं हि॥ एतं वायुं दि
पुत्रं गेहं सिद्धिं नृपं वरुणं॥ समयदा हातवत् इह खं जायिकं मानसं कथा॥ स्नानं नृपं साधुं पाद
बन्तं ना इह खं पदं नृपं॥ वरुणं नीलां तथा सत्त्वं संग्रहं यूपं वाचनं॥ कुक्षं न हृदं न पूज
यद्विधिना सह॥ पूष्यधूपं च गन्धं च न विना यतः॥ आचार्यं वलिं माकं धूपं रुद्रं वा॥ ग
हितं॥ पूजयेद्देवतां वाधं दानं परमं सततं॥ भक्तिं पूष्टिं यथाक्रमं पठेत् सिद्धिं च हस्तं॥

पथपथाहिकर्मस्यपथाकर्ममनुष्ठयत॥ माध्वी॥ गीतथापोषीयथापाफल्कुटोकिर्त॥
गुचिरमानकमदिदं कुरुमाहाविवर्जितं॥ सर्वसाधनां दृष्टिः कर्मवर्गपिकल्पयत
॥ स्वानपातं तथापयंतां सुखं ददितुमात्मा॥ उत्सृज्य दानपश्चात्सुखं च पूर्वसुखं॥ पे
श्वाहस्तु संचानकर्मवर्गविवर्जितं॥ पुथसंसमयं संचानादृष्टं संहसंयुक्तं॥ नक्तस
मस्तुपविप्रेक्ष्य माचार्यताप्यधिष्ठयत॥ पी॥ अपि ० कुं कस्य मल्यभागेन वागिति॥ वीः
नवीनश्वरी सर्वहक्तिरुपहासास्यहं॥ देव्यरुपमानं समयः प्रसादां न इकं वा नश्च पवं प्रसादां
॥ पुनतसुखं तद्वयं पुनांदव्याममानाहं वाहं दुहं वा॥ दानपतिं च पूर्वस्तु समस्तं

३१

चपूव४सं॥ कृतांजलिहृदि संस्थाप्य विधानं कृत्वा मिता ॥ हवे सम सम हंगम हविसं कल्प संगम ॥
॥ स्वमिव संकलितं हवे रात्री शुभाभा ॥ गुनूतवकवनामृदस्त्री कवि ह्यसुभाभा ॥ कनूतकनूतद्व्या
मक्ष्मात्वा नूतं पा ॥ यागमृदकलसपाद्य विगुद्विचिह्नं ॥ पीभादिदे गगमन न विगुद्विह्नं ॥ श्रीपीभास्थ
वलमगुलचक्रनाथं ॥ वंदे सदा गुनूतवने सिनसानन ॥ अथे सादि महावाक्यं यस्यानूतं स माफिकां ॥ वंदे
वज्रवावाही चक्रसंवन नायिकां ॥ दव्योवली हृषिकदस्य त्वावी न सदा वाजिह सर्वगा ॥ चक्राय नाथं सहजाम
संचवद सदा समवशा ॥ सां ॥ चक्रावाक्यं सा ननु कुनि नय पयस्य गह्वर ॥ कन्मध्यव न हं स क
न्दव वल व्यन्त्र सर्वात्मकं ॥ सर्व हं शुविगुद्विह्नं निलयं दव्या तपस्य न ॥ वन्दे हं सहजाम तं

यवननिर्मितं सहजादसंतापकं ॥ छिहिर्गोशुभं संस्तुत्य यथाशुखं च प्रथमं यत्नः ॥ यथासुखं मनात्मानं
 किलीजोली महात्मवं ॥ नानाकृशुमाच्च नंदं सुगमात्ता विरूषिकं ॥ मदिनात्स वसानन्दं
 जगीतं दुपविकं ॥ नृस्यत्यवसानं च मूषा मलुननाद्यं ॥ पीठं कृतं पदे प्रत्यं पठेत्तु मग्नता
 दिगं ॥ चक्र इरुकादिहिवोषे नाता बोध मनाह नैः ॥ श्रीहृन्वक सभावी भवा साच वनयो
 गिनी ॥ ककष पञ्च जहा ॥ अं ऊ दाता वशु रचिनिगं ॥ यातिनी योगी संमित्य श्राद्धि धनप
 यत्नः ॥ सुख संपत्ति सपना श्रावगध शुक्ल चरमा ॥ कामभाद्रादि संपा फल सिद्धि हवति
 संपदं ॥ स्तू नधं मनु संपत्तां का वं संहार्य विविधादिगं ॥ उत्सृष्ट वलिं संहार्य हृत्तु उरु प्रेदा

पथक ॥ पी० ऊ० निर्वोसनीयागिनीगक्षं पदः सप्तमं ग० ॥ आगनासर्वविजाक्षं गदुगं च
महासुखात् ॥ इदं श्रुत्वा महागीतं पुनश्च वागहिचक्रकं ॥ सोधापमं गता सर्वं सुवना
दिहृजगमं ॥ इदं मानं महाविस्मं लीनो कामस्य चक्रकं ॥ इयं वक महावायं सहजाया
निर्मोति कं ॥ धर्मकायचनिर्माक्षं आदिवृद्धस्वने प्रकं ॥ वावाही कल्पमा साययोगे गं
षूपरयं ॥ आचार्याचि रूवज्जमध्यमानयोगाचनं ॥ तच्च तत्त्वयं दधीदु महासध्य मलज
क्षं ॥ सिद्धात्तरोमचवान्मानं पक्षिगुणं प्रपराचनं ॥ सिद्धात्तपस्यकोशाक्षने आत्मायश्चान्मा
नग० ॥ इयं गुणमखासर्वं संपाक्षिगवृद्धराचनं ॥ वाल्मेजातीनविहृतं आगाचनानिर्मातिर्कं

॥ ॐ स्वाहा हगवा न्यामी वज्रवा नाही मात्मान ॥ सर्ववीन समायाता दजसुत्तरपनं सुखं ॥ ३ ॥
॥ मिथी वज्रवा नाही कल्पमहा कल्पना अवा नाही उच्यते तजसुत्तरपनं चोवकर्म कल्पविधिप
उत्तरपद ॥ ॥ ॐ ॥ अथातः संपन्नं कामि द्वाया यातु यथा हि किं ॥ पूर्ववत् अथ
दिष्टं मया प्रकाशं यामिदुमानकं ॥ वज्रसंवनं हगवां वा नाहि यागं सन्वनं हाया याद
समदिष्टं पद्मसन्वनकर्मकं ॥ वज्रवा नाहि योगिनो तथा समया सन्वनं ॥ श्री भाद्रतीर्तु
अचि वत्स संवनकं किं ॥ एदुक्तं स्वयं हां वा कथं वचो हू हने मम स्वामी वज्रसमयं
तथागतं ॥ पद्म वज्रं तथा वत्स वज्रवा नाहि कथं वत् ॥ पूजां कृत्वा तथा वज्री दुष्टाहं संप

[illegible]

सुमध्यमदमरुगुक्कवृषकं॥ वज्रवानास्तथा। एषां का आतामगमनाद्वनं॥ अकस्माद्वनं
नात्स्यं महाभायाद्वृषकं॥ यागरसुचिह्नं चिह्नं च यागायागलज्जरां॥ अकस्मात्सिक्तं नृपवि
न सर्वेषां जिह्वा॥ लज्जरां कर्मसां च जाही सर्वेषां वृषकं॥ सीलेनं वा वाकास्मिक्तं न वं
सुहावेक॥ सुमयसत्त्वं विद्युत्तत्त्वं मवदमन्तवार॥ हव सर्वता ह्या हि वज्रनाय समयज
कजां॥ सर्वमनां अना मलु विधुं सागाहि मार्गयात॥ वागसाया सदा वागं पश्येत्तज्जरा स्वयं
॥ नामाज्जन्तथायागं मूढा सरुवा मिनां॥ नमसा नं सदा त्यक्ता पवनं वज्रवर्कं॥ एवं सफवि
रक्षाम्भुसुपविष्टनलज्जरां॥ अद्विष्टपर्वतदीपाश्च पुविष्टरुसहावुव॥ पंचविंशतिरित्या

सावृक्षां च कृतकना ॥ चक्रवातादिभ्यस्तं तां प्रकृतिं पूनृषं तथा ॥ पहास्वनं सर्वनामं च धर्ममा
दुस्तलजम् ॥ भाऊवृक्षं तथा स नं वज्रसुतं रुमार्तिकं ॥ धर्मादेयं महायानं गुह्यं सकुं नयं विदुः ॥
हजं समाजं च वृक्षं गोवाहाकल्पकं ॥ महाकवृक्षं पंचनेनात्पं सर्वकृतं च गूढं पूनृषं च
वर्कं ॥ तस्मादावृक्षं नामं च महासमद्रूपकं ॥ आसमनात्पवरादिः सत्त्वं वृक्षं गुह्यं ॥ सत्त्वं
॥ न च हृदयिकां ऊष्यथमपनिगुमं गुह्यं ॥ वज्रनात्सर्वकल्याणं पादिमायो स्तलजम्
॥ महासकुं नयात्सकं सर्वं जनिगविश्वकं ॥ सत्ताधर्ममंलीकश्च मूर्द्धं हाववर्जनात् ॥ इव
नामास्वभास्तु च महासमद्रूपकं ॥ त्वामास्वलेजम् हृमिपथावदनपूर्वसः ॥ नृनस्वी

मदनातात्यदि विरुपा सर्वपातिनी ॥ नासादिसर्वचक्रस्य नाडी मार्गमन्त्रमिति ॥ अथ वात्सामि
माया सा सा माया सूत्रपिठोऽ ॥ बाक्षिकुम्भस्य चावयवसंज्ञा किंच वि संख्यया ॥ वज्रवागाहि देवी
चैवं च वंला मेयति ॥ स्वा मवर्तु नि हो देवी ॥ एषं जाकिनी संति ॥ रुद्रा विद्वत्परावयव सर्व
तस्यापविष्टिता ॥ वज्रवागाहि नृपंच तथा गत कुलानाम् ॥ एषं वज्रकथा नित्यावीनाश्च स
र्वसंज्ञा ॥ दशान्वचक्रमध्य कुचैश्चादिवर्तुषट् स्तम्भोऽ ॥ सुसंज्ञा चक्रमाला वज्रपद्मचक्र
कथा ॥ खड्गवत्तुर्वादि काकु माला रुपा सप्तदोकाणां ॥ वाक्कथा विश्वकर्मो मूढावली च
सर्वतः ॥ हांथा रुद्र कुलात्यदि पातिनी यथ नायिका ॥ यगन्मन्त्रा सत्यार्थं प्रतिधनस्य

ऊहां ॥ हृदयकल्पस्य सध्वच कृतकुविश्वदिती ॥ हस्तावता हृयाचेव विपश्चा रुवदीपका ॥ लघं
स्वदीपंचापिनापिना कृकला नगा ॥ १॥ धषपंचदीदीपानां कथागानकूलको मातु ॥ तस्मा
त्तामाऊगात्सर्वेयैका टिपेदाकुला ॥ माताच सर्वथा गानां सर्वकल्पकमस्तु ॥ सुवत सनदा
यष माशु मा सा शेकर्मकां ॥ अपाना नामवायुश्च गतिश्च नोठिका ॥ श्रीगोनका वा वा ॥ येव
धर्म्यमातंत नप्यति ॥ नुवंधादोयागित्या मासेहाना श्रवायव ॥ स्यदन्तिता छिताछिपूउ
त्यल्लिचनयागिनी ॥ सर्वताजी समरुलुघाठा उत्कर्षकिऊहातु ॥ स्वरावर्कं कुविहृयाध
षादिगुहाहिरकमान् ॥ हेस्तुविश्वनिर्मागाहं कर्मका लुतकां वइ ॥ जीसमरुलुघाठा मस्तु

प्रेमिकुलम् ॥ यगित्तु कलवत्तु हंशानिर्वाणल्लज्जम् ॥ निर्वाणं हंशं यामानं चक्षुषविभस्य नम
कां ॥ न जानोमि कथं कुरु मया च पवनं संरुक् ॥ न वक्षान च वा धिक्का कर्म कायादिव स्फुक् ॥ ८१ ॥
न्द्रियाणां प्रसादस्य सर्वं लक्ष्मिजातिकं ॥ इन्द्रियं च सस्यं च न दत्तं लक्ष्मि सस्य च ॥ किंचिद्वि
याति तावत्तु दया पवनस्य सौमिहं ॥ दया तावत्तु सस्यं च न दत्तं पवनस्य कति ॥ ८२ ॥ न वंमिन्द्रिय
सत्त्वं च सस्यं तस्मात्तु लज्जम् ॥ अन्यवत्तु विधनाय विहं यावत्तु वकिं न ॥ गुर्वस्य शोकत सस्यं या
तादि सर्वं संरुक् ॥ तदस्य तत्तु जीवतावत्तु हाहि च का वयं ॥ मन्त्रं चास्य पुर्वं का मिद्वी सर्व
मिहात्तु ॥ उवत्तु दय मन्त्रं सस्यं तस्मात्तु लज्जम् ॥ कायवाक्किं वज्रं च विविधाप

[illegible]

कीर्तनविपुलं वाक्कं हवनिर्वाण पथ्यकं ॥ अथातः संज्ञापमा वक्ष्यामि वामरुसं कुक्षु लंकं ॥ य
 नीवस्य पतयागी नीचं सिद्धिपुजायते ॥ अकाङ्क्षु लोदर्शयश्च मुखायां सुखा तमाहवग ॥ ऊष
 म्प्रां विजानी यावामाङ्गुलं निषाठयत ॥ अनामिकां लुया दशा रूतस्या कनिष्ठकां ॥ मध्यमा
 दर्शयश्च मुखायां दक्षिकां ॥ अनामिकां दर्शयश्च मुष्टी वामरुसं पदार्शयत ॥ पृथ्वी दर्श
 यश्च मुष्टिगलं रुसं दर्शयत ॥ सुतं दर्शयश्च मुष्टी मातुसं पदार्शयत ॥ मदेनि दर्शयश्च मु
 चक्रतस्य पदार्शयत ॥ रुक्तादर्शयश्च मुष्टिगलं रुसं दर्शयत ॥ ललोठ दर्शयश्च मुष्टिगलं
 गनन्दकं ॥ वामनया तिया नाडी जाकिन्या वामरुसं पदा ॥ वामरुसं पदा सीच वामरुसं पदा

नादिनी ॥ श्री ॐ हस्तपुतासी च समयी सति हस्तका ॥ श्री ॐ च पार्थितं कूर्पात्कूलबीजं पुजाय क
॥ कूलक्रियां न संजति जयति स्वकले विद्यां संलित्य कथयदा ॥ शिब्र कथं यनं कूर्पात्कूलबीजं वा
मयोहिनां ॥ स्वविद्यां स्वब्रह्मं तस्य साधकविषयं हिता ॥ गुरुविवर्कं वा विभासिकायां कृतं ज
लिं ॥ क्रियागृहं हिं सदा लाकर स्वविद्यां च निबीजयत ॥ सहो वं यो क्रियागि न्यहं समयं खल
इल्लेहा ॥ कपालपत्रं सुखदा जं ध्वजचक्रं रुचामलं ॥ भं खं द्विगुलं च सयकं लिखत्स्व गुरुब्रम
न ॥ मयं मानसपिपासं संलज्जुह्वय नाभिनी चया ॥ वानाही कूलं संहृतां सहजा मितिकथं क
॥ दर्शनं दर्शनं हि जायते यामिनी नां सवय सदा ॥ पी ॥ अथ पी ० अर्थापेक्षं रुद्रं दाहाप रुद्रं दाहम

लोपकायमलापकं ॥ ममभानं चापमभानं च ऊर्ध्व दीपव्यवहिका ॥ पी ० जागंध नीगयम
 छियातं रुथा पी ० पी ० सर्वदमवच ॥ एतदावर्ग्यपपी ० स्यात्तथा गोमश्व वाक्यं ॥ देवीकादा
 हिधातं च मातुवं च पपी ० कं ॥ कातवपी कयं ऊर्ध्व नाडा हिधातकां ॥ किगकं न्यापऊर्ध्व सात्का
 भले चापऊर्ध्व कं ॥ कलिहलपकया रुदा रुच्छतथेवच ॥ कांचिका रुपापऊर्ध्व दाहं हिमालये
 विगोवतह ॥ पुनामिवासेतामलायां गुरुद्वेतमेवच ॥ मोनाडुस वरुह दीपचउपमेलापकद
 यं ॥ ममभानं चापमभानं सिधमवच ॥ सबकलतादयस्तु नंडपममभानकाथं ॥
 वाक्यपी ० रुथाख्यातामथात्तदहकाथं ॥ स्वदहनोडिका वपपी ० नाभिकीहिता ॥ रुद्रपदव

४२

नाकाग्रं कृत्वा ध्यात्वा च वसिष्ठो तां ॥ कनकशिखु मयंदं सर्वं वक्ष्ये समा कृत्वा ॥ पीठपद्मदिगारुमि नूपा
विमला तथा ॥ ऊर्ध्वं पद्मं कवी हू मिनर्चिस्म रूपं ऊर्ध्वं कं ॥ कुर्यादिति मूली हू या य हू या हू स इ
ऊर्ध्वं ॥ इदं गमयति मला स्यादवला रवा प मलका ॥ अथ गान साधु मति चैव धर्म मेघा प रम गम न कं
हू मि पीठं दि सं शुद्धिं कथयामि यथाक्रमं ॥ पीठं पपीथं मवायां निर्मला हवति मातवः ॥ उवता
न्निमिरु सं न ऊर्ध्वं वि कल्प नधी मता ॥ नाता नूप वि नूपि हया धाला हू हा मल ऊर्ध्वं ॥ स्वाधि
द्वय कथा रान इं जा न सर्व नादि कं ॥ सिंह वद्वि च वशा सी सर्व भां का वि वर्जित ॥ दर्शनं स्पर्श
नंपा प्य श्री धृति वि प्रजायत ॥ ॐ न्या हू र गवा न्त्वा सी व ऊर्ध्वं क मथा गत ॥ सर्व बी न सता

यागद्वयस्य चरणसंख्यं ॥ ७ ॥ नृसिंहाचलवाचिकल्लेखमहाभक्तनामहोवाचासुद्धि
लेखनमनुन्यागधनुजस्य वल्लभापदसंस्फुटम ॥ ८ ॥ ॥ श्रीरघुपदं पदवाचिसं
ज्ञातां हि न कामया ॥ श्रीमोहनिपटं हि न वाचादीं च स्तयं पदु ॥ चतुश्चक्रमाजयनाजीग
नं च विंशति ॥ नमः न्यायं यथेनामवच्छेदं कृतं हजना ॥ माध्याद्वीकलिंगचक्राधुनं कर्तुं
कीसह ॥ सुवीशोवापुनः सलयीवंताद्वीचकलिंगकी ॥ माववीरुमहालक्ष्मीवनदीका
मनुषिणी ॥ जाहलीरुविद्वधीचक्रावाचसागधी ॥ तिलसुद्धिद्वन्द्वनीनेपोलीचसमा
सिनी ॥ नायकरीवंतालीखाडीचहलिवांलकी ॥ सुवर्गुदीपिसिंगलीचअमठीचक

४३

झोबकी ॥ सिंधुहिमालयी वजी कबूति ऊगन्ध ग्रीपथी ॥ जऊ वृत्ति वनूझ चआ छिया नलं पा
करी ॥ जालन्धरी मूर्ख दीचक सी नी की धालां कची ॥ जयनी छिग कंचही नूदनी पननरी
हिजा ॥ मूनि कां हां ऊ की च हं गालि की गृह देवरी ॥ पुत पनी वरुनी च पल वचा पदलनी
॥ भूम भूतनी उपमं भूतनी महादधिनी खली ॥ मूर्ख च सर्व दश की दवि च दुष छि कुमा
र ॥ हाहि चकं पृथगि न्या ४ विरुया कूल ना ठिका ॥ द्रव्यं च कं तथा अष्ट धृति का सर्वग
मिनी ॥ पृथगदवी वाट ऊ ऊ सि विरुया कूल ना ठिका ॥ हाला मरुती सिद्ध ह मिमाहनी
की सानी धो बिकी ॥ एवं सर्व द्रवि स्थाने माया का न स्रज छि हां ॥ कळ चकं व देवी चर वरुं गं

ववनायको॥ धातुमेव महा हास ऊं रुतां धातुमेव ग॥ लजाशुचकामरुखदाबंधचर्ममान्
॥ अस्मिंचस्त्रायपयाश्रंकस्त्रयंरुचविभूविहोश्चापिका॥ बहस्यादिपदयोऽनुमाहिसद
वाती॥ मेरुकोषमेहादवीचकदाकिंवालिता॥ हावाकमेषसर्वेदसर्वेणसन्धिमरुद्रुतां॥ कं
कुकलाजीविहृदोनदिकीताविनायिका॥ चामरुगीधातवपाश्चउमादवीसनखनी॥ रुद्रका
लीमहाकालीरुद्रकावीपनाजिता॥ जयाचविजयाश्रुजिताजयनीधावइतीच॥ ॐ न्दीच
ह्रीचतुपाथीश्रुमवासिनीबीडीकी॥ कश्वाजीडावीचनुलीमातङ्गीवाक्कीसूडीका॥ वाजप
तीमहादीपिद्विषामदपूविका॥ ॐ श्रवन्ताजीचकडुकींमाहतीवगमिनी॥ कथयतुममखा

श्री किं मया उच्यते ॥ धातु सर्वशरीरं न ह्युद्गीर्णाहती मरुत्तवया ॥ कृता ये च कृता नीयाद्व
महिन्ता रुक्मकृ ॥ स्वमुखं गमं धातु मथ वा दश यो न ह ॥ उक्ता लं शुचि ता न न अशु ग र्ह व
ल कृष्ण ॥ श्री वाण मय च विहृतं याद र्णयस्य धातु व ॥ आलं यं न वि पा नीया कर्म श्री मोहनी च
य ॥ हार्य मोनं महा पापं मा व ॥ सर्व धातु क ॥ नैव सत्वा धि गो जीव श्री मोहनी सर्व कर्मि कं ॥ नावकी च व
था गि न्ना स्व संका ना धि ती प वां ॥ सीत वा दय का ल कृ का मा ह्य लो क्ष को पे वां ॥ स्वा व न रा म दा व ली
दो प म हा वा रा स्व रा व ती ॥ ना हा व का म को र्वा श्री र्वा प द मा धि ता ॥ ये फ किं न स क म ॥ उ च्य श कि स म क
जां ॥ आं व स क र्वा श्री मा व गु द वा व हि ज का जा य की इ ती इ य ह ह च ह ह र्मु खा सी हा य इं २ ह ह र्वा हा र्वा

इदं मनुष्यार्थं गतं मनुष्यं सर्वकामिकं ॥ एके कस्य दवीतां माध्याम्यं च दुश्चक्रां ॥ उपायपुस्तकं सर्वं
धर्मोदयस्य मध्यमं ॥ च दुश्चक्रां मध्यमं कृतं तान् विरुषिकं ॥ एवायमानं महात्म्यं च हं नवनादिनादि
कं ॥ हं च कुरुतां मात्स्यजकितीं दकि मात्स्यकवावाही सर्वमात्स्यं च समयं सर्वं धारणं गतं ॥ मनुसः
वतां सते मनुजाने वाचकं ॥ सर्वं सत्यं यदा कं कुरुतां योगितिकत्यकं ॥ यदि मनुजं विकं मनुजं
परमात्मावसंतिहं ॥ नाठिका मनुष्यं मनुष्यं स्वात्मावावकं संहकं ॥ मनुजान् कुरुचि कुरुहि मनुष्यादात्तनि
वाधनात् ॥ दक्षदक्षं दुश्चक्रं मध्यमं दक्षं च वागतात् ॥ कुरु कुरु सत्यं यदा कं मनुष्यं यदा कं ॥
यकुं स्वातेन हित्वा कुरुतां मध्यं द्यावाचक्रं ॥ चतुर्मासां स्यात्तं मनुष्यं मनुष्यं ॥ न च वावधं

षुवीज हवयचचीजादिना ॥ श्रुथवा सर्वनाडीधूमकुत्यासमिहाऊने ॥ सकटकुमभोमचउतमाम
काठाठहनासातिदमसवाठिवंखाहसमिहापकसिहिवकूपजावअलंजाशकाकांकंअठिवं
लयसकांहराप्रव ॥ पडसडमखस ॥ ॐतिनाविठपददुडमजालिमाकां ॥ ॐतिद्वदयवस
मस्थमचतांश्रुथयश्रुंखविमविलत ॥ ॐतिवठसच ॥ ककहीनतीतिनव्यधोडसरुमस
अजाविअऊताइ ॥ चंचशोकांअचंमावासुना ॥ ॐतिमसुकचकस्य ॥ श्रुथवाश्रुथया
दिनामकं ॥ कषचाशऊनंसर्वादयंससुकचककं ॥ ॐदयसुमहाधीसांपाठावायुविधायी
ऊमंकमसुपुंयकाष्ठचउपंसदलाधोति ॥ वडुनावाभे सर्वचसुजाधिपातय ॥ श्रुथवाउ

ॐ शोषविनाशिनं वाक्कंसकं ॥ कर्त्तुं वा स्तनमासायकमन्तपाशमकिं विद ॥ यावदवधती वायु
स्तवश्चक्रमिवाचम ॥ यदि वाचेन क्वीनमर्कं शीपनिकालिकां ॥ धुनिश्चाक्षसमावा ॥ नवताजी
गुणोधवा ॥ नचवागं कवापष्टनचक्रुत्तिपासकंसदा ॥ एवं सादिमन्तं तथनवाधिं सवतां नकं
॥ पंचमशुलताचाथवाहत्सर्वयकं ॥ धुनिश्चाक्षसमावादिहृत्तयनमृत्तयागवान् ॥ वक्रव
र्तुं सहृद्वा ॥ मोसायातुतुर्जवपकां ॥ अथ तदसंप्रवक्ष्यामि शक्ति कादिपुथागत ॥ यतानि
स्त्रिगमाय ॥ साधकसिद्धिमवापे ॥ कं कूं मे श्रुते मिथं लिख्यं लक्षिते यदा ॥ वजाचक्रं
सालिख्य सफाकमकुथाजिता ॥ वाक्कावजावलिवक्षामध्यतामविदर्शिता ॥ तदशुचिक

प्येव वाग्वय वासनागदय ॥ संपटलिखामपि टंकर्म शुभ्र सुट्ठावययत् ॥ पूर्वाहि मखसि न
वर्गु सिनपेव्य हागु चयत् ॥ पूव नथे उमनु तापविष्ठ साध्वं दहासि नवल एग थो हागद
कविपनि नै नरुपि चयत् ॥ ऊप नु मकाऊ वमरुं छि मन्ध मवि संकिं ॥ गान्तिव ल्यय नच ऊ
मंच दीर्घायुं वनिकु ऊऊ ॥ कव गव विषदं श वा मरु म्पूरा वयत् ॥ चन्दने श्वलिख चकं
च्यं धपं सुयुजयत् ॥ वल्पदक तथा नितं साध्व जायतं रुत ॥ हवामे पूव पिदु कृगं रुकलुवि
रामत ॥ पूर्वाहि मख साध्व चय ऊय च विचऊगं ॥ उय मेरु वन एव गान्तिका दिव वक मरु
॥ कृकृ मेरु सगन्धि सुमिथं दौ छि चकं रु मालिखत् ॥ सुव वदय लिख स्वाहा का मक्षत विदर

यत्॥ पीतसूत्रं॥ अथ कथं घृतमधुमाधुप्रक्षिप्य उरुना हिमं खण्डि संध्यां तु पीतचर्बु विहातयत्॥ पीत
मशुलचर्बु संसाध्यं दृष्ट्वा विचक्रुः॥ पीतचर्बु॥ मृतेऽसिं वत्पीतपूष्यं भृशं च यत्॥ उच्चमधो हृदि
न निर्विकल्पं च मत्सा॥ मृमकस्य पृष्ठं कनसात्॥ वायसं कुक्षे विदह्यत्॥ धनधान्यं समृद्धिं च लः
श्रीं च समागमं॥ प्रहृतमस्मै पथागतं पोटिरुवति नान्यथा॥ वक्रचन्दनं नावकं नामिकावकमिष्टं यत्॥ ४५
॥ कर्पूरं रुजपत्रं चादये चक्रं समाहितं॥ भ्रूमसंवावसं चिन्त्य हाकाभं विदह्यत्॥ वक्रसूत्रं
वहयित्वा वक्रपूष्यं च यत्॥ घृतमधुमाधु स्थाप्य हस्तौ चार्घ्यं संहति॥ पश्चिमो हिमखं न
कवमुवर्बु विहातयत्॥ वक्रमशुलमाधु संसाध्यं वक्रं विचक्रुः॥ अथ सूर्यमविद्धि नमस्कारं॥

वंसवादिनं॥ विह्वलीरुतपादयोः पतिरुं सिद्धात्तचविचिन्त्यरु॥ यदावसंतादादिघृतमधुशहिरुं
तमवमकुं खदिगोऽथर्भे स्तापयतु॥ इरुं गारु सुखाणाम् स्वगियस्यकस्यचिन्तायथा॥ साधनचै
लकागजस्वत्वां कर्णं दवावाडा नमसमन्त्रिणं॥ दयचक्रं समातिस्वज्जुं कां नं विदरुं यतु॥
सगावन्की कपालं वाविलिखच्चक्रं सिद्धाति॥ वक्रसुखं दधित्वानकपुष्पं धावाचयतु॥ साध्
स्यद्रदयमक्रभिविधगलकोपागतवन्धयतु॥ यस्यविचिन्ता साध्नागदुक्तिकदाचन॥ खदिरा
तलकादुग्निनापययन्तिशुद्धं॥ नततज्जुं साधुं श्रमकाकर्षं धां ४ ४ कां न साध्ना साक
स्त्रिपादाकर्षं धां मरुमरु॥ अपान्यतु मरुं वञ्चस्फुक्तं विधि मरुमं॥ अष्टाष्टलखासमायाश्रु

उन्नयं चामकाष्टकत ॥ साध्या द्याकाष्टक ॥ न्यंकर्णो द्विचक्रांश ॥ काकाका नवकाष्टच
 दुष्ट ॥ काकाव्यवस्थित ॥ चक्रकाकाच सर्वचक्रांशकाष्टक ॥ दिमुखसंघं समायाक
 लिखत ॥ लिखतभग्नकर्ण ॥ हविर्दहदितालसंमिश्रद्वयचक्रांशसं लिखत ॥ साध्यं
 मलुमादायलंकाभविदर्शयत ॥ ग्रहगणसमस्तसंवावसंपदीकृतं ॥ सुमेवापनि साहस्य
 मयुलं च साध्यसंलंकातं प्रकृतं विहावयत ॥ विन्धवज्रभारपर्वणीतं सुहृद्भावयत ॥ द्विचक्रादि
 मखाकायमात्मदहं विहावयत ॥ दक्षिणहिमुखयागीवक्रवर्कविहावयत ॥ साध्यं भनूसाध्य
 संधं भनूकाकं हावयत ॥ कक्षापनिविश्ववज्रभाकाकापनिविहावयत ॥ स्वस्वातं च कक्षाकाका

५०

कुहं मुखसुक्तं॥ सुक्तयत्नं सर्वमेतत्कुशकुहदयलुसुक्तं॥ ओं सुक्तिसुक्तं इह दलं देवद
सुक्तं सुक्तं॥ ओं गुरु इह दलं देवदसुक्तं सुक्तं॥ ओं गुरु इह दलं देवदसुक्तं सुक्तं
॥ ओं श्रोतयहागवतविद्यावाजं इह दलं देवदसुक्तं सुक्तं॥ तथैव पूर्वकं मोक्षं लिखेच्च
कुं सुक्तिया॥ अथैव यत्नपथं वाकसुक्तं सुक्तं॥ चैव यत्नं समातिस्थिं भक्त्या भक्त्या कर्णं सु
दा॥ साध्यं नाम विदुर्भवकायं मुखबंधनं॥ साध्यं भवदुष्टं प्रवर्णयित्वा विचि कथं॥ सा ह्युक्तं
मुक्तं साध्यं कनकुवत्सं पटीकृतं॥ जपेत्सुक्तं सविद्विजं सुक्तिं वतित्तिश्चितं॥ अथैव त्वं संवत्सरा
वत्सं विधित्तिश्चितं॥ वाजिकास्तव गवदं न तं नित्यं पदं विखं गथा॥ धूर्तवचितां गमश्च तर्जुनि का

वक्तुं न वा ॥ नृगदकुमसिं कृत्या दक्षिणा हि मरुतया गतः ॥ काकपक्षस्य नखस्य चक्रं दयं समा
लिखत ॥ साधना संतता गच्छेत्कावश विदुर्हयत ॥ काधाधानना उत पयात्तौटपदेन वा ॥
सूर्यमनेन मरुधसु कल्याणी च विहाय यत ॥ तीलं विकटकला वास्यं ईकावकः पूनितं ॥
चिन्तय चोष्ठे लुप्तं चैव नमः तां गतं मध्येत ॥ नृगदम्यादि संस्तुते साध्या दद्यात् विचित्रतां ॥
॥ मलिनं किं नृवकुं ॥ इदं तं च विचिन्तयत ॥ सर्वो ज्ञः सर्वो हृदयं वाक् च मनुविधा चिन्तय
त ॥ साध्या दद्यात् किं ता दहा स्वदह दुषव भयत ॥ नृगदम्यादि संस्तुते साध्या दद्यात् विचित्रतां ॥
त्ययं कोटि संस्तुता नाना भस्त्रा यथ कना ॥ खर्चं खर्चं यथा कृत्या रुजयत ॥ २ पिचिन्तय ॥ मलुं जा

पथसूक्तं पितृभिर्नृभिश्च भवच॥ स्वर्गं दत्तुं प्रयत्नं च कूपा न च कामं कृतं॥ तदुपैकं दयत्सा धर्मं
तथादिशमानकं॥ जातकालकर्मधाश्च भगवान्ना कुं सज्जति नी॥ तेषां कुर्यमानं न चरुं कृप
किंच॥ मरुं पजा प्रयत्नं तद्दृष्ट्वा न विदति तं॥ मान्ये कुरु संघातां बह्वेषां ववा निहा॥
अहाहि मानसं कामं मोक्षं न च मोक्षं॥ विकल्पं साकं संसावं तथैतावीधमानसं॥ तथैव च
कुर्यंति लिखत्कृत्वा न विदत्येकं॥ साधनामा समादाय लिखत्सक्तं न याजिर्न॥ अथैव
हि सप्तमानं दोसां च दृष्ट्वा समा लिखत्॥ कपालं संपूर्णं स्थाप्य नीलं सूक्ष्मं व्यष्टयं॥ मध्यां कुरु
कुरुचिह्नं न वाञ्छीतस्य विष्णो वगैः॥ पंचतुल्यं च रथं भगवतः घनि मध्यं॥ लिखेत्प्राक्

पथकूप्यमर्द्धयद्विधियुक्तं ॥ अथ महिषयार्पणं विद्वयं कुरुत ऊहा ॥ ऊहा ऊहा ॥ हवय ऊहा
 द्यौः कृता महास ता ॥ अन्त्या तं कलहं कृता विद्वयं कुरुत नान्यथा ॥ न न वा विधिनां लिख्य इह
 द्वा त विद्वयं ॥ अथ मरुं समायाय लिख्य भगवतः कार्यं ॥ कपालसंपदं स्थाप्य कुरु मरुं
 हास्तु पथक ॥ चित्ति स्थापयित्वा यस्या हावेयं धनं वा कृता ॥ पुनर्वा वायुमर्द्धयं यः कार्त्तनं धं
 न्वा कृति ॥ उक्तं हृत्तीलवर्णं च द्वादिना दिनि पुनितं ॥ तीयकं ऊहा संशयनेन मना न च वा वयं
 न ॥ जपं मरुं मधु विद्वयं इह द्वा न याजितं ॥ यस्य कस्य कृते कस्य उच्चाटयति न ऊहा
 न ॥ द्वा यास्या न तो यागि सल ऊ विनि वसवा ॥ विष सवत कट्टं लाम कट्ट लवालि

ना॥ वाजिगासमसंथाश्रुसंभानचलकागथा॥ इयचक्रंक्रमादवल्लिखच्चविधिपूर्वकं॥ मा
नशापमदहसुंविद्वत्प्रहिमाश्रुता॥ पुनश्चादुदहसुंभानिचलुसमबुलं॥ नावीः
शंद्रदयवग्धपाष्टिकगजपुष्टकर॥ मूकमकदहसुंसुक्तनेमनमकर॥ श्रुतवर्धसुन
हसिंहसुभवकसंस्तुतयुक्त॥ नृत्तकसंविपाकसंसाध्यकुनेवसिध्यं॥ गुनपुष्टंवि
नोकसंनितुल्लंशवगिन्यवत्॥ ॐत्याहृगवान्त्वामिवज्जगत्कथामग॥ सर्ववीवस
माधागाधजसंलक्ष्मणपव॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ तिथीवज्जगत्वाहिकल्यमहातन्त्रमार्गस्थी
वात्यन्त्रिकसंप्रसादनामहसंकरपटल॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ग्रथान्यसंप्रवक्ष्यामिस्तमासंनः

इति सुगां ॥ वज्रवादि संयागम ह्ना संचा वशी शुभं ॥ काषिकां समासं धिंच वृषि क्षीमा
 शिवा परात ॥ वाक्काध्यात्मिक वृषकुजायनं सुख वृषया ॥ संधिवादनं मवाहु ह्ना वाभ
 सुसर्वसरे ॥ पंचपंदि विहया द्वादशैषादि नाडिका ॥ मरु लेय च वादिना संजाती वाद
 म मतां ॥ वासदक्षिण नश्चापि पुष पूर्वोदि सकु विक ॥ रक्ष च तो नि सं धम नाहि मरुत
 द्विषा स्वयं ॥ द्विकान्तम विहया द्विगुणैषादि नाडिका ॥ संधि सु पंच धाका सूर्य चान्न
 या गति ॥ सा गति मासि पृषादि धं पंच विंशति कला नरे ॥ द्वे द्याख्या तथा पाका नवना
 अरुथा गति ॥ चक्र वादि कुनश्च म्वाव माखि स तिष्ठति ॥ कण्ठ प्याद र्णा धातु कण्ठ गत्या

उक्तिरिति॥ द्वाविंशति॥ ह्याद्यश्च वन्निना च इत्थं क॥ अवं वृषादिना द्वावि सं चानतिविक
ल्याया॥ ह्याद्यान्यद्वा स्यात्तु हि किं हि वृषिनितायकं॥ आनृपयद्वा सर्वनाडी सखादिसं
रूपा॥ गतिश्च लियमागवमाहृत्वा वृषचाविक्षी॥ निरुवोषा फेकु ह्यात्वा द्वाविषाकान
याजित॥ यस्य यस्य रुजा किनां तां गति विनि विदिशत॥ नियतं सर्वं सहा वा न्ना न्य सं न च
या गतिः॥ तस्मात्सं चानिका बाधा सहजं संवाधिमिषा तां॥ पिरुवर्गं महाद्विषा वं हाया
जिह॥ संस्त्रानस्किन्ध वृषं च तन्व नाय्योदि वृषिनि॥ उच्यते किं न्दं द्विष सत्त्वार्थं उलेक
संता॥ एतं ध्या कूल कर्म च मा सत्ता सा सत्ता वकः॥ पक्षपाया सूष नापि निष्ठतं सध्य

[illegible]

518

मर्मना ॥ अद्वयस्मि पसां सधर नय कनक वृषिणी ॥ वपं विवर्णा विहाव म अल संल ऊवः
पिणी ॥ द्विल अल ऊय ल संल सुमा व पले ऊभा रु ॥ नल सं ल च न सापिल सा वा साः
पिरा च ल ॥ यथा काचि स्त प्रपा र्थ स्म र्ग स्वयं च प र्थ मि ॥ प र्थ सा न च कं द कि न प र्था
रु व न प कं ॥ अ वं सर्व स व प्र लु व ऊ स ल ॥ स्वयं स म ॥ स म स ल न यं च व म हा स म य स ल कं
॥ स हा व धि न यं स ल वि श्वं स्ता व न ऊ ग म र ॥ अ वं न पं य था प र्थ सर्व स हा व ल ऊ भां ॥ ना किं
कान पु जा य कि अ मं मं वा ल या गि नां ॥ या गि नी व ल घु थ जा न कि ह व ज त्म नि वा हि स
हा व ॥ स रु ऊ न सा हि अ वा ल इ अ वि ॥ जि ह ॥ नि रु रु स रु स न जा हि सा न व ऊ ध न

॥ इदं गह्वरा सर्वा कृचि कृष्ण मर्दि ताव नो ॥ या गि ती पति ता अपि आचार्य धर्म रत्ना
 च लो ॥ वी भे सं वा द कं कृ चा सं वा क पा ला दि ना थ को र ॥ मृ ग सु ख दु ति हा श्रु ति ॥ मृ
 धा दु उ स हा न्ति मा च नि ॥ दु मि इ स रु रु उ ना न्ति वि न इ स रु उ ता व नि ॥ ॐ ॥
 पु न न पि च रु गो चां ॥ वी न प्र वि ष्ठा स वा न्ति न र ॥ व र सो थो वा न रु मि ता वा य को मृ खा न
 र्वा च ना दि त रु च रु वा न थ रु पु न म् र्वा न ॥ रु गो वा न्ति स मा र्ज कृ चा या गि नि रु क
 क ॥ उ दा न म् दा न या मा स र्व न्ति या रा रु क ॥ वै वा चि न न्ति स च वा रा म् जो मा द्य मि ति क
 ॥ श्रु ता ए वा च ना रु क मा म कि पा नु न वा सि ती ॥ ता ग रु वृ प व जा च वा द ग न्ध न स रु धा

स्पर्शं च धर्मो धात्वात्वं किमि गार्हस्व गार्हक ४ ॥ वज्रपाणि लाक भवनं सर्वभीवन रुद्रकं ॥ सश्रे
 श्री मेरुय यंच यमस्य वेगी प्रहसकं ॥ यन्नातकं विद्या भक्तं अचलो नीलदत्तुं ॥ एकिस
 हाव वासं रुद्रुष्टी प्रचकवर्किनी ॥ रुद्रुष्टी प्रचकवर्किनी च वज्रसत्त्वमु (शेषकं) ॥ ॐ स्वचं रुद्रना
 मश्रु उपाय हाव लज्जुतां ॥ पुष्पात्त्वस्वयं रुद्रं स्वराव सदा स्मिन् ॥ वाधिपात्रिक धर्मेश्वरं
 वित्तप्रदानगो ४ ॥ कल्पदाहाहिकालेषु गरुसम्यगु संस्ति ॥ स्वयं कपालादया वीना नाम
 चाङ्गां सभादय ४ ॥ हाव हावयं पर्यायं कलेश्वरं कसं रुद्र ॥ संचा निधी पद्माधि सवीनं रु
 वजानि रुद्रकि ॥ नृपाय पुरुषं पनीथं संचनं स मं ॥ अथ ४ ॥ संपवश्रमि मरुजा पेलज

४१२

हां॥ मनुजं वरुणं सूर्यं च॥ अथ वरात्मकं॥ गिरिगङ्गा नकुञ्जं वृक्षं महादधिकं च॥ चतुष्पाथं मनुपल्लव
 नमः॥ नमः॥ नमः॥ नमः॥ पूर्वार्कं विधित्वा संस्पृष्टं सर्वोदिकां च॥ लोकि कलाका रुवा सि
 द्विगीधं हवति तात्पर्यम्॥ गङ्गा नकुञ्जं संकीर्णं मनुजं वरुणं सदा॥ साधयन्मनु मविदिन्नं सपद
 दयं सदा जपत्॥ पर्वगिरि विल्लभं पिऊषं द्रव्यं मनुजं॥ ओं सर्ववृक्षं जकिनीय इहं इहं इहं स्वाहा॥ लज्ज
 कं जपित्वा रुद्रं सनुहा मयता लोकि कलाका रुवा सिद्धिं सिद्धं हवति तात्पर्यम्॥ गङ्गा नकुञ्जं सं
 कीर्णं मनुजं वरुणं सदा॥ साधयन्मनु मविदिन्नं सपद दयं सदा जपत्॥ ओं श्रीं हं हं हं
 इहं इहं॥ जपत्तु जपत्तु यं जाप्य दग्धं सनुहा मयत्॥ वर्षा पतनं विधाय नमः॥ चवाचा सिद्धिं रुवा नमः॥

क॥ कुंजस्तु दुर्गसाधयवर्हयस्तुलंशुहं॥ जपस्तु मविद्विन्नंचदुर्भस्वमस्तुजापितं॥ ओं सं
 तनिमंरुंरुंरुं॥ ओं गुरुंरुंरुं॥ ओं गुरुंरुंरुं॥ ओं गुरुंरुंरुं॥ ओं गुरुंरुंरुं॥ ओं गुरुंरुंरुं॥
 राजरुंरुं॥ चतुर्वज्राधयशोरादेभंस्तुलंशुहं॥ भक्तिपौष्टिविभक्तौचस्तुल्यसिद्धि
 भवच॥ महोदधिस्तुलंशुहं॥ जपस्तु देवतामस्तुवज्रुविशेषगुरु॥ यत्थाकं
 विधिसंपूर्णदुर्भस्वस्तुलंशुहं॥ ओं श्रीवज्रुहंरुंरुंरुं॥ लौकिकं सर्वसिद्धिं
 चरुचनी सर्वभवच॥ कर्मभक्तस्तुलंशुहं॥ यथाक्रमं॥ साधयस्तुलंशुहं॥ विद्वत्पौष्टिकं

प्राग्

मन्त्र

नकस्मे माव नंच वि (अष्ट) ॥ सिद्धा न जाप साधना न ज सत्त्व व चायथा चतुष्पाथ मन्त्र
वक्रु यित्वा साधय रूक्म न कृपां ॥ जप च यागिनी मन्त्रं मयूक न दु सिद्धि न ॥ ॐ जा किनी ध
रूं रूं रूं ॥ दशां स न हो मय सीद्धि रूक्म न द साधनी वि हो न मन्त्र प रूक्म न वक्रु यत्न कुल
व व ॥ जप ज्ञा मया मन्त्रं लक्ष्म कुरु निश्चितं ॥ दसा स न हो मय ही सिद्धि न नाप रूक्म य ॥ ॐ
ॐ लाभ रूं रूं रूं रूं स्ता हा ॥ ॐ जान पाद पंच व सी क व न म व च ॥ स्ता न म नान म स्ति ज य मन्त्र
लं वक्रु यत्न सा ॥ ख भु ना हा विय मन्त्रं साधय द्वि द्वि पूर्व कं ॥ ॐ ख भु ना ह रूं रूं रूं रूं स्ता हा ॥ ज
प द्वय ल ज कु दशां स न दु हा मय न ॥ जप मन्त्र म वि दि नं य ज य ज नी साधय न ॥ पूष्य धूष

ज १

पंचगंधंचवलिनेवीशभवचा खानपानविषाखंचक्रत्वाच मनुलंवनं॥ जपद्रुपिनिमन्त्रं
ऊचरुथं कुविनिश्चिंतं॥ दशं भूतमथहवी सिद्धांतं ननु संसयः॥ ओं त्रिधीय इं इं इं
लाहा॥ गीतवायविषाखं मन्त्रमनुनादितं॥ उत्सवसमयसंपादपार्श्वसुभषसाधये
त॥ यस्यकामविषाखं मन्त्रमनुनादितं॥ आभनंदवेताकां नं मन्त्रपूष्ययथाविधि॥
पूर्वस्वायथाकालनोनं नुकां नयत॥ साधयत्तु सामर्थ्यं अलिवलि स मन्त्रिणं॥ स गंसह
मुंलेऊचसंख्याकं वलऊचत॥ असंख्यामन्त्रजापका मन्त्रवृक्षालवाहकं॥ कथां नियमथा
खानसाधयसीद्विमाप्नुयात्॥ ॐ स्वाह र गवान्स्वामिवऊवाकस्वथगन्त॥ सर्वविस्माशा

मन्त्रजसत्तरपनसत्तं ॥ २५० ॥ ॥ अतिशय अवावादिनाय महाकुरुनामं हं हं संचा
 नवीनजयविधापरलठकुरुमा ॥ २५१ ॥ ॥ अथातश्चावववहसिविधिदृष्टं न
 कर्मक्षो ॥ कावासायनसंरुमा साविधिमाकुमा मिति ॥ उपदीपनिवासी च चृषसंकाकि
 दिहिका ॥ वैशाखमासविहया हसीयंचसी संमता ॥ द्वाभनिवासी तीद्वीका संरुधर्म
 भद्रुकि ॥ दिगीयधर्मकोयंचसंतागगुठ संरुव ॥ स्यात्तु निर्माद्यकाथहिनाहिनात्कोठे
 मनसासुथानथ ॥ चत्वारिनिविहया काकेवगद्याभावाकिवा ॥ अहिचानं सप्रेतिप्रपाक्षीभा
 साधयज्जना ॥ नागानां साकर्षेणचवर्षापभाः सुसक्तं ॥ धर्मभद्रमहावावि ॥ स्वरु

५८

कथाः॥ कर्मसंज्ञायाय न पुरुषः कथागित्या पुरुषा कुरुते॥ अपरं वक्तव्यं कथाः कथननक
लुकाकरलुकां॥ पानमिना नयां सांच पानपानमिना स्वयं॥ अदृष्टाना ननकांच काक
वहक्ति सदा॥ कुरुते कर्मका नैऋत नवा सियत स्वयं॥ कर्मनैऋतं कस्य मयां धागि
निध्यात्वा अंतर्भवति महासुखं॥ धागिनी चान सर्वं च आत्मना लयत स्वयं॥ कर्मसंज्ञाः
क्रियत कस्य न कस्मी न च कर्मसंज्ञां॥ स्वचिरु संचा नैऋतं कर्म संचा नैऋतं कर्मकं॥ का
यां का वंचन पोसा चिरुं वै कसि कंधनं॥ हस्तपोदय सर्वं वृत्तं कर्म कं स्वयं॥ कस्य सर्वं न
विकटा नीतं समं कर्म लुल्लज्जतां॥ कर्मचेशु हृद हृदु चं अशु हं वक्तव्य स्वयं॥ पूजावा

आगीतिनां तथा ह्युक्तं नमस्तुतं ॥ ग्रामनगरासीचपर्वतादिमहागुप्तं ॥ पूजयत्समयसुखं
पागसिद्धिफलं पदं ॥ जाकिनीतिप्रकृतं च व्यातिवायुश्च संरुता ॥ पानोपानतथात्यं
च ध्वजमभवयथा कृमात् ॥ जाकिनीच तथा मा माखरुनी हचनपिनी ॥ उलूकास्यासु क
नास्यानुनामकर्म किं कृमात् ॥ द्रवद्रुधनं जयतां विविधं सदा ॥ हर्षिता ॥ जाकिनी
दक्षिणी मथनी पदा ॥ एवमूहं किं पदं तिदं रूमि सर्वं ॥ पूजां कृत्वा उवावाही वज्र
सत्त्वस्य पदया ॥ कथं पाठ्यादिवायुनां नाम संस्पृश्य कथं क ॥ कीर्तनं स मम सा सर्व
कालं पूजायते ॥ हगवानाह ॥ पद्यातनपथमाध्यातनसूक्तं गीत्यरावया ॥ न्यसद्वर्जापम

शायुः नृवाधत्वादिना कयूरः ॥ पल्लवातीयकं च स्मा रुदाका नानयपिच ॥ तस्माद्दया
ननामे च सुचितागमनागमं ॥ समानागमिणां तात्वा न कथा पूर्वैः कथ्यस्महि ॥ उक्तानं वर्ध
नवाकां समन्ता पूर्ववत्समां ॥ ज्ञानां सर्वज्ज्ञां वापि मे ॥ ४० ॥ कर्म वा युता ॥ मार्गः शुद्धिः
हावत्वा सनतो च पदं स्वयं ॥ कर्म मानसं स्वराचं वदन्त स्युः लज्जुः ॥ कर्मिणां समानं
च ज्ञानात्थं ददं रुकां ॥ धनं ज्ञेयं महात्मानां प्राप्ता वा युदि संख्यकां ॥ हर्षः क्षमति कर्तुं यं
नदनात्तस्य ह्युक्तिः ॥ तस्माद्देहपथं कर्तुं याहि ॥ प्राप्ते सर्वसंज्ञं मे ॥ यथा द्वादशो
मीषु पृथमा सर्वे द्वादशि ॥ दशहि स्युः विदुः द्वादश हि मिश्रं यत्नः ॥ उक्तं हि स्युः

वाहिः स हावजस्य शीपतां ॥ दानादिपात्रसिताया रुसहज संवाधिमवया ॥ अन्तर्गतस्य सर्वं च
वज्रसाली श्वशीपतां ॥ उक्ता नूतं चयक्तिचिरु सर्वं वाधि नूतकं ॥ पुनरुक्ता वाको नदवी च तजका
ब्रह्मपिशी ॥ का नभं वा कृतिहानुं सुखिलं सर्वं नाडिकां ॥ लीला गृह्णितान्यात काकास्या
संरु सारिकां ॥ सुखं संधा गानिधिं सर्वं गुणं मखा सुखत ॥ यासावय गुणभासां कृत्वा रुतवमि
रुतां ॥ अन्तर्गतस्य दसायं रु अवीच्यादिषु पच्यतां ॥ गुणं गोमेवतां सर्वं व्याधि पर्यन्तलेख
तां ॥ कृष्णवज्रानि सर्वं अजस्रं सलज्जं ॥ यत संसृतिधनत सिध्यत नाशमगय
॥ ४ ॥ सुखं गुणं रुततां सर्वं वा सुखं रुतिकां सखादिभवच ॥ याजयशानि पूरितुं अजुलिकां

नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै
सुखात्सर्वं कुरुमादिगन्धदिप्रवालनकचस्मवीजकं पर्यकादिप्रथाराष्ट्रपंचांगं
टिप्पणसंज्ञा वेदोक्तचिह्नवीजकुनगास्त्रिकुनगाथेवच इन्द्राखनमहीपास्त्रिलेखान्नम
स्यस्तुक्तने सावर्धमस्तुननंसाकविद्वयगोक्तुनियतं यथाकर्मविशेषधर्माश्रयस्तुक्तं
जाययत गार्हपत्यकारणस्तुवाकापञ्जवासिष्ठिनं कुरुनाच्चारनं कर्मनस्वस्तुक्तं
नित्यं ह्येवमदिगन्धानद्विद्वयाश्रयस्तुक्तं समन्तानां नस्तुक्तं स्वानवाप्तिसि
धिनं तस्यस्तुक्तं प्रगल्भ्यनं कुरुकर्मस्तुक्तं योजयत् कुरुमीकदिनस्तुक्तं यन्त्रियगुरुक

मेकं शक्तिं कर्तुं नीत्यसं पदिकं मध्यमसदा अनामावगमिह के पर्यन्तं नाहि नान
नर अरुद्रादवतावपं सर्वकर्मेषां जयक अरुद्रगुलिका सर्वधर्मधाम स्ववपार
समाहितं जापतावतं अरुद्रसंविशेषक कृतपदजपदधरं तायादिगुणं जयक वा
पनेति गुणं पाकं केलीजापं चरुगुणं जपसक मविच्छिन्नं च स्वाभामक नूपनर पुष्पासन
सिद्धं जापमकुसुमादिसंगुहो उपलभ्यते देवतावपं सुनवा मंदवभादिकं आगतागतिं
चिन्त्य सांकर मकृतत्वगरे कृष्णादि विनिर्मेकं मथतापानमार्थिकं उरुघां सकुजापसंत
ऊवाविधि मन्त्रं नृणां हरगवान्नामिव ऊजकं तथागते सर्वबीजसमाधारावजस

नृपप्रसन्नं ॥ २६ ॥ ॥ क्रिष्णिकावावाहिकल्यमहाकलुवाजं मलुजापाकुमाला
 घोषाद्यकिंलज्जवोदनवमष्टपदल ॥ २७ ॥ ॥ मृथान्तलज्जवोपष्टमलकास्याड
 यत्कटं कथंनकावभंमम्यकुर्यंचसर्वसंधिकं मिथुवंमिकिबंश्चकटसामथोयोसमा
 स्मिन्ने उलकास्थनमासाग्रनावीडिपथागमिनी उपरंजाकलालीचस्थनमारगोडियर
 ऊर्ध्वं ललीपियंमहासायाद्वामनादिऊरुचान् काकुवोतनरादुकिपादाहुस्तु
 नादं उलकास्थानामकंचडघाननधुमकुच लप्लीवमलयाख्यातसंसंमिडिऊरु
 काकामनूपस्यवहसर्वजडियंमर्ग सर्वजडरुयस्युं विवाभाकानमूलोडुर्कं सर्वजडं

[illegible]

चाटनकमोच्छयागिनीलाकनायकां कर्मनानांस्वसक्तकडकासर्वंचकावयत् सर्व
बांयागमापय्येन्द्रकनुषासाचवं किलुक्तसर्वयागंचपिनुवृषमिदंच पुखाहान
सुधाध्वानठपाद्यामकुधावनं अनूस्मृतिममोधिश्चयद्विधायागालज्जं पुखाह
नेहुकावासाडलकाध्वानमिष्यत् प्रोक्षायामस्मितास्वानां धावहा नायाकुसुकाश
अनूस्मृतिश्चित्तांधितिसमाधिदाहजीमतां इन्द्रिगोप्राफिनिर्देशमभयनीसर्वहलात्म
जां संशानंमच्छमानालुविश्वमाथापसंस्तुय स्वासुखानमिदंशुक्लं वज्रजापसुलज्जं
चिह्ननिधिसंवाधिवंयूगनवाशगवतां निर्वाणमिदंनोमंचनिर्वाहिसममार्गयो प्रवृद्धि

सर्वमहापातमकुपानकुर्वन्त किंवाभासुंशुहंताताकूर्यान्वावत्सनाः ४ पादगं सर्व
हायषूहताकानस्यपुनागादगंचिरुसप्रपपधनंस्तस्यगिरिः ४ ननीनालकु
संस्पगुच्यतनाडियंजनं उक्तीषामगियय्यनसंधिगमीद्विधनता पादाहुष्टमीमा
चक्रुसध्माकथाचागुयु लिंगमूलात्तादायांचक्रुपादाहुलीदयं नासिकाजान
ताहृयाजंघायांकनसौदयो पादतलाद्यदयोचताहिरुपष्टवत्सर्वं गुठनाल्येदुविह
पापादसन्धिसुजादुर्कं गनुकपानगंचापिमदुचकजकंदयोदसुसंधिसुपाएवच
वाहसन्धिसुतोदयो सिंहासुधसंधिचक्रविदलाजामधिदयं कोमसंधिगोतचोपि

ललाटाक्षयसन्धिकं कर्णपट्टचतुमूलकुडगूदयसंधिसक्त आसनाचक्रवृक्षचक्रिका
पांनवतासिकं तथागालककिङ्करांवाल्कककोनकद्वयं एवमादिसुतकार्यानां ठिकास
न्धिसमेष पीठयस्त्वचानमृधाधिविचक्रमहात्मनां कृत्यागविधानेतरगयागुगुण
वाक्कया मासिमासिनिधेयादुर्गतिथिः मूलनाठिकाशुक्लपुतिपदाद्यादुपावत्सु
स्यवानिका हयावाधिमहानाठिउल्लकीमुखचाननि यादृशंचमुखंतस्य तादृशं कु
लिमदिकां स्वासुतादृशं कुर्याच्चापि सिकर्मकं अथवा सर्वनाद्यान्नुपीठय
दिद्वभदिकं सर्वकचसर्वसन्धीनां यथावहनपूर्वशः कृत्तकृत्तं ललातीचतुमाया

उसर्वदा नस्मादकालासूत्रं च वचनं कल्पकल्पितं तथा गतास्वाम कठुवजघनी च कल्पना
न यत्तय न हि वेत्थ न ता लिका माह माह माह माह मृद प्रसिक्तानां वाक्श्री सिमा कुमहा प्रहृष्ट
को वरां सर्व हतातां वृत्तं विश्व ऊक्तव ४ नस्मात्तद्वै सदा भार्गव पूर्व कर्म कला यथा न
प्यकि ॥ दसा कुम्भ मा सतं वृद्ध सा प्रयात अथा गत संप्रवृत्ता मिद्वेता मगुला दयं नर
संपन्न स्य न स्य सर्व सिद्धि गुणो लय सर्वे काम गुणो लोके ह्रीं सिल ऊप सूची पंच स्कन्ध
ग्रहं का वं द्विह ऊरु नू वा या गवा न दिव्य न्ध रुषा का न च उर्म ख म कु म च भूत ओं सक्त नि स
मृद्वै रू रू रू पूर्व ओं गङ्गा २ रू रू रू उरु न ओं गङ्गा पय २ रू रू रू पश्चिम ओं गङ्गा

तद्विभक्तिं तत्तापनिर्वृत्तं वा वंशितं श्रुत्वा महर्षिः तस्यापविचलं कामं चतुर्नभुं पीतवर्णं
महर्षिः प्रचक्षते। तद्विभक्तिं तत्तापनिर्वृत्तं वा वंशितं श्रुत्वा महर्षिः तस्यापविचलं कामं चतुर्नभुं
तुबलं मयं वै मयः सूर्यं गायत्रीं तस्यापविचलं कामं विश्ववर्जं विहावयत् तस्यापविहा
वयत्पुत्रं कर्तुं वा वंशितं तत्सध्यावयत्पुत्रं श्रुत्वा तत्सध्यावयत्पुत्रं तस्यापविचलं कामं
वज्रसत्त्वं चतुर्नभुं तत्सध्यावयत्पुत्रं श्रुत्वा तत्सध्यावयत्पुत्रं तस्यापविचलं कामं
संस्तुतं मत्तमूखं महात्तमं दक्षिणं तत्सध्यावयत्पुत्रं श्रुत्वा तत्सध्यावयत्पुत्रं तस्यापविचलं कामं
हववाकालं वा वंशितं श्रुत्वा तत्सध्यावयत्पुत्रं श्रुत्वा तत्सध्यावयत्पुत्रं तस्यापविचलं कामं

चरहा समापन्ना मालिङ्गनकुञ्जक्यं द्वितीयं रुद्रयनगजचर्मोत्तमं धनं रुद्राय उमबुक्तं वाद्यस
 र्वधर्मोत्तमं हावका वामं रुद्राय खटाङ्गकपाले धनं कपालमाला लं कृतमर्धचन्द्रविरूषितं वि
 श्ववज्राङ्ककमूर्धिका धिपतिमस्तुतं विरूपाक्षनतं हीमङ्गुलादिबसाचिह्नं निवर्गनं व्याधुच
 र्मोक्षगताईनवशिखविह्वितं पञ्चमस्तुतं लंदवतवतायं च नसाचिह्नं तस्यालिंगिणी हगवती
 द्विजामकवकुक्षिभुजा वन्धकवर्गुनगता च मनुमालिङ्गमखलां मूर्धिकाङ्गी काली च शुभ
 किबूधिवशिषा वामस्तुजालिङ्गिके कपाला इष्टमान्नाद्यसुगन्धना दक्षिणं रुद्राय तीक्ष्णगन्धना व
 र्जकलो गतिवत्सहास्रं जंघाद्वयसमावृष्टा महासूखवता सदा जातिनीकुतथा वामाख

५५

२ भू-प्री

गुवाहाडुनृपिनी ताम्रपद्मादिसंस्तुतसर्वसिद्धिः सूरवादयं कद्रुणामंचनकंचरोभनवर्गकुदि
नृजा विजुजावकवक्राहुरवदाज्जचकपालिनी दक्षिणवर्जकद्रिचश्रीलीटपदनग्लिषा
४मूर्ककभाद्रुदावदनापंचमूडाविहृषिताः विदिश्वचत्वावाधिविहृषितादिहृषिता पूजयसं
चामेनंयुक्तं नृपगीतसूखात्सर्वं चतुर्धनमिहतादेवीशवयदेवतासदा पूर्वधानंरुजाकाग्नानिला
द्विजुजावेगः उल्लासाहृदयं नृपामाचमूर्ककानिका श्रुतास्याहितथावजापश्चिमदानसंदि
ता मूर्कास्याहृषितामादक्षिणवर्जकभासता श्रीगन्धर्ववर्तेअणांवायव्यगन्धनकानका यमजदीयम
इतीचयद्वितीयममथनिता विदिकस्तुतयदेवीहोहिनूपोमनाहो पुतास्तमहाधारापंच

मूजाचिरुषिता वासकपालखवांङ्गदजिह्वावज्जकारिका ॐ नमो सर्वथागित्यं सर्वसिद्धिप्रदाय
काः नमस्कृत्य च यं ह्यहं ह्यनन्तरं विहाय न स समयचक्रं सत्सर्वं धर्ममज्ञासकं शयागिनं म
थकवचनं पंच ॐ ॐ हं ह्येतन्महसि विविधशिखाया इति त्वायां वायुद्वयं ह्यध्वय इति ह्यध्व
इत्येव ह्यहं सर्वो ह्यस्य स पथमं वज्रसत्त्वं तद्वितीयं च तस्मिन् १० मीयं पञ्चनृपं
वज्रचक्रं ह्यवर्ज्या च पंचमं वज्रसूत्रं विषयं पञ्चमाश्च षष्ठिं वज्रं वज्रं वज्रं ॐ
वज्रवेवाचनीयं ह्यं यामिनी १० मीयं वज्रं वज्रं वज्रं ॐ वज्रं वज्रं वज्रं ॐ
चक्रिकायां सर्वो ह्यस्य स नाहो ह्यदिनं वज्रं विविधशिखाया ॐ वज्रं वज्रं वज्रं ॐ

धर्मोपागमगुहाह वासदक्षिणपानिशांस्तद्वदयनस्यकमलनद्विकणन द्रव्यमद्रादि
 द्रवस्यकमलुंजाकिनीजालसम्बन्धं नुवंयाणववराधु द्रवगोशागविहवयन धर्मसंहा
 गानिम्माखामहासुखचक्राजिनं चक्रविंशतिताबीवंगभरकाहिनं चक्रविंशतीपी॥९॥
 दहसन्धिमुध्वनयेन नुवंपीवुमयंवीनंसर्ववक्षसमाक्रमो श्रुदयाकावयाणान आचिः
 न्यपदेदक्षाना चिक्रानकूलपागभहावयत्यनसंपद ॥१०॥ दहसतावजिवज्जकारकम्
 थागनः सर्ववीनःसमायागभघजसुखपनसुखं ॥११॥ मिथीवज्जवावाहिकल्पमहा
 कलनाजहन्कादयनिर्गुयसंविधानात्यद्विलज्जहादक्षमःपटलः ॥१२॥ अथस्य

महार्थवञ्चस्वात्ताया हृदुहृदकः यतविष्णुकमाकुशपागिनीसिद्धमूर्ध्नां स्थाप्यस्रस्रिया
शिन्धुक्रमस्यान्कमतिः स्वयं सर्वकालेष्वसूफाचजाग्रतसोख्यमहागुप्तं तानास्तान
मागत्याहुस्त्रिविन्दितिचासंनां भक्तदिदम्भधिकंचनिबूक्तिदेक्षलज्जभां एवंभनलेऊं
चविरूपासुरवेदायकं क्रूरसंप्रसूतिरंतरूपपद्मगर्भसमानहं सागरंहरांगंसद्रुहंतगीतं ३८
वाद्यंस्रस्रफेकं स्पष्टंवक्त्रारुहरोष्ठचपण्यादिगेधकंसक पियदर्शनमाडादिमुन्दरीधं
हुवाक्के वृद्धपूजादिस्त्वेषूपिबकिस्त्रेपानया उद्यानंवापिकातीनविधान्तंगुमनादि
ना रूपिः होजनच्छंदउगुनेवाव्यमस्रस्रं नवनानीषुगंगाबाहास्रहास्रक्रियाचः

[illegible]

वृद्धवृद्धेगातासोख्यं पवमार्थे वृद्धीपना सिद्धकथाशुश्रूतायं यागितीनां रुवासनं धर्म
संस्तमहाथे वृद्धकालसंस्तुतुतावकं वृद्धतिष्ठपहाहासंस्तुगत्वावाधननामकं मायासंस्तपदार्थ
वृद्धकालसंस्तुतुतावकं पित्रुपुत्रगुणानामुपकंपादिगं मनोसंस्तु कृष्णस्वधपरागासनसंस्तु
त्योदनं पूनमागीहिसंस्तुवचकं सस्तुवयागवान कल्पिकावचनं गच्छाक्रामकल्पिकावच ३९
वृद्धिधानामवधर्म्यस्वताववायं गच्छ सस्तुसंस्तुगतिमोक्षधर्मोकायकं वृद्ध संस्तुताग्रयाशु
सर्वोधाहवास्तुवत् संस्तुवचवाविकं सोख्यं पृथिवीभनकृतादिषु कृष्णयूगस्वतावकं सोख्यं वृद्ध
हं चया सस्तुगच्छवृद्धसंस्तुताविशतवृद्धस्तुतां वापवश्रुवसोख्यं वक्तुलिनं सस्तुतास्तु

नतं सर्ववृद्धगुणपापप्रक्षिधनेः फलार्थं च एवं च सोऽथ वस्त्राणि दार्ढ्यं च महदुक्तं
कृतीया वस्त्रा सोऽथ च वारुणानंदकल्पनात् धातुवाक्यं हि ह्याशुहावज्जनिर्गच्छं औष
धिचक्रविहृयात्किं ताः मरुतामगाः पश्मिनीसंखिनीचिनीहस्तिनीलंगनामया चकीक्री
दुपरलंकृतिनीपूजातदुवलाभातादुल्लस्य पापाचचन्दनाः श्रृंङ्गां नकाचैकसर्पादि
कहियावेन महोषधीं सोऽथ पातन्दकावेमुसर्पादिकानां कुम्भं मवतां न वकीया मोत्यं
हावताया कुवंगगां चतुर्थं स्वस्वावर्तं श्रृंङ्गां संध्याश्च मानवा गच्छन्ति व्यवतिष्ठेव वचना
निघूर्मन्ति स्तब्धं पथमिथ वतिष्ठन् च वतिष्ठन्नेव चाः सोऽथो ह्यहिन्या गिध श्रवणासुख

हनुना पुवंचकुर्विधावस्थास्वानास्वानसंहि कां सम्पत्कस्मिन्निपदंशु वरुणं यस्य कस्य
संसागयायाभयस्मिन्नास्वानमखापयावकु मकुसोहोवयागामाहावितामथ मकुलं
उंवेवज्जनास्वाननकृत्वाकस्मातोयउरुइंकाइंराहयउइंइंस्वा उरुस्वाउहाइंइं
स्वाहा नृत्तिसफुकिंभात्मकंमकुपुष्टपायकुसिद्धिदं नकुवर्गुमहाधामांरागंमंखनुमोहा
यकु आषाढंकार्कटंनभुस्वाधिवानपुंवर्गुकां उपद्रुयिनिवासीचसर्वान्स्वस्वउंयजां
वण्णकर्मषट्वाड्वाहनादिमकुविरु पंचामृतंमहादीपपूजाचसर्वकर्मोभम इति
पश्चात्सनाक्तयामृतं सर्वसंक्षिजां वेज्जनानिकापुयागानकुलनातादिनादिना काथा

वजादिमकुषम्रुधिस्तानकगणच नृथरुसंप्रवजामिचकथागिनिघाचिर्गं वाक्या
गिनिमंप्रकृपिउरुमनेनभक्तं वागोहिस्वगहंप्रकृपूर्वसंवादिक्कानयतांपूर्वसंवा
विनाकर्मवोधातस्यपनिशमरुप्रकृदगम्यांचशुकपकृत्थेवच निमकुषम्रुधिस्त
स्तानसोचादियूकिदं स्वगहंप्रकृयदवींपूर्वाहिमखसंस्तुतं कंकुसंककुलं चैवसिधुवे
रखादमस्तुतं हस्तपादमखचैवमपिपाननत्वाच्चयनं श्रद्धासंनवितभीर्षकंकुमशुल
हितं शुगंधशुधूपितं चैवशुदीप्यंधूपनं एकविंशचक्षुष्यंचसफतवविशेषकं चक्षुर्वि
जातिर्गंजावदाताताश्रद्धयाखलु खाद्यपानंचयः पंचमस्त्येमांससमन्विता हावय

मकुमदांचवीवसंककर्मयत् कर्जवेवाचनीवृषांपज्जयद्वतासदां वलिपर्वंगमंक
योच्चवृषीवलुठीकिंतं कुतिगीतसमायुक्तं वज्रवावाहिपूजनं श्रापयन्त्यास्यतिपज्जया
धामयेथेमासेवपिवज्रदांयतापूजिताहकिं वताजनस्य श्रीवज्रवावाहिनगीगतस्य सं
हिष्टुचिद्वावनदाहवक्तितासंकवस्तानियताववाति श्रीवज्रवक्त्रागतनरुष्टयकि
माकनशक्तिमिदुयागितीपूजांभक्तिपोष्टिचलजयत् गुहाशुक्तंलंकर्मकोः
मावीर्यार्थंलंकालो दोहस्तोमदिंतंयतमसंकुष्टनचेतसा मनसगपूनवृद्धिंजा
यत्तद्वत्तमाप्नुयात् हस्तिगांमूर्च्छितिलावाक्वर्चनपूजयतिरुक्तंलंकालो श्रीसाध्वं

११

हृगकनागंजि वीरुक्तु न संसयत् नो जयति पूजय शब्दा नर्दिनं नयनद्वयं ऊर्ध्वान
मननं चोक्तं ह्यनं च साधकैः ४ महोत्सवं मखा कर्त्तव्यं पुष्पं पुष्पं पुष्पं पुष्पं पुष्पं पुष्पं क
निरुक्तं किं सत्त्वं को मा गी म च्युत सदा पृथु निवी श्रय शाने दत्तं पुनरुत्तमं किं पृथु पृ
नर्त्तव्यं किं कस्माति नरु फा मा न्म सत्त्वं कश्चिन्मन्त्र पात च सर्वे नर
श्रुक् स्या दाग मत्पदि ४ कश्चिन्मन्त्र पात च सर्वे नर
४ नो जयति नो ह्यो न्या ह को मा गी नो जयति नो ह्यो न्या ह को मा गी नो जयति नो ह्यो न्या ह को मा गी
कथं महानागं ह्यो न्या ह को मा गी नो जयति नो ह्यो न्या ह को मा गी नो जयति नो ह्यो न्या ह को मा गी

फंदिनि शकयत अन्नावावकते शेषे वा कुक्ष्यदवनां मम नून्या न्यलुकथा कृष्णान्नान्यं ह
सिक्त यदि किंवादिदं सविहृया को नागी सूचयन्पुनरि सुजमानकृतं हि उत्याद न्यगस्त्व
न गदमान यदि पृथुना लोकयति सन्दि हि यकर्म सवा प्रातिदिद्ये वागंच जायत पादं घर्षय
न ह्मो स्नान सागार्थं जानता पूजा काले शुभं मन्त्रान्यं विशमच्यत एतद्विकारमहितं पूजा
पाठसिद्धि लक्षणं तस्मात्पूजापथे नमो धर्मात्तज्जयत्सदा पूजयन् जवावाक्ते सर्वकामफलप
ता वा नून्या ह्म गवान् वज्रजक कृष्णगत सर्वविभक्तमाया गाद्वजवावाहिकल्पे वा ॥६॥
इति श्रीवजवावाहिकल्पे वाजसूय्याय वस्त्वजवावाहो पूजाविधिनिर्देशपटल उवाच ॥ ६ ॥

अथ न्याससूक्तवाक्याकथनं यद्विस्तृतं पञ्चदशैः सर्वसहार्थैः पूर्णैः त्रिंशद्भिरुक्तिभिः सूक्तवाक्यैः
सर्वशून्यनिर्दिष्टतनं सूचीवज्रमूलाचापिसूत्रवत्सर्वगतमिती वाधित्त्रिमहानन्दक
लालासूक्तकदनी तन्मये सर्वगतनागादिदुर्ग्यगीतमनज्जवां अष्टसुजमष्टाद्वीगङ्गाश्रुपा
तलेज्जवां पथमं काकवद्वीजं पतितं मरुपद्मकं अकवाशिषहृदनपश्चात्तलकसूक्तमिति
मासं मकलित्वा रुद्राणां सूक्तवचनात् सूक्तवाक्यानुसारवात्सदादीयानिधिधोवत्तान्
इतीवावमृतं पश्चादंष्टितीकसंस्थातनात् मथनीवाध्वङ्गश्रीमादात्सर्वसिद्धिफलदाया
त् सम्यगपान्तगतमुश्रुत्यादयामरुदितात् पञ्चदशैः सर्वसहार्थानिर्दिष्टैः सर्वगतचवाट् द्विपद

बहुष्यदादीनां वाया माऊ विऊ पका निर्वृत्तिरुदको निसंदर्भेन स्वर्गो नपिच पीतवर्धुम
 हा बोडी रणपंगपिनि संनिहाठ वज्रमकुलमध्वरुपशपायसूयपिका रणधमावधमकनाम
 पादपतिनासिनी मकादिनाउदगीनांस्वस्वउतापेऊजिही ओं वंदं जं द्वा सुकला नीलास्था
 पुथमइहाद दषदशमदयनइंहाइंहाहउं ददद्याहा ॐ निसफकिंभमकनायकीवन १३
 यागिनी मकुलसूनाशोरुहाविनायागमागवी सूददयं महापाशघाशपतीदुसूजानिउ
 वाकाहा सूददयंपासकीलकानिदुरभाषयन द्वाजिंभदयपासाचवुभसूदस्यपाश्वरु
 चक्ररुहागोकंदानं नाहिपमरुतसूमं किंविचंचरुयंकर्हिंकादलपार्श्वरुद रुदरु

हृवांदिचक्रं भवलायां रुहावय कृतिहागिकं माल्यं च वज्रपद्मं रुचक्रं श्रालच
कृषमरध्वचहीनादं कुरुम् लकं तन्मति सर्वतादशाद्य कृतिष्वचक्रं कवि
धंदिगुहं किदा नानिर्येहाद्यान हागिकां तद्वर्तनवदिका चारि ४ कपालपञ्जकासुथ
धनवशीपनिका कुरुवेत्त हा नार्धपदिका कुरुमगीर्धनुरुदन्तश्रुतीपविनासुथ
कुरुमाङ्ग निर्गतासूची विश्ववज्रमहायुति किंकिनिजालवर्कचपेताका घट्टनादि
तं तदाक्राङ्गच सर्ववचनकादि समालिखत विश्ववजावली कुरुका लावली रुम
वत् तदाकचक्रवाङ्कुरुम्पान्नपका हर्वत् कर्त्तुकावली यथासु मृगुषानाकथे

वच पवरागयस्यवाश्चरुनत्वावलिस्मातिखत भभभनायकांतिर्यां दुत्तदागमदि
 संभक्तगः वीजविंश्यासक्तकृष्णकनिष्ठुकासवसंरुवां अथवाकार्यादिकेश्चक्रनेऽसर्वम
 गुलं तथापिपतिताकावेऽवीजमेतुलपाठुं पयदलषूकांश्चपंचामरुकावा
 द्वा कल्लभपनिदयाकुसफलिंभानिकानयन गावसूयनेदिकंदुलप्रादुमच्चश
 विका मरुयमंचकल्लपंचवत्तदिशोषधी गान्धदकपल्लवादिपंचामरुषूपन
 यत वलिः सर्वेषुकर्मषूतावतादिसमक्तगः दापयद्वज्जद्वीनां ऊणपातादिकाधिवा
 न् पंचामंतादिहृष्यश्चमन्तर्पथवाकादिकान निर्विघ्नंरुवकसर्वश्रुताकर्म

समात्तरुक् नानातिर्यक्खाद्वीसफकिंनानिपिकाः कर्मवजिविहावत्तासमाधिप्रय
थागवान् द्वासफनिकवांशोदांवनभाद्वद्वेयता मलमुखंस्करास्यानवनवेतिपाश्व
रः तथापनिस्फस्फयंचात्रिकंडुस्फापथन दंडि।क्षान्तानृत्तमायमर्कानंब्याद्यमिंहकं
हीमंचदन्तिद्वेगसःस्वनंचेवयथाकर्म वोभमहिखंडीनकद्वपांमकनभाषं गभुंच
मवमंगजंचयथाकर्मषलज्जयन अहिनाल्लघाकनाहुदादमूलकपिबल्लकः गभुगद्वका
कमुडलेकवकस्यनकं महामेकिचाकवाडंमेयग्रातामंचूडकं पावायकमु सर्वधास्त्रहावेवर्धुपिष्यतां मगु
लस्यचउकृत्वावेस्त्रहावंपस्यधुषू सफकिंनानुभात्माचपकृतयःसंविधायकं तथापतिविंविमखं

गतिं वा धिक्तात्मनां च नष्टापरुहगच्छदं च श्रुत्वा न्तं वंदितधारां दक्षिणशक्रकृन्तं च वक्रगदिरा
 क्रुवंद्रिकं मृदुवायश्च नमस्य धनदुरुपथा कसं वासयमश्च कामं च चन्द्रवन्धवाशुकिः म
 दनिगाधायामि क्रुजाय च कपवदुतं एवं सखा दशावा नं च साजा मृगमक्रुवं धार्यमानं च चि
 रुतदद्या च नवतवज्रक दक्षिणसमस्तद्वन्द्वे वजासिककसं कं पणवक्रिवाधं च
 गल्लहिनं च मज्जनं च कठमक्रुलिगादधुं च हिलिपालकं संखवालकं दानिका मयूववि
 पिष्टिकाः ४ मथः काकापक्रुविकोचश्रुतिं कलुषुपर्वकः लगुं उदय्ये वा वीशागुल्फो निरु
 द्दुष्यं मृगवा इनिगानुः रुडि इह खजालिका कवन्धं क्षालकं लंचरं ववन्पं क्रुका मारु वा

मधुसूतस्वर्णमसकपालकं धनस्वर्णगणपसुककुपिदानिकर्तृनीवच घंघनमाला
खलंगिलास्मभनधलिकं हावोङ्कडचर्मचलविगवठानिका वादनविकचीचरसीरोह
विदुमसुकं कंकालंदेकिकाचैव नववृकगुणवर्तुको भानिश्चनंकीलकंचरीजपवंकलपकं
चिह्नकायकर्मचर्मघट्टादिचक्रासिवां एवंकमकुविहृयादासफनिकुमालिका द्यधिकां
षकगालांचदकिचर्मववृककर मधुसूतजगमवृहंहाहनाविघ्ननासनं सर्ववर्तुसुखाचारु
अथवातायकवर्तुवन मनुमालादिसर्वचक्राहवननिकायजां एवंसम्पगन्धायामंचविहृया
प्रतिविम्बकां सप्तकस्मिन्सूत्रेनहावहंदादिपदात्मिकां समाधिजालमायूर्यपहास्वम

सर्वलीनता गत्वावद्धसुमाप्राप्तिना नाकिर्याकिजलवां स्वस्वहाययाधर्मैश्च द्वायानिस्वरागु
जां सुश्रुमन्मन्त्रमूदिश्रुताः सहजसहायनन्दनलुसभां पञ्चसंसायहृदयनहा जिपस्
सान्द्रवृद्धमन्त्रं श्रुत्वाकसंप्रवृत्तमिवजयागिनीयोचितं वाक्ययोगिनीयाचितं वाक्ययोगिनी
संप्रवृत्तिपिच्छमनंतनकाकं श्रुत्वाकसंप्रवृत्तमिवजयागिनीयोचितं वाक्ययोगिनीयाचितं वाक्ययोगिनी
सर्वतामुनाहजं हसजं नृपजं वापिशुकिजं खजं तथा नाविकलचलं श्रुत्वाकसंप्रवृत्तमिवजयागिनीयोचितं वाक्ययोगिनी
श्च संरुवं कृत्वा हवंचकोट्या शंपाषातंचविष्णुखर उक्तखमुदिश्रुतं च श्रुचिचरुपं
चमवच यत्खमुं सफमंचश्रुत्वाकसंप्रवृत्तमिवजयागिनीयोचितं वाक्ययोगिनीयाचितं वाक्ययोगिनी

नञा स्वतन्त्रकृतिरस्यमपिगपिंरावभवच हस्सवर्गविवर्गचनानावर्गचकारिणा हीना
धिकंचाकनपंपनपेनानाधिधिसूयाद्विपुंगजपुष्टंचवज्जकाकपदंरथा स्यामदसंचपीरंच
हिन्नज्जुनिकंरथा नरत्सर्वेतिनीअनेपवीआनरुकावयत्त ससमावद्धादरासिथि
लपांशुमथपिवा मक्तिवमसाधयत्तुपकनंतस्यलज्जयत्त दकिताहिमूखववन्नघुरगाघ्र
यत्तुकिनेमस्यांचवरावर्गहीनंचवायव्यमन्तुदत्तं उरुवाहिमूखववन्नघुरगाघ्र
द्विद आद्यातीवृक्षमवीचआरंनयास्यापेहावकं चोवश्चाधामूखंचवस्त्रीघातीउन्मूखस्ति
पार्श्वपतकिचाकुलंविहृगापाउलज्जयत्त नरत्सर्वेतिनीअनेपवीआनरुकावयत्त ससमावद्धादरासिथि

चिमकसिद्धिचक्रकलं आनिपूष्टिलुपंचमयन्वक्तुं हेतुकां ह्यं सफललुक्तुवेधकं नृदखलं
 द्वावर्जसिद्धिमाधकानि कलं नृकाशमंतववकादि (अप) जडियाहवत जि (अ) नृवेधकं
 विहयाचक्र (अ) नृसदया श्री (अ) नृवद (अ) नृवावर्जयीयाविचक्रन ४ स्त्रीकपालनग
 द्वायोक्तुं कसवि (अ) नृवद ४ हीनदत्ताविदनाश्रुश्रुकाचनृहासव नृमदकवदृकीं
 कलिनाचपदनच विपूदनहवदिनगजपृष्ट्याधिजं कथा कामध्वन ४ चक्र ४ विमम
 अद (अ) नृदृष्टा नृ पूर्वस्माद्वयानिश्चाचिनामनिमिहिसरं नृनृकलुक्तुवर्धुं नृनिग
 चावर्धनं सिद्धिदं सर्वमेकानां माधकसिद्धिमाप्नुयात् पीतवर्धुं नृदृष्टपंपनरंपमलां

七七

नं वृक्षसुपोदिकपाकं धनसम्पत्तिरिति अकवर्गं यत्पातं अथ वानकविभुलादिगं व
यथा कृत्स्नमहाकालसिद्धिदं पातं जगतां गामखसादिकादिश्च सृष्टमककाहवर्गमात्रम्
चाकतविषयप्रशक्तुविशेषकर विषयं पातं संपातं सर्वकामफलपदं यत्साधकोदिवि
षी० ऊर्जचपर्वक तुल्यजगत्संपूर्णं गृहीयात्सिद्धिप्राप्तकर ॥ १ ॥ सादरगवात्सामिवज
जगत्सुधागतं सर्ववीवरसमाशोभाद्वजसत्त० पर्वसत्त० ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
कल्पमहाकुरुवाजपाकतिर्नयमं विधातात्पादितजगत्तद्वाटसपटल० ॥ ११ ॥
अथान्यं महार्थं वज्रकलातातां हृदयं दगदयनविष्णुमात्रं यथागितिसिद्धिमूर्त्तमां

स्थातु स्वमतिथागिना ४ कूमस्य कूममिस्त्रयं सर्वकालप्रसफाचज्मशकस्येवमहागुह्यं। एवं वा
 बाहिनामचविहयासखदायकं आस्यपेसुलितं कथं पश्येत्सगहं सनातनं त्वागं हागं मरुद्वयं
 गीतवोद्यं मसफकं स्योवस्तुहमहो श्रय्यादिगन्धकं मतं प्रियदर्शनमातादिगुंदमिहं।
 कुवास्तकं वृद्धपजादिसर्वप्रपिवेत्तिस्त्रपातया नानास्त्रातमागत्वा दुस्रं विन्दन्किचा
 त्मनां गमं द्विदशोधिकं चतिवृत्तिर्दृश्यते कुवां उद्यानं वापिकातीनविष्णुर्नगमनादिना
 रुफिहाजतः २२ वृद्धगुनूवाकं सहास्रं नवताविष्णुं गमाहास्यवास्यक्रियाचया पवि
 ताताकुसंतासा २३ वृद्धवत्तुजकवां वृद्धधर्मचसंघेचपूजतावन्दनादिनां गुनूगोमवता

१४

तामो र्खंदकिं न चाना ॥ १ ॥ पथादिधर्मेषु प्रवृत्तिः सर्वकामया विधं सतं वादिनां
च वृद्धधर्मेषु स्थापनं यागिनीपातकाश्च कुरुवस्त्रालंकारलह्यादयः हाजनादुर्धमसत्ता यद्विधि
यमलनात्मजः दानादिपात्रमितानां कर्मनां सोख्यमिख्यतां मेधीमदिताकवर्गो मपका
मपकासर्वोपकः ह्यनविहृतयद्वचमध्यमेन यस्थापनात् आस्वाप्तदानमर्चयन्मप
वादेविवानभात् द्वाकृगलकर्मोपापस्वाध्यायकापनात् वेधिमारोनिखर्गस्यवीना
चाद्वयदर्शनात् कायानिलपुङ्गवपूगामयमतिवासितां ॥ २ ॥ अवावस्थाभक्तकुरुद्वितीया
कथमचिच वृद्धपूवंगतामोख्यं पनेमार्थेषु दीपनासिद्धकथाहुग्रात्तापेयागिनीनाकुरुवा

सुतं धर्मसंस्तुतमहाथेषु कालसंस्तुतुहावकं यजतिऽपराधसंस्तुगता बोधनामकं मायासंस्तुपदा
थेषु मस्य नादिकर्मभागुरं पिरुपुत्रागतानास्तु कस्यावादिगमनास्मकं कुभस्तुधपविद्यामस
नस्तुधस्तुत्यादनं पूनर्मागति संसाववज्जवागदि कल्पवांकल्पिकांवचनंगुक्रसाकामकल्पिकां
वमः ॥ ८ ॥ दियोनामवेथ्यस्तुहाववांश्चकषुचासहजसंस्तुगतिस्मोक्षधर्मकायधर्मध्वं संस्तुजा
गुशादुसर्वास्मासकायकृवांश्चकषुचासहजसंस्तुगतिस्मोक्षधर्मकायधर्मध्वं संस्तुजा
जंशोल्यांश्चकषुचासहजसंस्तुगतिस्मोक्षधर्मकायधर्मध्वं संस्तुजा
कस्तुलनं सर्ववृद्धगुणमपाप्पपनिधनऽहलाऽस्यं नवंचशोल्यावस्ताहिऽवागिंकोच

महाकुं रुमायावस्मा सोख्यं च धाऊमनन्दकल्पना धाऊषाऊमविरुया सहावजानि
नंरुं ओषधिचकुविरुया रुकिताऽमरुपावगाऽ पमिनीसंखिनीचिनीहस्तनीहंगना
या चकीवडीपुपलंकन्दिनीपूङ्गजाविकाऽ वलाभाताकुलसचपाभचचन्दनार्कजां
वक्राचैवसर्पाकिंकारुयाववमहोषधीं सोख्यंदातन्दकालकुसूयादिकवर्षाऊमरु स
वक्षान्कृष्टिया रोमत्यं हावनायाऊमनगां चतुर्थवस्त्रावकुनश्रुसंख्याचमानवां ग
रुकिच्यवकिचैववतकिघर्मनस्तथा यथास्थिवतिश्रुचलमिडवकिनवच रोमर्थाया
द्वयागित्यऽश्रुवस्त्रासूखरुता ज्वंचविधावऽस्त्रावावाक्राकल्पसंगितां सम्पकस्मति

यदक्षयवर्गस्य कस्यस्य संवत्सराया मयस्मिन्वायागिनीनां पञ्चावतु मनुसहावपागाभा
 लविता मध्यमबुल ओवर्द्धजरास्वाननककोकसातायउक ईकोईगाहयद ईफ ईंत्वाटट
 द्वाहा ०० किमपु किंमसकं मकुपुष्यपोयसिद्धिदं वकवर्द्धमहाबोद (ओषखवुवाहाः
 यदुआखाटंककैरवगु स्वाधिकावपवर्द्धकां उपधीपनिवासिचसेवास्वस्वस्य ऊरुजांव
 सकर्मपदविभुदवाणुमादिमकुवित पंचामतासाहादीपपूजाचसेवकर्मका द्वादप
 यासमाकष्यश्रमसर्वसंधिजां समोधिजालमापूर्यपुलास्ववलीनता रात्रावृद्धत्वमा
 प्राणिना तानि प्योदिजकक ४ स्वस्वहावयाधर्मचदेशयस्वागाकजां सूत्रवगु ०००

८०

गुमठिअ. सहजसहा ननु सभा पशु संमानद २४ खनकाजिय सुमान्द वद हजना
कृथाक २ संपवजामिपे चामु नस्य साधने येन सस्यगीधाने सर्वसिद्धिदलीदयं वासुधा
गर्भसंजागरुद्रयद्विधिगोपितं तस्माद्वलाचनं नाम परब्यातासिद्धि संमता ४ स्यामवर्त्तु
सुखदाजि कृष्णानकलाचनं ४ तस्मान्न कूलीपाफा साधयत्तु दगापिच संपूर्ण शोकगम
कुंभु सोहागीरुवक्षपमिनी खाद्यपाभन संपूर्ण धर्मदत्ता विचकुम्भु तत्कृष्ण कून्डवकार्यं नृ
न्यातंगु कुरुशरुयत् तस्मान्न कूलं नाम परब्यायिता वस्तु अरागा ४ पूर्वाकचविधानेन सं
पूर्व सिद्धिजायत अष्टिपुष्पप्रसक्त स्यादाजकीर्त्तिप्रकीर्त्तिता समयीयदि स्यात्तु मातं

नि सर्वेयत्तदा मान्ममत्स्यात्तथावर्कं शाहयस्मविचक्रवाः पंचाक्षरायथापाफंरुतसंश्रुत
 सिद्धाच्यत यदि संपाद्य संश्रुतं साधकसिद्धिकोक्तिः ॥ एतौ मां संरुय मां संच हस्ति मां
 नथेवच नवमानं कृत्वा मान्मसं संश्रुतं विचक्रवाः पंचपदीपमाख्यातं वज्रसत्त्ववचं
 था दशमीपंचमिपाफंरुतदस्तु समीलयंत सगंधानि शिखंरं श्रं व हस्य नडु कानथं
 गुठिकां कानयत्तं न्यक साधयत्तं गमपिकं रत्नं ॥ नडु संपदं रत्नानपातं विलासकं ॥ ग
 धामध्यपुतिरुपपत्तं कर्म समा लहत मज्जुजायं तथा ध्यानं सर्वकर्म फलदायं वसाय
 नं सर्वविदस्य सिद्धिदं वनभाभूच गुठिकां सबयत्ति स्यं सर्वकाम फलपदं सर्वकर्मपथाग

षष्ठिस्तुतुल्यचरीपदं ॥ १६ ॥ अथ हस्तवाक्स्वामिवज्रवाग्राहीनायकी सर्वथागसमाचारवज्रस
 त्वमेवापदं ॥ १७ ॥ अथिणीवज्रवाग्राहीकल्पमहाकुरुगजपंचामरसाधनमनुला
 चकावतादिप्रयादण्डपटल ॥ १८ ॥ अथान्यगः कालास्यादुक्थकल्पविक्रमं प्रवृत्ति
 सर्वसत्त्वार्थवृत्तिरुक्तकल्पमुक्तिः ॥ १९ ॥ कागास्याकर्मकर्मसूत्रसंनिधिदाननं कालिवज्रमः
 र्वाप्तुमिच्छुवत्सर्वगामिनी वाधिचिरुमहानंदोक्तकाले ॥ २० ॥ अथकदमि कल्पसं सर्वभागादि
 हृष्यामीकमनऊर्वा यथाहुषधीदविगर्हायत्यादलेऊर्वां पृथमंकाकवधीऊर्वापतिकंमाऊ
 पयकं अकवागिषूदनपश्चात्तुल्यसंतिहं मासमर्कस्तिरुत्वाहुत्वातहस्याहु सर्वचनाह

सूक्तप्रवृत्तसालासादादित्यनिधिधामनाम् इतीवासमर्गपञ्चाद्विस्तीर्णकर्मस्पर्धनात् स
थनीवाध्वज्जगामात्सर्वसिद्धिफलदायकं समग्रगण्यमवतस्तु क्रुत्यादशमस्युदित पुत्र
हि सर्वसद्भावान्चान्निर्विकृतज्ञानेभ्यश्च वा द्विपदचतुष्टयदादिनां श्रौत्यामाज्ज विक्रयकी
निज्ञाहिज्जगत्तिसंदर्शनस्यर्धेनविच वक्रकर्णमहाबोडीषांकावसन्तिहं वज्रमशुल
माध्वकुपक्षपायसूत्रपिकिं सिंहस्थावहा मकवासपदीपनिवासिनी मन्त्रालिकादुदवी
नांस्वस्वकृणयकुक्षिणी ओं वंदे जं जं साककगनालास्यायथ मूर्ध्नि हं हिदुर्गमहयनहं वा
हं हाहं जं हं हाहा हं हिस्फदिग्भस्मकं नायकीवज्रवागाही मशुलसूत्रनायासुहावि

हाथागमातमी सूक्ष्मदर्पमहापाषाणप्रतिष्ठा स्थानिष्ठ काष्ठासूक्ष्मदर्पपाषाणीलकानिष्ठः
रामपयत हाकिंमहापाषाणसूक्ष्मदर्पपाषाणार्थतः चयादृष्टागिकंदावंनाहिपमंडुतसमं
हिहागिकं चतुर्हयंकार्थिकादलेपाषाणार्थतः तद्वहावांदिचक्रं मसलेतुचक्रमगं नलिहागिकं
माल्यं चवजपमंडुचक्रं आलेचक्रं मध्यचक्रं होनाद्वकं तुस्तुलकं तस्मानिस्सर्वतादयोदष्ट
लुकिषूचक्रं कामगं गुणं जिवागानिर्यहाद्वानेहागिकं तद्वर्धनवादिवाहिरकपालपञ्चक
सूक्ष्म धावतिपत्रिकासूक्ष्मनलहागार्धपट्टिका कमगोर्ध्वलुतद्वर्धनश्रुद्वारीपत्रिकासूक्ष्म सु
स्फुटनिर्गतासूचिंविश्ववर्जमयार्थं किंकिनीजालवर्धनपटाकाद्यलनादिनं तद्योक्तं

[illegible]

चामुतादिद्वयेश्च सक्तर्षयवाक्कादिकान् निविष्टं हनत संस्य कृपश्च कर्म समालोक्य नानादि
र्ष्यक मूलाद्वी सफुडिं भानुपिका कर्मवज्जीविता विनासे माधिर्यथा गवान् दामफुडि कर्मा
डांचेन भयादादौ र्यनाः मूले मूलं जाना स्या नवनं वतिष्ठद्विपार्थे याः कथोपनि संफुडि पं
चदिकं दुस्तुपयत् दक्षिण स्थाने रासाय माजी लं व्याघ्रसिंहकं हीमंच दक्षिण वंग खनं चैव य
थाक्रमं वास महिवासी वक दुयो मकवा भषः गणुश्च मूत्रजं च यथाक्रमं पूल कृतं श्रीहिना
लकृक मंडुडाद मखे कपि हल्लुकाः गनूत गदका कस्तुल कवक भतकं महामजी चक्रवाकं मय
नता मुचूतकं पावा वरत मुसवेषां स्त्रहा ववर्धु मिष्यतां मगुल स्पुड कृत्वा वेस्त्रहा वं यम्य धा रुषू

सफलिंशुद्धा न्माचपुष्पकयसंविधायकं तथापि विविचमूखां गतिं वाधि कृत्वा त्मनां च न
रुषू रूतुदं च न्माकाक वं द्विमेधगां दक्षिण विष्णुदं च वक्रादिसुवद्विकं ॥ ७७ ॥
वायुश्च तैमश्वधनदसुयथाक्रमं वामयमश्च कामश्च चन्द्रवन्धवाभुक्तिः मदती गद्यपे
ति सुकोकयचक्रवर्तिनं नवं मष्टादशकानं स्वसाजाहुगमकुक्कं धार्यमानं स्वचिह्नन
द्व्याचनभावजह्वक दक्षिणसमुद्रदं च वज्रासिकुक्कमूलकं पवनशुवाहिनवाधंगूल
हिनसुमज्जनं चक्रमनकूलिवाहलुंचहिनिपातकं सर्वानंकदगुजामयुवपिष्टिका
तथा काकोपजचविवाचमृत्तिकुशीलुपर्वकं लगुहादप्येधवीधगुल्फपाणि सुदु

रुग्ं अशुलावाशुनिर्गलुरुति इरुषंजालिका कवधंहालकलंचरुवववपंडुकमारु
वाभघमोषटदकंमृषलपोषकपालकं धनखद्वज्जपुस्तमुपितानिगर्जनीवच दूय
वमालागुखलासमभानेधपिवां हाकंरुकाउच्चमंचसंदिहश्चथानिका वादनविहिक्क
चीत्तसिलाहसिरुमस्तकं ककानदगुकाचेवनकवकगुनवरुकां भानिश्चनकीलकच
वाजपुर्वकानपुच सचिठकायकमंचमघद्विहृज्जासिकं पुवंकमरुविहृयादासफति
रुक्कवाजिका द्यधिरुषकवांरुदकिचमोववधकार रुधुकांराजावधंहाद्विनाविधुभा
शिकः सर्ववर्गुस्वहावाकुअथवानायकिवर्गुवर्ग मरुमालादिसर्वचवकुहनगविमान

यत्तु एवं सम्यग्वायामेव विरूपायुक्तिविस्मया संयक्तस्मृतिस्वरूपमहावयवद्विपदायकं
तावेदिविधमाख्यातं गवीरं च ध्यात्वापि उद्भवनासिद्धाद्येन च द्रव्यमकामानरु आयनं
न सूर्यस्य अवधतिवाक्यमाह यं कावंसूचि कुरु मत्तावं मध्यवाहिनी दद्यावं दक्षिणादशा
तावद्वहति मध्यमे अजावास्ति मा प्रातिवचनाकाशगामिनी नंती सर्वसूखात्मानं ता
जीकावरुसंक्षिप्तं समुदायाकुर्वं पंचमनुल्लस्य च सूचनात् उष्णवात्स्वयं पद्मविशाका
ल्लस्य च चनात् उक्तमकपूरं चैव पीतादिममनादिकां मृत्तनामविकल्पायं नीयतस्वच
वीपद वस्तुदेयं ह्यद्वयवायिकं हाचिंतयथा चिंत्तायुधं ह्यवस्थादिवावाहिकुयथा क

[illegible]

चिरुमिष आदिहिद्विभक्तनचरुममलमालिखत पविकल्पितरुतागानकूर्योखवनना
दिकं हसुंदत्ताजपलकुंइंजानरुमिरभधकं मनुलरुमिरागस्यद्विगुहांरुमिसाधयत
सेवशुकिरेवचथिवीस्वचिरुपनिद्विगुं दत्तात्मकमाचार्यसर्ववृद्धात्ममूर्द्धिर वजघ
काधवावीशमूरधमजकितीसरु वजमल्लालयधीमांघळावादनोत्परां उरुदयलुइ
ह्याशामद्वामनगुक्कान अयंसनंकुइह्याविघ्राथकचित्काटपूटना अयंकवृद्धमवलथी
मानननगाचक्रपयाजनं वजभदीफवपुषास्त्रालशामिहिकायजां लघयययकचित्म
विभीर्यदन्यतान्यथा रुमिपविगुहंरुतागोमांषाकाववन्धयत पयिगीवंकानजायीतांक

८३

नरकालनधविशी प्रतिस्पदडिखारुसमुक्तिंकाचुययन अकिरुसमित्वंदवात्रमका
मगुलंलिखन पृष्यधपादिनापृष्यश्रयंदत्ताविचकुमर हगवकाधमवजंमध्यमदुरुध
गकं ॐसुमितिलिखितंताथमगुलंमरुजादये शिष्यानामनृकंपार्थयुष्माकंपूजनायच न
भरुकस्पहगवन्यसादंकुरुमरुसि समन्वाहनरुसंववाश्यचान्यमेकदवकाः दवगा
लाकपालोश्चरुतासंधाधिसामिताः सोसनाहिनकाःसर्वेयकचिद्वजचक्रपाः अनूक
प्यामपादायसगिष्यचनरुमम मगुलंचलिखद्यानिवजवाहाहिसुरुम पंचसतान्चिनेम
पंचविंशतिरुदिनं वलयसुखनभान्यंमेवधर्मस्यरावकः इकावाचोवयशागिपंचामरुन

लपितं चक्रं दिगुक्षितादायेन विंशतिरागिकं किञ्चिज्जाने मूर्च्छायै नाहो धार्यन्ति मूर्च्छिता
यस्मिन्पातयद्दीप्तां रात्रेण यत्पुस्तकं नवनसूतियुक्तं सप्रमाणं नवानुवा सप्तशतं
यन्मार्गं शीतलजादयमभुक्तं अर्द्धहस्तासेमा वसुधातुसंख्यावत् एवमं बुद्धेः सप्तशतं दिगुक्षितं
काशसेवकं पश्चिमदिक्काशानां नियमं गुणसंस्कारं पूर्वोक्तदिक्काशानां नियमं दिक्काशसमा
हितं आदौ चतुर्गुणं नवनसूतये देवकाष्टका रक्तोद्गुणं गुणानां नवनकाष्टमकं पुस्तकं
यन्वनसूतगुणकाष्टकाष्टमकं पुस्तकं रक्तश्च दिगुक्षितेन देवकाष्टमकं पुस्तकं रक्तं
चतुर्गुणमात्रं नवनकाष्टं पुस्तकं पुनर्दिगुक्षितमात्रं नवनकाष्टमकं पुस्तकं रक्तो चतुर्गु

४। सामानतकाष्टं सुगुणयुक्तं ४ ॥ ४४ ॥ चतुर्गुणानेव काष्ठभक्तं विश्वं ४ ॥ ४५ ॥ विपुलं
स्वां नृसिंहासुलसुक्तं सुगुणिकश्चतुर्गुणमनुलसुक्तं ४ ॥ ४६ ॥ आचक्रवाठपर्यन्तं
यद्विधिनादितं पंचनक्षत्रमथैपुनरुक्तं वाक्यमुल्लादिभिः ४ ॥ ४७ ॥ स्वर्गपीतं कथात्रकं रुनिर्गुणं
मन्त्रं च ४ ॥ ४८ ॥ नादिदिग्भागाश्चाचार्य्यवासमादिना पाकयस्य च लब्धं च सुगुणं न समादि
तं ४ ॥ ४९ ॥ यावन्मात्राकननयापाकनीयात्यनस्य च सुलमात्राद्याधिकं भयाधनेनाभनं च
कुण्डलं रुच्येव दिन्यासस्य संकृतं ४ ॥ ५० ॥ पूर्वन्तु महास्वर्गं दक्षिणपीतं संनिर्गुणं लाहिकं प
श्चिमं रुगं मन्त्रं मातृवसंयुक्तं मध्यं मातृसिंहागुरुं ४ ॥ ५१ ॥ दक्षिणपीतं पुरास्वनं काशं रुगं पुरा

रं वृद्धावनिर्गृहसंविम् खचिगंवज्रमले सुसंलिखत्समसाहितं वज्रपंजलमध्वकुम्भ
 भनोदककृषिं चतुश्चाकूलश्चैव वज्रज्जालाकलंकितः विहाय प्रदीदिदृक्वा
 मावृत्तसंस्थितः श्रद्धासमनेनान्यालम्बावल्लभासनं धामाश्चैवावनेमशां चोय
 व्याकिलिकिलोलजर पूर्वोक्षीषप्रभृत्कंकालिचूगहजविहायनः वटकावजकले
 चलदापर्कतिपाथितं हृद्यधनदशैव नागदशधनाधिमः जुगन्तमथ इतासनना
 ऊमन्तानिलाधियः वासुकिगजकाश्चैव कर्कोटपद्मवच महापद्मकूलहलदकलीक
 मंखपालका गार्जना धूमिनाधानावर्जधनवच पद्माशक्तधनवच वीरुमध्या

८८

विष्णुः श्रुतं विविधैका कालं कुरुषुः श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं
व्याघ्रमृगशार्ङ्गि सूर्यसामुद्रसुखं हविचमवकां कंकालकूलहिन्नालभ्या ईदुर्यः
निबरं गोपालजातकवधहाउमृकुर्वन्धनातिहीषमनि श्रुतकसिद्धविमाधनेऽसमयाचा
वयागशागिनीगोः यजुर्वतानवाकुसादिहिरमंहाकिलिकिलयमानानिमहासिद्धिनिद्धि संप
फरश्रुताचार्यगशमभानमध्वद्वयः ॥ १ ॥ ह्यारुहंगवान्वाभी वज्रवागहिनायकी सर्वश
गमहावीनरवजसत्तः सुखात्यं ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
सुखात्यं नव्यवक्तात्यं लज्जामश्रुतं पठलः ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

[illegible]

धं ह्यसफतिवतकमात रुस्माच्चदतिनीद्वोहावयत्तुलात्मकां यस्मिन्नादिस्यपात्रात्तस्मिन्वा
ह्यपादिसंभवं उर्द्धहावापर्वमलंचस्मासंकृत्वाकुगुफकां सर्वेष्वचसर्वसंधिः प्रमयंजावक
टं मम्मैवश्चस्मान्नसंभवंमकारंमचिं श्रीधर्माद्ययकं कलागीववैद्विरूपं कलत्त वा
गमनिचवद्रूपायाविनस्यत्तिकर्मसंभवं दातंदापयद्रूपमहिमादियातकं वाधिसिद्धिमा
ह्यकुसुन्देमीधं पिचक्रुतः भाजिकं चपिचक्रुत्तमासकं चपिचक्रुत्त रुद्रयत्तोरजाकुसुमं मम
कंद्रुत्तवादि कं यद्विष्णोमहावकं संग्रामचपतिस्त्रयं पितृसकयावज्जन्मिन्मन्त्रस्यापिहवत्
श्रुत्वाहस्यात्तयचपंयावद्विष्टुजयंगतः जीवहिंनकृतसोत्तं श्रुत्वाहोभवत्तानिच संव

ऊवमु१ संशु शुमात्मानं सर्वं जालं ॥ स्थानं च तापं यद्गुह्यं अग्निना स इमा च सक्त उद्भाट
 जं पि चारु आहारं स्वल्पं स्वल्पं ॥ हावयश्च स इतीह स फेकिं गोम स का स्वयं मर्तुं संप्रदयाग
 त्मा पीतं गुरुदिवर्कं पीतं नक्तं मर्तुं मृश्वकं नवसमानयत् ॥ सहजं संवाधिरावयना
 न्यध्याक ॥ कालगम ॥ मिलन्यन्या न्यनं ॥ ध्येयं नृनां पाठमन्त्रं ॥ तस्मात्तत्तद्वक्तृ
 यंच संशु श्रवणां संजनां हृदयाच्छ्रुमध्वं नश्चिद् ॥ मर्तुं लंपर्वहागिकं दवर्गवर्गं पूर्व
 क्वादिने पिभीयत् ॥ औवपजवयशु सपाइवा कीययत् ॥ इहं इहं लेहं पृषदा स्वाज्ज हाधा वि
 (हाइं इहं इहं इहं स्वाहा ॥) ॥ निषहपायात्मकं महा माया स्वप्नीकां सर्वं वा यागिनीना

कुम्भमन्त्रं यथावयत्त मन्त्रं हृदयस्थं च सर्वचक्रं विहावयत्त मन्त्रं हृदयस्थं नाम शशुङ्ग
कर्मसंवेष्टिकाः पुक्तिनेष्टा हृदयपुक्तिनेष्टा अपि नास्तिकां हवयत्त मन्त्रं यथावयत्त मन्त्रं हृदयस्थं
चामन्त्रं सयं रुता पिवन्धजागता चापि मन्त्रं सयं रुता मन्त्रं हृदयस्थं नाम किं कुरु कुरु वत्स
माप्नुयात् कस्यायमयत्त हृदयस्थं सयं रुता मन्त्रं हृदयस्थं नाम किं कुरु कुरु वत्स
उक्तं यथावयत्त सर्वविधिधर्मं नाम उक्तं यथावयत्त सर्वविधिधर्मं नाम उक्तं यथावयत्त
कं हावयत्त उक्तं यथावयत्त उक्तं यथावयत्त उक्तं यथावयत्त उक्तं यथावयत्त उक्तं यथावयत्त
त्किंचिन्पुविष्टं सयं रुता मन्त्रं हृदयस्थं नाम किं कुरु कुरु वत्स

उक्तं यथावयत्त

ॐ ह्रस्वसिद्धिः ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ निपायन
पुनः ॐ ह्रस्व तद्विषयं सप्तपञ्चाशत्तमस्य दक्षिणमध्यकां श्रुत्यामचवत्तम इति वपुनर्यस्य कुर्वन्त
त इति पञ्चदशहंसं श्रुत्वा गोचरे पदं पुनर्वपुः प्रकाशयन्तु यद्वद्विमान किंवद्व्या
श्रुत्वा सक्तु नदानपावसितादिका चावाही पञ्चतन्त्रे चावाही गणेशाय नमः ॥ श्रुत्वा सक्तु नदानपावसितादिका
मयकेन पूर्वदापयन्तु ॥ श्रुत्वा सक्तु नदानपावसितादिका चावाही पञ्चतन्त्रे चावाही गणेशाय नमः ॥ श्रुत्वा सक्तु नदानपावसितादिका
सर्वसत्त्वस्य पदं मक्तुक्तु पञ्चाशत्तमस्य दक्षिणमध्यकां श्रुत्यामचवत्तम इति वपुनर्यस्य कुर्वन्त
पुनर्वपुः प्रकाशयन्तु यद्वद्विमान किंवद्व्या

सा समताचिरुमडाकुमत्वातांताथरुतकं८ प्रतासयवि^चअंघ्रनाथिनदुवाभवर८ ॐति
पदरुसंप^{रु}पियदर्शननपवान अहिषकार्थमत्त^{रु}रुदताकगु^{रु}भादधि८ पी०भवासेदा
निसंआचार्यमहिधीयत आचार्यभाषिष्यसंयासककलितोधर्मउत्सवर८ नि८कपंकाधनं
कुर्यतेचलधुमसंयुत८ अतिम^{रु}वाक^{रु}थवश्चमनमुभिचनिर्दय८ पवदयाहिलोदुवज
पकुबूभासेदा धीवाविनीतामहिमांऊमावाताऊनाभा० दकाकभालपरीत्यागीसत्यातां
पियदर्शन८ नस्प^{रु}भात्यवदयंचकालिताग्निविषादित्त गुनपजासदानिसंसद्वर्मेद
र्शनात्सवं दानादिहिरतानिसंपवलाकाहिकांदि८८ रुषांतिष्यपेभस्कृपदीअयत्सभु

लंभुहं कृतांजलिपूजं कृत्वा अध्वर्युः कमानसः स्वभग्नं त्वा महावीर्यानिनीववसं
पठ ॥ इत्युक्तं महानाथ महावाचि वर्यं दृष्टं दहि मम संयतं त्वं वाधिचिरं च दहि भावी
ववीर्यं श्रीशं च वा वाहि दनं कस्य च गुह्यं पीठं दिवं भुवि कथया ददमं हिनं ब्रह्मधर्म
च संघं च दहि मम भक्तं कथं पुत्रं भाग्यं स्वमां नाथ महाभाऊ पूर्ववत् नं उरिवत्स महायान
मरुचं यो नयां विधिं दद्यापि प्यासि कं सत्यं कस्तु जतस्त्वं महा नथ संपा फा ह्यत मकुलं व
क्रमकृपण वने ४ तस्मान्म किमिमां वत्स के वृत्तं सर्वं रूपं फथे गुणं प्रजा तथा मदी वृद्ध रक्तिं
ऊनप्रिय मत्तापहिं पवित्रं कस्तु तापहिं विवर्जं यत् सत्त्वा स्यान्ना धनं कार्यं हीनयानं

नसवयत् अतीर्ह स्तानयिष्यामिन्मूकमाचयामहं अम्भसयिष्यामिस्तानां संस
वश्चस्वसोनात् नस्योभिष्यसमायुक्तं भिष्याक्षं च धिवा सयेत् देशादिदंतकोष्ठं च
चिमातादिविधिर्मेतां नैकसूत्रं सदानेकावाहं विवाविषावनेर धीरकारमरुसंयुक्तं
कृतांतस्यप्रदापयत् कायवास्त्रिह सर्वनंदशाशुराशुरं स्वप्नकसर्वनिरीकयत् मधुलंष
वशयकृतेयकांधपठवद्विनां पूष्यपकासंगक दकुभां सहसंयुक्तं पूर्वजन्मादिपापस्यति
वीषमलुलदर्शं कस्तुंशं इतिपेदं स्मृतागोहं इतिउकवान् समयादेकपथंचमधुलप
प्यकपनं यशस्यं पतिकरुत कस्तुलंरुविष्यति उक्तमकूटं वज्रघ्नातासाहिषककं पं

चरुथायतासिकं भाषं वक्तव्यं कवनामवच श्रुतं ह्यस्मात्सर्वे वस्तु दद्यात्कलमसंज्ञानं ॐ
 रुपींश्च विद्यादिवज्जयन्मादिसंयतं आचार्याहिषकसंपर्कं द्वितीयं गुणं मूर्ध्नि पुरोक्षनं
 मूर्ध्नि यत्तु च कुर्येदं पत्तस्तथा एताहिषकसंपन्नासमयासां विधीयते दृष्ट्वापुनरिहा समर्थेन
 हस्त्याक्रममगुलं सर्वपापैर्विनिर्मलं हवन्काशे वसस्त्रिगुणं श्रुयंचतानं वज्रादिभिश्च समय
 संवरे सर्ववृद्धे समं प्राक्काश्यापयमभास्तनि प्रक्षिपत्यगुनां क्षिप्यश्च वज्रांस्तु विसर्जं व
 यादवं कविष्यामि यथा ह्यपयसि विहाः ४ कुरुकुगुवद्वत्तान्तागता कदकिनां नानालं
 कावक्कुशील्वसवीनंच विहायतः पुरर्षिना वदद्वं मूर्तः ४ दृष्ट्वापुनर्यत्तु ल्यथाहिषक

लारुनक्राकशामहायन अथमसद्वलंजमसद्वलंजीविकचम अथवृद्धकृतज्ञाभाबृद्ध
पञ्चासिमांशतं हामंचपवयस्कृदद्यात्संप्रयसाजनं गङ्गाचक्रांततादयादीनात्ताथंचनपय
न गथापदेनाकपथासमयाचावकत्यवा हाजनकमिसकातेचक्रादिहावताक्रमे संस
मगमसंपन्नासिद्धिरुचिनात्यथा ॐ हं हं हं हं गवात्वासिचक्रवागाहिनायवी सर्वजीन
ॐ ममायागाद्यजसत्वरपवसूवं ॥३॥ ॐ किं श्रीचक्रवागाहिनायवी महाकृतवाजं अत्रि
धर्मात्यहि मृदुर्वचनादिचक्रवावतापदभांचपंचदशापटल ॐ अथाकृष्टसंप
वद्यमिकाथागृहसांपतं सत्तानांवासनंदावाद्यंदास्यनियंजवं सायंनर्तपुष्पवी

नक्तकालवधकर्मकर बहुवाशीतिधर्माधियककस्तिनाक्षिच उषमध्यकार्येचनिभुहाम
 धमलेकमं अशुहामसुसंदहामर्मवधकुलकयम उवास्तिंयदिका लकुविध्यकिना
 लकाकयं तथाहकनदाविश्यामीयकनाकसंभयकर यादकसमालकांविद्यायदिनाहिच
 विध्यकि दिनायाहुरुवधवीमवगंऊकुवेषच दिवापादसमालकायदिचक्रुपिविध्य ५४
 कि तदासासुयनापिरुतुकासवसंकराकरपादसमालकांविद्यानासिकांयदिविध्यकिः
 तथाहंनरुवेल्लसुवधुपिनास्ति संभयर कृद्विपुत्रावकालकुसंरुसक्तिरुवयति तथा
 नवकुवलायांवर्धनीमीयकधुवं पूर्वोक्तपंचवासनंमध्यमद्वगकंरुथा अपवाइंपऊककु

अर्द्धशतं रुमासकं एकस्मिन्नेव काले ननु हंदि कायायदि पूर्ववत् कालनियमनजीवेहवकना
कर्मभायः किंवागदर्थनंदवीक्याहमनंकरः अत्र नागताविध्यं नुमस्यमांसचतुष्टयं न
मंचरुषिपुस्तविपयमननुदर्शनं सफाहनतदामुक्तं कथितं पूर्वजन्मनि शुक्रपतिपदा
नित्यं शुक्रं येशमितं वक्तुं यथाभ्यनरस्यं नृस्यं च वागायत्वादि बंधुवं संयाताहगालिज
षहंदि नृस्यं वक्ष्यते येदि नृवक्ष्यदायाकि पंचमासमेव च यन्ना नादंतिमिहं मक
हंयास्या नृस्यं पंचमासमेव संभायः यदि भक्तारुचदन एकस्मिन्नेव काले ननु यदिच
नुदिवाक्यो विधेयनियमस्य मासमेव संजीवति हस्तचक्रं चतुस्रं नानां कटि

व्याकुलं अकण्विध्वत्तमस्य सकंविध्वत्तुं याचककथनविध्वत्तिपदिसामर्थ्यरुतगठ चन
धमस्तु सूर्यावर्तनकनां दुवकायं गंधीवाजीवनयाचदपहनसहाहका वटमासनरुदा
मरुतयदिनदसमाकृतं इन्द्रदिमध्यं तथा सर्वभाषायिककलागोचरं विपकेन हवःसु
रुं नोक्तविचोनागचेलं पुनर्विध्वत्तिगीर्वाणं दक्षतादिपूजागुर्वरं सशक्तवर्षिणी
नीयोक्तथिगंधीनीनमंजुर्व कर्तुमलतथाविध्वत्तमशासकविनिर्दिष्टात गुप्तमध्यचनथा
विध्वत्तुत्तमसमवकावत नोभाणुदुतव वायुगीरुलेजीपमंचतवधेनं सन्दसन्दग
तांसांनोत्तयसर्वेषांस्थिता समर्थविपक्षेतांसांचेवाधिसंलुनंरांचेन नायकंरुमीवजा

पूर्वजायकं नृपवमावधं सर्ववन्धनं दुष्टिनां यदं यस्मिं काले नृपवधे नृसिंवाले ॐ
दंरुचक वधे ४ स्तोत्रं स्फुटं लक्ष्मं मर्दं शय दधामलया विष्णुनामकं लक्ष्मि वसा धावय
सदा नाभे वनाचनं कल मरुनक समन्त्रि नं मय्य वन्निने विष्णु दुवीज मश्रुकु न गद
नावय शानिती नृपयागो र्द्वय महागदा यमदं सच कलु मम ध्याय कल जेधम
दं किं धमयन कायु शदेका वं सर्वे सिद्धिं वन्धुं विध्य कं विद्वान् दण्ड दण्डु रुत जेधात
दल दलायमान कृष्ण वं द्रयोदिकं विष्णु या सर्व संधि च वधेना मश्रुक वंचक ॐ लि
यानि सर्व च वधे यानि स्ये वनिष्ट कि उवं अजु दय पाक र्दुष्टिका वत्य सं ह्या समाधि

[illegible]

नवजकार विंशसर्वगत्यपदकृत्वा गुर्ववाधिगनदु अथान्यगमंवक्त्रमस्फनिर्द्वय
लज्जुगं स्वगवीमचवाक्चनिमिदुंनेजयत्सयीः पादधातालकां यावा हावधमयेदहंव
न यदिवसपगाइ पचत्तंगदुनगदा वाट्टेपठावथाः कालकुल्यकोलवहंदिता रुस्यामवे
हिमलायां मेस्फवर्धनभक्ति रगालिंगसमाधागामध्वगयचहंदितां स्याच्चहंकुल्य
तदामाभं रुवर्धनभक्तिनिश्चिगं दृक्कर्ममध्ययावैध ४ कुल्यकालं यदा रुवर्धन पञ्चकथन
मस्फ ४ स्याद्यदिधनं न सवयन वामाङ्गिपुरुवीद्यायां नवध्वनिद्वय ४ सफाहामयगनन
यदिस्थान्त्रपतिक्रिया कर्ममुत्तुगामध्वनयजागुषवचयन चउरसंधिगतवध ४

सद्यस्मत्कदाह्वयत् अकस्माज्जायतस्फुल्लरुपश्चक्रीहयाकुलः परस्मत्कचर्षेभय
दिधर्मैः सवयत् ह्येक्यदिक्कवत् शुक्लं शुक्लायां पाति पदिरथे अहिमासदामासुक्म
लाहिगं व्याधिसूचकं चक्रीषींशुवत् निसंदेष्टनूपापि विदुमः दर्पोऽहो गलिल चार्थि
सुयांचनपञ्चति वाग्विदेधनपञ्चदिवोत्तज्जुमकुल अमधविशुक्लपञ्चसूत्र
नादकिष्मप्रिताः दिवाद्युयापथं पञ्चइल्कायाः पतनंरथो हंसकाकमयूनाभमवली
द्वयमलकं चतुदयं हि सूर्यं चतुर्भिर्वाक्यं नानाभागान्धर्वनगवंपञ्चद्वजाणि खम
गिरी पञ्चन्युगपिमाचाद्योऽष्टमन्त्र्याश्चलीयवाम् पुकंपतत्रकस्माच्चमृक्तिरचक्री

कुल पश्यद्वयैकशस्त्रसमस्तसोसावधरुवत् कवंकनहितंचन्द्रसूर्यवर्गमिव
किं गङ्गासूर्यदिवाचन्द्रंस्वभेदकलनंतथा तानोभयप्रसाधंचसमृद्धंचनदीमि मरु
पूरीयागुक्कंदुल्यकालंपतकिंवत् एकमंकंरुक्कसूर्यदिधर्मनसंवयत् कदापिदि
वसेपश्यद्वयैकशस्त्रसमस्तसोसावधरुवत् कवंकनहितंचन्द्रसूर्यवर्गमिव
नामोस्याहमपाश्चद्वयैकशस्त्रसमस्तसोसावधरुवत् कवंकनहितंचन्द्रसूर्यवर्गमिव
वामावर्तनविगन्धिच आम्नादित्वंचमृदंचमृदुष्यसममध्यतः वालकाहस्मनां
चविहानयद्विभवच स्वप्नाकयातिनारुकिमवकांरुपर्ववत् गेदेववानभानूदेवात्मीकया

सूत्राणि च यानि प्राक्किल सुप्राक्किल दक्षिणादिभिर्नायकां कृष्णवस्तुना मुखात्तावी कालीकाम
यतिनवर कालबाहिरुमाङ्गयागदुक्तयमदर्शनं श्रुत्वा कगधुरगममायुःश्रुत्वा
पिण्डचक्रं कृत्वा स्वप्नप्रपञ्चद्वारा चैकवर्षाच्च निश्चिन्तं वरु वस्तुपलिफाङ्गं वरु मात्स्या
विरुषं मेला सक्ता यदा स्वप्नप्रपञ्चात् न जीवति यथापदकाय कालिङ्गाय न स
स्वप्नचक्रं कृत्वा न जीवति यदा स्वप्नप्रपञ्चात् न जीवति तस्माच्च संप्रसादिका संप्रसादिकमः
हावमात श्रुत्वा कथापि व्यासि र्मातु नं हावमात न वं सचक्रं प्रवक्तव्या गां गाधयदुक्तमदु
लं नातो निमिरु संप्राफः स्वाभक्तिद्रुतिद्रुति मरुकातलु संप्राफः मरुकातलु

मरुमं नवदामगगंताजीपुनकं नरुपुनकं कुरुकानससुयहानंदावनधुस्यसाधनं
नंचकाननंचनयद्विथपुगानकमावहेक विहनेदमर्गकोथ्यमन्यनपावगामि आ
लिकालिएमायुकंयाजयच्चविचक्रुः॥ इदयइकागसंयाश्चघटजनमपाईकुस्काप
यह वायुवीजंरुदधमसागरदधमसावी वायुवीजद्वयंकारंमंपटीकनयागवान उच्चा
नयघटकुमंमकुमकविंशकिपविकर्म॥ विहनेवायुवृष्टसवायुदावकुचरसा यन
यनहिगरुक्तिमाकुसिद्विपदायकं उरुमाधमरुदनेकाथरुगुगुक्रपा॥ नाहि
कामिकस्वर्गस्यविन्दनानपदरुन॥ उर्ध्वतानपधमकुश्चशुरुहंरंपतिरुदितं यन्कारुव

किमास्तानां चरुणां किं नरा नरा चरुणां यदि गच्छीत नरा चरुणां विषयि वक्रानस्य प्रतातां
 उभयनिर्घेकस्तथा म्रूयाननवक्षं या किमा क्राभंगानि नरा चरुणां उल्काकि कालसंप्राप्ते मजा
 लदेव घाटनं देवता घाटमाश्रयानवकपगतिबधुचं तस्मात्तत्तं चिंद्मनि सयनं कुविचक्र
 ४१४ ॐ निधीवजवावादि कल्पे मस्तु निमिरु मस्तु वंचेतादि प्रयोगावनाम ४१४
 दशपटल ४ ॐ म्रूयानस्य संप्रवक्षामि वादी कल्पे कथं या गिताहि ४ समाप्तं
 चक्षुषा तु पदं ददमा अवनवकिमकलु म्रूयानं पात्रमपुत्रु ४ कीदृहं वृद्धिं साधयस्य
 दं कृव्वजं धृक् ४१४ मायावतामंच म्रूयानं सस्य स्यात्तान् ॐ नृजालं वेददेवा नृयथा

[illegible]

शास्त्रकार्यसूचनात् पयंसमाधिसालस्यसुसमाधिसमानतां तन्त्रैवमहा
प्राज्ञवजापमंचरुद्धक मन्दमन्दगतात्मानास्त्रयंसर्वेषुस्थिता
भयनासांचयाधिसांशुनराचनं तीयकहसोवजा

समर्थविप

१००

[illegible]

[illegible]

ल्यं कल्पयन्नास्ति कल्पको नवकल्पयत् कल्पं कल्पनमूक्तिः स्यादृषिर्नाम सर्वदृष्टिर्हि
यायं तावदुक्तं प्रकृत्यत्तं पञ्चदशममष्टिपदं श्रुत्वा नानिवाधेऽनुमनादिदुपययत् नानाग
मनस्तुल्यं चर्यायद्वयविशेषयत् विचार्यमानयामूक्तिं संयुक्तिगवीयसीमस चिह्नं कल्पदगुरु
काथितं वर्तुलकं शिष्याय गुणवत्तं दद्याद्विनाशो भवत्ययत् श्रुत्य मूक्तिं नमश्च स्मिन्नस्य पुरुषस्य
ऊक्तं सत्तावती स्वल्पपूरुषकाटका कालियागकं तस्मात्पूरुषवतानां तु सत्तं ब्रह्मस्य (गमचर्वं
दीर्घकालं तावत्तुल्यं भवत्येव न किञ्च कल्पितां पूरुषपूचनं सर्वव्याकर्तुं कष्टं पतनं सत्तं वाचकं का
वृद्धपुत्रकं वाधिसत्तातां विनाशं तावद्विशतं वस्तुवाधिसत्तातां दूर्ध्वं १५५५ वस्तुवाधिसत्तातां ५५

निमृताः सुरुत विसृजः च वृद्धकथा कन्दव्यसृताः धर्माः पीतहवजधनः धनं वयं
 ॐ आचउगममदात्रमनरुताः सुरुधनं धनं शिवः ॐ अहं सति किञ्चप नउ आनकनी
 सर्वमिकायं नक्षयं वा नोकादिमथयन्तु वा मथनि सर्वं सैव विद्यादिसर्वमज्ञा
 सर्वं लोकं इष्टं प्रमादिननकास्वयं यमादिकाः धर्मयन्मथतो पूर्ववासनात् अ
 धान्यं संप्रवक्ष्यामि चेत्त्रायिपुण्यमात्रं यनविज्ञानमात्रं भागीधुं कल्पं लुप्तं सैव न
 मृष्टविंशत्सहस्राक्षितं संपदमनिच कुरुमानममाख्याता मन्त्रां कल्पना
 चान्नं शक्यं हृदयासंधि नक्षत्रं हृदयमेव च वादमानिचलजातिष्वहवतिच सुरुक्तं

कुं क कल्य समाख्या ता ह्यला म्मे सु वि चक्र म् ॥ कुं द्वा प न धा स धि स ह्यु प द्वि धी य न
च नु षा षि स ह्यु धि न दो न का षि द्वा प न पि नि ता स र्व ग म् सु ष्वा प न क ल्य सं ष्य या द्वा
प न क लि स धि च च त्वा वि स ह्य म भ व च द्वा षि र्ग म् स ह्यु धि च त्वा वि ल क्क वि धी य न क
लि क्क ग या स धि च च त्वा वि स ह्य म भ व च कुं षां य ग मा ख्या ता ॥ सि द्ध्य न ना ण सं ष्य क थ
यि ष्या मि त ना थ च त्वा वि दि प ल व ना न् प र्व वि द ह उ क्क न क लो ग र प न सो दा नि भ व च कुं षां य
द्वा पा च क ल ह र ह्य य रु ति ता ॥ कुं द्वा प न गुं जा ग सि धि र्ग म वि धी य न कुं द्वा प न्ना ग स्य प
र थ र्ग य ह्य ला द यं कुं द्वा प न्ना मो ध्य र्ग का म ना सि धि मा क्क च कुं षां द्वा प न्ना उ प र्व

युद्धेन साधिता ॥ ह्यारुह्य गवाक्षं मीवावासी वज्रनायका ॥ सर्ववीरसमायोगाद्भक्तसत्त्वरपनस
त्वं ॥ २६० ॥ ॥ किं श्रीवज्रवावाहितं महारुद्रनाथं चतुर्युगानिर्देशवद्वावेष्टास
हावमुत्पन्नं च नादिसफादगाः पटलः ॥ २६१ ॥ ॥ अथातानहस्यं वज्रसंन्यक्तमाधि
नक्रं श्रीपागितास्त्रिंशत्तन्माद्वन्तान्यविशतं संवत्सादिविवर्त्तनं सूचनानिर्माश
कं ह्येवं धर्मसंगमदोषं सर्वपिप्पुष्टं कुरुवत् पथमं स्नानमासाद्य विजयपर्वणादिषु
गमनं कावयं द्रुवलीकृत्तुं यो वक्तुं श्रुयोद्यादापयशागी मूर्खं शोचादिपर्वकं
गवाक्षं ह्येतावन्मपतादिहावन्तां कृतवान् प्रतापेन महाधोवांस्तवनाङ्गरादर्थवान् समाधि

मालं च यच्च मणिम सर्वसर्वकं श्रीकाव सर्वसत्ता नां वाक् च ध्यात्मकमिदं अहं संवदित्वं
च निर्वोदियन्मत्ता न कं अक मासाद्य दना पिथी का न वर्यं वल्लिं हं कान द्रव्या सर्वान हं का
मादिस्वचक्रवान् उत्पद्यन्ति धनमाश्रय पवनस्तत्सर्वं सक्तवान् सगन्धहत्वात्मकचने हं लोका
त्मकल्पनात् स्वेहावधर्मनेवात्मसंपूर्णं योगवाहिनी व्यहं पूज्यं वनेवात्म्यं कल्पनाज
हं कर्मदाहं वकास्पसयात्मचसक्त हापगारमम कष्टपूनवोदमोखिलं द्यना हं कय्याम
या नक्षत्रिदेहि तं यस्मात्तस्मात्तको न कं तथा नहावपस्ये गन्धचक्रु माणसं न पकं
श्रीहृदयकपवचनोरावना सर्वजपवा हृदि सूर्याक्रमो ध्वषूस्ते गजं स्वयं हवं श्रीचिन्

समयान्तावर्धमाकाशपुत्रिं स्रज्जाकिनीमृपिनीकुजास्रकव्यद्वतां गगारहाकूरुलमध्वत्वं
मोप्यमांजगतरूपिं पूजांहेत्वाभ्रनाथेश्वरामसूर्यादिनात्मजां वापादिदेवनां कृत्वाकवनाशाम
नस्यवत् शुभेताचस्यहावंचयोगशुद्धाविरावयं पंचावीस्रहावत्कृष्णंमवविनिदिशेत् इदुव
जधवपञ्चमममध्यपरिस्फुटं स्रजवर्धचक्रवात्यंजिनकुजवादनं प्रहसंप्रदयागात्माचावाह
वधसंयुतं स्रजहविननकं चपातावर्धमायवामन मूखजगामकदंचविश्ववर्मावंचदुष्टक रुद्राभा
निसमांकोक्तमालिरुपदसंल्लिखत वर्जयन्चदन्तिचर्मदसवृकोक्तिता पवशुंजिभ्रवप्रभोभुंखदा
जपाजवाहकं मन्त्रममंदकिंभाहस्रः श्रुचत्वाविगच्छेन एकैर्विश्ववर्धुचक्रंवाहमासेकं

षादशवागत्मकवमपमभनचहाहिंभक कहिकावत्प्रवर्जचपमचककुखप्रकं विश्वव
र्जकपावंचमभुकेकालमीदृशं पाशम्याचाकुभईपंपडि,काचकचकका एकेकंखदिगाव
चरवर्जपमचसूर्यका एविभमकंरुदुवर्जपंचागचदुगादिकं निष्पन्नमभुतंचकंगीधिका
धुनिरिहसदा जगत्सकनूविहियइकेडुमिभुनपवसमउठकूबुधमममहायमइमभुतचकगी
रिधुनिहं कामसिंहवाऊधन्नासमभुपः नउआमभम.जिसरूनाममवडाअविश्रुतिश्रुपसम.काम
मझागिगन्नामसहसदरूड.वमवममान्द्वजहवाल्सहजगवृश्रुतनचाः सूरूनामपमद
भुश्राःऊयडुमिसूनकऊश्रूःकावनूसहधमरूडमिन्डक.श्रूडसिहजसवमभनगाः कामरूत



ॐ पद्मनाभा ॐ ह्रीं मन्त्रमि सप्तमं गुरुजा ॐ
 श्रीकायवाक्त्रिहं वं ॐ ह्रीं दृष्ट्वा हा उच्चार्य ॐ दं मं मं टिषा का न या ग वान म टिषा मन्त्र ह्वा
 त्मा सर्वविभक्त्य पागवान् हे वं काल गजं च क कोटिका सुध्या गुन्ध पविता गुवा हं गं कायः
 कृष्ण ह्रिक्का इवां वं कं पितृ संफति ह्वा इष्या नु सफ दं गजिन हं च च नु म रं जा गाम कृष्ण ध्वं १०५
 विनं विनं वज्री वं च नु कं महा दक्षाला लाम्प सव्यं त्र संन्यत सदा पीत वं क क म न नु सं पातु
 हं ग संति श उद्गा क लाल हि वं ग सव्या इव व्यक्त वे स न गं इष्या चाष्ट वृत्तां य च ग्म भना ह्य य
 भा क मातु दं कि व म्मे दि ह हं म् पा गि स द्वा ग्म प वात वज्री सि कृत्तु वि न त्वं च द क्षिण यं यथा क

मातृ पत्रशुकरि वाभंचकालं हि नंदु मर्जवं चकलमवकलिकाचदगुचरि निपातकं म
खं कोहलदक्षि कोचमयन पिदि को तथा काकपजं रुचिकाच श्रुतिकुशुपर्वतं लंगुदोदय
भंवाभगुल पाक्षि सुदुदुदं अकरवा इति गडुलुदुदुमरुषदालिका कवभाजालकं
गह्वरवात्रपकुक्रमात वामधकाधवंसखं सुकलेषाणकापातकं धनखदाजपुसुकेय
घनमाताभखलागिलाभमभनधलीका हाकन्दकाभुचमंचलं वितकंचदाविका वामनचि
रिका छीचगुहाखविमसकं ककालं वाणि काचवतदुदुकं दुवहिका रानिधवं किलकलु
वीजपत्रकपुत्रकं शुचि सुकायवामांचकदादृष्टि वृजालकं एवं कर्मविहयादासफ

निकवास्तुकं पंचमज्ञा कृता कवतां प्रसूतमसहस्रं वातंचमसुमाला चैव ययुव नोप
लागय व्याघ्रचर्मनिवृत्तं नंगां वलिंचेष्टु कं कस्यागतामहाद्विवज्जवावाहि पूर्ववत्
प्रक्षपायसूत्रादंच सर्वसंधिषु विग्रहान् नानाशीलनकाकाभेऽसविस्मृतं न विरुचयते यदृ
मालाकुसुमं वांशिवातां कावेयद्वीपे यददलं पृथ्वीदिशूकवातं न वागिनी चतुर्विंशति सं
ख्याताऽकिन्त्यायाश्च षट्क पृथ्वीदिशूकवातं चैव किन्त्याया षट्कं तथा उरुमाया पश्चिमा
रुंवा माया षट्कं पनः पश्चिमाया दक्षिणं खड्गमाहादिकं कुलं दक्षिणं माया पूर्वान् च न
पिरेभ षट्कं नरः जाकिती मृषिका चैव चं विवाहपराहं नः सर्वालिकाऽनूवद्वी चैव कुरुच

काठनीलाईकी वामायागसमीरुदाकृष्णालिनीकंकालीका वामावल्लीहविताईडवकर
ईडुकमायनर खगुवाहाधमभातीचविईडुकवैकलीचच वृद्धनीमनिमाख्यातंवकाईड
पीताइड वृषिभाहैववीधैखीचनीऊठिबुद्धया पिताईकृष्णईडविडुजावस्त्रावावाहिका
मृक्तमषट्ठोतांचपंचामृत्तका प्रत्यालीडपदंचैवकपालमालाधविहिर वामावल्ली
प्रविहिरासूत्रमृपविहागकं तदाश्चवर्जचकंचनीलकृष्णचमध्यकं ऊकिनीचकथावा
माखगुवाहाडुनेपिभी प्रचगुचगुजिभीचैवप्रतावतीमहानसक्त वीवमतीखर्वनी
चलंकस्वर्गोदमयया नेकविचकथातंचमहाहैववीस्त्रेता वायुधगसुनाहस्या

[illegible]

न अवंचधरुवीनामंशागिनीनांस्वरावकः चक्रवाङ्मसत्वातांडपपाद्यमभुजंक्रमान् न
चपनःषष्टिंभमाहिन्नादरादभक्तुंक्रमायतु ॐ हिवर्जचक्रं ॐ मूथ
न्यरुभसंवशुवावाकार्यस्यनिश्चयं वागहिकल्पप्रमातंच कथंनगभगुक्रका वागहिक
त्यमाख्याताःषाडभकाटिसंख्याया महयोतस्यपृथक्कान्तराश्रमीति कातिमूच्यनं वं
चाभस्तुक्रकाटिंश्यावमिगानयेभनच अतानि सधोभिडका निमनिछानिहिकयवेपवान्
मूथरुधाक्रमावशुद्रदयचक्रमीदंपनः नकपीतवर्त्युचचक्रालयाषमध्यनः वज्र
धमीश्रुजास्यरुवेलाचतीवत्तपिका पसेनस्यश्रुमाद्याचवाचनिमासकीचतु पभुलागा

गान्धर्वं कंठं चान्धर्वं सक्तं सार्धं धर्मं धातुवजाच। स्थितिगर्होत्तराका पाणीचलाकलाक
 नाथीरुः सर्वनीसमन्तरेपुका नलालकीनेगलाचरुकी पदुमाविका यमानकीपुह
 कीचपमाककीरुविघ्नान्किं अचलातीलदुमुचनकिं वाजमहावला उल्लाषासक्तगह
 चवर्गुचकंदुयामगं शाखचवजचकंपवकादिसर्वलज्जं उपपी। १०८ देवीशां ह्याहापाय
 नचिकथन पुषालीरुपदनापिविरुयं सर्वचकं वृषध। इविमलायांचदीपप्रथमकंस
 नं नायकीरुविजानायाल्लघूहन्कीमिष्यन पमहन्कीरुहीयचचकुध्वा कामकंसथं रुवचं
 चपंचमहयुष्टयमंदहन्कीमेन सफेसका लहन्कीच नरुमद्वहन्की नवमहानहन्की

अद्वयमचिदहंकीं अकादशवाक्त्रवागर्थे द्वादशाकारिकर्मणं द्वादशमहागुणकं ह्य
कीनान्यरुक्तं स ह्यनंयादशमं षः त्रिचक्रयागिति हंकीं वर्कचस्त्रचक्रं मूलज्ये
षद्विमात्रमं नानासंज्ञाकमहागुणवाधिसत्त्वस्य द्वादशं यागिनीकल्पकस्य बहस्यं व
ज्ररामचक्रं मन्दपूष्यानि सत्यानां द्वात्मकचक्रं द्वादशं धर्मसंज्ञागतिमोक्षमहासखचिं
वनां प्रहृष्टपायात्मयार्गांभीष्टवृक्षत्वमावहं ॐ ॐ किं हे द्ये चक्रं द्वितीयं ॐ
अथान्यरुमसंवञ्जगुणचक्रविधियं पूर्वाके लङ्काधामपुत्राचार्यपत्रिकल्पयं न कदा
चैसर्वगुणं नामचक्रं शुक्रनकं वज्रानेमध्यमादद्यात् षड्विंशतिजांचक्रं वामेनीजं

शिवे गोशुशुचि सुलिनी सूची शम्भुनटि कपालिनी केवडी उवगुनटी भखिनी दुप्रगाणी बरु
 मुकी काषकाविका मालिनी केलिनी रुपी काश काती वधुटिधी हउगभगविका नीच कल्लवा
 बीरु कूपनी बाज रुदिगद कोच नम्भान विकथा चउ सुवर्धु काती लोह काबी मात्स काबीर
 हानिउ दाव का लक्ष्मी आदिनी जीव रुवगा कृषीन चर्म काबी तीया गिती च वर्धु चे कषुय
 यच शाप सर्व उद सुव्या यथा हृदय पचकक ऊं मलु विगानी या काम धा उ सकला ल
 का दिनी यही प्रकला रूप ह्या या स के सव पुता कनी हमी चे वपुजनी गुनू ह्यय सना
 माच वश मर्कु उ प्रभावा या पे की हि मां इ इ इ इ का ला नैषु सर्व च कषुका वयम्

९०५

[illegible]

त्माभ्यामनंसर्वगः कृमाक च दुर्गालवृकं कृयाः शब्दादिहृमिकं मरं पंचलवा
 स्मकंचकंचदुष्काः (६) समं कालं कृजसेरुजचकस्य नमः शान्तिचकथर्गं च
 शुभगगदुर्गं देवकालां कृलं कनेरुजं लिखीषधे श्रपूर्वादिदिश्वामनसं स्मिहं मृद
 द्वा सः ॥ ११० ॥ त्माभ्यामनंसर्वगः कृमाक च दुर्गालवृकं कृयाः शब्दादिहृमिकं मरं पंचलवा
 वरं समानानि धालनूपाति वगाउरुगसि चागवे अंनद्यकमने च निरुग मृदस
 समानानि च वृजदि कपोलनागदुर्गमं धन्या श्रपूर्वा कमाक गिलीखा श्रवृकं कृ
 लिः नृगवृजवदस्य कालं कृक श्रवृलना पकं धिच पाथि क ॥ ११० ॥

११०

कनागडास्थमाधिपर ॐ नमोऽस्तु तस्मै नमः च मासु खानीलाधिपर वाशुकि
नरुकास्थवककर्कटकपद्मवच महापद्मस्तु कलिक कंखपालक गाजिका
धर्मिका धानश्रावणपद्मवच पद्मावर्षध चरु मघाधिप ॐ नमः सर्वकुरु
स्मै नमः प्रवजावत्यविदापयत सर्वैक कुरुवाकायकनं सत घटिकसं
स्तुतपुतिमोदिनावहिवाकायैरुमिवाधनं विगतं धूपताकोतां नमः हिमं गुर्या
पाविगदं संपूर्णपुतिमोवायुस्तुतपदकचापनगस्तुतः श्रावणस्तु महाचक्रं पंचा
पचात्रे संपूर्ण यथाहि सर्वसंवदाः सुविमोदितास्तुतः समस्तं संपूर्णं

मिहिन्व्या नय नृत्तः श्रुमन्तकथा गतधिवार्य मुनिं कृष्णो दिव्य उवा ७७ नृमि काय नृ
नियचकं प्रथमपठं ७८ नृयवावाक्रा कागचकं नील पंचक संतिनं घट्टिं नृ
नृता मध्य च खर्वमी यागिनी मिदं सिदं किंतवीयन्धा विच नृकी पाटवी नृथा वी
नृवंधन मृकं दाहु मृज्जा चंधगानी श्री सा मलादिकी गीता कवजगमजापया नृथा
लाभ्य मृकं माली सो नृमृदु इन्द्रिका ७९ मोदं नानि पंचमाहु गाल वीचगथा गमन
की उमनी इवु की चैव पर्वदा पनम मृधनी रुदिकि कं नृ किंकिणी घृगृवी नृथा ८०
का कालिका नृमं नृत्ती धा पवनी चैव पर्वदा पनम मृधनी वरुना ना विचि नृच

अथवाचकवर्त्तुका उपकुर्वन्तिवासीचरुतीचंचापिवापनाः खचनीकृतमायानिमं
स्तिनामलुदीपकं रुमीअर्चयतीमारुह्यसपीडादिऊहिनी कदाचिद्दमनूरुवदा
जविहागमअपिच स्वस्वचिंद्रादिनयाश्चकानयसुयथावचिः सकुणवचका
नांस्वाधियसुकोवयन पक्षपायात्मकाश्चकुलीमासकलीनमः एवमंकुर्याश्च
थायुर्वसावभादिकंवद्ः किनवा सर्वचकादिगाम्बन्धनमिति मूलननथागना
नधिवोस्यकृतिं कुर्याद्विचक्रुवाः निमकुनदिवावंचसर्वपंचनजामयन सुगंधन
लनवल्कलसुस्वापयत्समाययन पुनपनकलमनपनिमांस्वापयत्सदा पश्चादाका

भनरुंरुगवर्नमदुलचक्रंप्रतिमापिप्रवक्ष्यते दशकर्मकृतकार्ये व्यवहारादिकयावत्
 आजीवीउन्मीलयेदञ्चक्रमधितिष्ठत् पृथ्व्यंधूपंगथादीपंगन्धनेवश्चभवच्च सर्वकर्म
 प्रकृत्यश्वासकर्मनपूजयत् दवाग्निमखासर्वेप्रतिष्ठाकानयध्वपुतिष्ठालज्ज
 संप्राप्तदुतिमांगल्यकानयत् मरुदुर्व्यतिघातयथा लाहंदुपूजयत् हाजनदानदा
 किंनयंजगदुद्विचपृष्टिकं पृष्टिदुजनसोतागं समाङ्गल्यचक्षुर्भक्तिकं भक्तिकंदृष्टं
 धागंनानाश्रवाद्यूपद्वं श्रुपतिष्ठयथादेवंप्रतिष्ठाकर्तुंभक्तानां निष्पत्त्याध्वयश्च
 भर्तृकच्योपहृष्टुगं निनिविकल्पकवृषभपतिष्ठादेवस्थापनं देवतालोकया

लाभ निष्ठ नमः श्रुतं यथा तथा च मन्त्रिष्ट देवपूजापत्र समन्वितं ४० इति श्री
भयचक्रपुथमः ४० नद्यार्क वायुचक्रं च वर्तुलं नदीलोकं वज्रालमध्यागादया
यागिनीनां यथाक्रमं आकाशरूपवर्तमानं संस्तुतुं वद्विमानं गवूनीहंसीचित्रीयकाकी
वह्नीनिहिनिका मयूरीगोमचूरीचगुडिवलिका कामला पालावनी चरुकाकी सजनी
कुवापिमुली नूकीमली सानसोचगर्वाउलकी च चट्टिका काष्ठचकी चक्रवाकी
वृजात्रयी कुकुरी कलकाकी गविलाडी नालगी विडमालिका सनाकं कूमलाचवा
टिरीका कजंघकी सामालहपिष्टा च वन्दद्वी कुमगमिष्टा उवावाही चक्रं च वर्तुलं

चक्रपादं अथ वास्तुसूत्रादुक्तं चक्रपादं च पूर्ववत् पञ्चापायात्मकं सर्वं चन्द्रादुक्तं
सतीपनाद ह्मिसुइजया इया चक्रदीपिनिमताः अथ वा चक्रं द्वाचक्रं यंगुभाहृदकं
आत्मकं किं चक्रं संस्थं द्वाचक्रं नृपकं चक्रं ऊर्जा नृजातामं चक्रं घातकं भूतं ह्मिसु
धनमं चक्रं अतिक्रमसिक्तं नृपकं अथ वा कुलसमानं यथा चक्रं स्रष्टुं अथ वा
लं विषुधातं द्वाचक्रं कुलं पादिकं नृपकं द्वाचक्रं कुलं वधं कथं चक्रं द्वाचक्रं नृपकं
वचं द्वाचक्रं गुलिकं नृपकं कुलं वधं कथं अथ वा कुलं स्रष्टुं अथ वा कुलं
वधं विंशदं गुलिकं नृपकं कुलं वधं कथं अथ वा कुलं स्रष्टुं अथ वा कुलं

क्षतर कमान्नपुनकार्यं जातीयच्चविचक्षते ॥ आकान्तस्यतिहितागंविहागंखानि
नरुवत सर्वाणिगानिकुलुस्यसामाननलक्ष्मं कुलुस्योदृतागतउदृरुवकाभं
अष्टस्योदृतागानममीकृत्यवयाजयत यदिश्रुमीच कथाश्चकनमभवचरुवाश्चवेदि
कार्यंयथाअष्टपमानतः कुलुमध्यवजातांवाश्चकनंउविष्ठाषतः ॥ धृतपीतंच
नक्तंचकृद्वाहविगभवच यथाकमान्नसामं कुलुमनांवल्लक्ष्मं किंलुसार्वक
मिक कुलुस्यभक्तिकुलुनादकालुविष्ठाषतः अष्टपञ्चाकमानमीवजावलीवेष्टि
नं रुवाश्चवेदिकादयोचरुमयाष्टपमानतः भक्तिकवर्तलाकानाशुक्रपूर्वानत

हवत् चतुस्रं पादिकं पीतं उरुवाभ न उच्चारत सति चावच्छेदार्थं च दंपत्तिमान्नतं वि
द्वयमो न भक्तं कर्म दक्षिण न तद्विवाहकं वक्ष्यामि विवदीचे न कवचं विवाहकं
स्तुतं न भक्तं कर्म न भक्तं न भक्तं उच्चारत न भक्तं च वायव्या न न भक्तं च
कालपाधं कस्तितं कर्म मा एतया भक्तं स देवता श्रावणं वक्तुं कवचं भक्तं वयं इका
ना शक्तिया रो न द्विजाकारं विता वयं सति नाम च वयं न संदिता देवतात्मकं
स्वस्ववृषोदिकं कर्मात्मा न चिह्नं न भक्तिकं वस्य श्रुतं न चिह्नं न काठ चिह्नं
न भक्तं विजितो भोद चिह्नं न चोत्तारि चावकं वयं श्रुतं न चिह्नं न काठ चिह्नं

११४

न्यावाहयकृत स्वहृदयांशजइकांनवजसत्त्वविहायक ६७ ॥ निगयचक्रद्विनि
यं ६८ ॥ अथवाक्कतं वक्त्रं चक्रं मदिनितामनारपनं पीतवेर्लुखलावपु. प्रकिंशालेविं
रुषितं यल्लिंशोशागिनीनालुहवनीशं यथाकमं सिंधिआघोकिताशमीराजीम
गीमार्जुनिका गीमीमहापीडुहवनी. जसुकोरागीचमनी मखीगर्दवीहदीचम्रजाकी
जुकीकुमार स्वामीसर्कनीहल्लुकीचउखीलीमकुकीगथा वंसत्याहविलाषीचम
वशीहहस्वानिका प्राक्षिकाकीमार्जुनीचव्याजचिप्राधिकटिका नकुलीहकीगुहा
कुगामनितासिनीपवा एवंवर्लुयथाचक्रं स्वस्ववर्लुउवापूहाः पर्यापायात्मकादिवा

उपरुद्धाहवासिनि हसीवहिसिखेचेवपहपागमिताचसापंचदीपनिवासिचक्र
 यथादिषपेतेवने एकीनयाकावपवकुंसावकमनं पूर्वाह्नपश्चिमाचदेकि
 लोमेषरुयो बुद्धाशीमाहभूवीचकोमावीवेकवीरुथावावाहीहृदिचसीचमहाल
 मीकाहोषुतगर जाकिन्याठिवज्जधाननूपचिह्नउजावकर काहोषुरुमिनतिमखेचे
 वपहपागमिताहसा दग्धादिवहयाकिनत्यापिकण कायवाकिहृधर्मेषधर्मच
 शुभाभरुनं समानातिहिपथर्कश्रुतिचक्रषुमथगर मानवसंज्ञासनंचेवमहा
 रूपरयंकनर शोदस्मभानकंचेववासावरुषुवित्यस उच्चाटनंविदपठंस्वन

सुसुतं पतः ॐ नमो नादिष्वा ॥ च वृद्धा कमडदापथं पूग छिद्रकनालीच दा
छिमविल्वका सुतेर आमलविज्ञाल नृपयथा कमाहुविनाम ॐ नृदीयमनेदाच
यजुर्वीरुतिनभ्रषी वाकुसायायराया च दापम झा कपालिनी नागिनी माघिनी
सर्वा दापय मरु सर्वदात एवमनुले च काख्यं कामयत्सर्वसंपदाः रावथनायकं
रुद्रकमो नृपवर्णि को यजुर्वीरुवदवाकां प ॥ १५ ॥ नमः कुविचक्रभः ॥ नमः ॥
यागिनी वीजं नृकवर्णं सानने द्रुमः ककुत्तिका वामन दक्षि ॥ १६ ॥ नृज मात्य रुथ
रुद्रः यथा मकुटिने लब्धा दल सर्वो नृवर्ण रूषितं ॐ जठरं वा नृवर्ण कुरुपा ॥

वसुधैव कुटुम्बकम् अथ चर्मक्षार्घ्यं च दद्यात्कुलपुष्पापयत्नं समयसत्त्वसमाभी
 नं यागिनी च कं प्रकाशयत् पृथ्व्यपंतथ्यदीपं राधेनैव यदौक्यं ॥
 नृत्तिरुत्तमयचक्रं मंगलं स हविनी यपठं ॥ अथ वाक्कर्मपूजनं अग्निच
 क्रं वेदाम्बुदं वक्रवर्णं द्विकं षष्ठीं नमः परमां यागिनी विन्यस्य चापि देवादिषु कला
 द्वां देवीनां गीता यज्ञोक्तौ च रावमात्रं किं कल्पसर्वमिष्टाहकथं नंदनकुलं हि न
 दविना गीता यज्ञोक्तौ च रावमात्रं साक्षात् राग्यो ह गीता च इह ना राग न यिवापि
 कापि तु रगिनी भूषा सा च मातु न स्य सार्थं किं सार्थं रगिनी सा गात्रं न स्येव यिदु

मातृकाः हाय्यो पितामही मातृ मातामही दुवा-न्धवा मातृ हागिनी हाय्यो च हागिनी
हागभयिका स मातृ माता हागिनी हागिनी माता च तस्यैव पित्रु माता पितामही हिः पित्रु
दस्य हाय्योका इतिहा पुरु हाय्यो दु हाय्यो या हागिनी पत्नी स्य पित्रु हागिनी पत्नी न
सेवकः मातृका जाता या हाय्यो या पत्नी च पुरुभ्यः च दु हाय्योकाः इतिहा या हर्षमातृ
ः पुरुभ्यः च दु स्वका इतिहा पत्नी समाख्याता वकिं भक्ति इतिहा नक वरु समाख्याता आ
यथा दिव्य पूर्ववत् हविः इनां मा चैव स हविः पतिवा सिनी मलायक समाख्याता पुष्पा
यास्य हावका भक्ति चकं सदा श्रम विरुया स्वाह सन्दर्भ वज्र चका दिग्वन्चकः

नूत्नामविश्वामकरः पूजतं कलक कृषचिह्नं या स्वात्मन्दी वज्रचक्रादिसर्वे च याम
दक्षिणपादिना यमवः सर्वश्रुत्यानिदापयत्सर्वसंगतं ययं नामाविधं दद्यात्तत्त्वं
नात्तात्तमवच उत्थाय वासनात्तयात्पूजतं कलक वज्रचक्रं यममागस्य चक्रस्य पूज
नं द्वादशमवच श्रुत्यात्तं संप्रवक्ष्यामि श्रुतिचक्रस्य लङ्कितं ओम् नमो हरे नमो हरे
ओम् नमो हरे नमो हरे ओम् नमो हरे नमो हरे ओम् नमो हरे नमो हरे ओम् नमो हरे नमो हरे
हानां श्रुत्यैव कस्य नोक्तिर्विवाहाहा नमः समाहितं मन्त्रं वज्रचक्रं गोचरे स्तनादौ लो
लङ्कितं विचक्रं नमो हरे नमो हरे नमो हरे नमो हरे नमो हरे नमो हरे नमो हरे नमो हरे

कानिशी द्विनिखामध्वमहृयानिष्ठकंपासमकुलाः चतुर्भिर्वासमाहालाप
वृत्तिस्त्रिस्त्रिगसना कृच्छ्रसन्निहस्त्रिगधनपवेद्यस्यपरा निर्धमाविमलाव
द्रिवागग्यठद्यद्विकृत चतुकोनामधिपरव्यक्तुसानवकनकोपमं पृथ्वगविहाः
वापिसर्वपापप्रलुप्तयेति वन्धकपष्यसंकाशंजवाकसमसंनिहा सफहमय
वर्द्धनः नाष्टश्वयोचरसंपद चम्पकाङ्कात्यलाभीचमाहनीभीतगंधवात कष
मानुषगान्धिशुहंस्तानाधिपशपनं वीक्षवधमृउक्तदिगंखकाहालसंभव
श्रुतिगम्भीरनिधोषाश्रुतिचैवसूखावह श्रीवत्सख्यसंखाञ्जलिगलकलसा

कृति चञ्चलमलमङ्गलस्वस्तिका श्रुगजाकृतिः निःशेषदङ्किः क्षमवर्द्धिः नृकापि
शुभमहार्थदः नृकापि सख संपत्तिनाय वा नाय संपद चंचलीनीमूखा कालाडिनि
लोवस्वमलाः नृकापि सख लिंगादिजम्भमाना नृकाकरी मरूपकपीतायागीम
रुहसहितेष्टनं मरूपकमणि चामनमरुहस्य गन्धिभदिनी कुरुविचिनीवासीवकि ११८
गमककृपंधुवं नृपानांचनरहावासंयद्वासेनापकर्वधं विवरल्लुधमकुरुकुरुकुरु
मवर्द्धिः नृकापूत नृकापलागनलाकुरुः नृकापि नृकापि विनासकुरु सवामगरन्ध्रः
गरन्ध्रः कुरुकुरुप्राप्तिगन्धवान् पुथानविपदं नृकापि यदिगन्धदिष्टमेतनः चपचटकि

नाशयश्च मरुमातिषोषवान् हिमिमसिमायमानावायजघाषार्थं हनिकृत् खड्ग
 खण्डलसर्पाक्षदक्षारणभीषे मन्त्रिरुधाराभेरुयानकाकावरकथयन्निमहात्म्यं
 द्रुयमफरुहं दद्यादग्निमंतावयकं पृष्यतामूलवस्त्रादिभुक्तिमंताखकावयं
 न आचमनकमादद्यादग्निमन्त्रिदुमानसरे ॥ ७ ॥ नितिरागापटं श्रुतिचक्र
 पुथमरे ॥ ८ ॥ अथ कदाश्च कदाच मज्जलचक्रं महर्षिकं (श्वरवर्त्म) मषक्तिं (अथाति
 नीरुवयकमात् सवेगी कर्मवी मरुदुविंशी कदुपी अडिका सूचीगमावी सीलीच
 जलशुहाकी मखा हटिं ज्ञेय कर्कटी मचा मखी कापि प्यटी मखा जलनावी वेद

शिवदक्षिणीयापुञ्जकी जलादीसंवाकदीभक्ति कीमक्षिजंगुली नसिर्द्धवीक
 भुटी. हाटकीवर्ककीकृता शिखीदंसगीकलादवना नायकीवलि नवंवर्द्धस्व
 हावकुर्वंवास्वस्व (पुञ्ज) मखंचस्वस्वपात्रिहियागिनीतांयथाकृमात उ
 पमलायकीचैवहमीवचल अपरा सफमहापतिवासीचबिह्यायधनप
 र्ववर्क अथवापुत्रगिमायाप्रकीर्णदक्षिणांनार कषूतानीसंजकृष्णम
 खंपी० कमायक४ जन्वदीपमिदंनदादवास्वस्वस्वगिर्ण जावाताससम
 इलुक्कजिनि सर्वजन्वान् संस्वरजसंपर्काहुजलायूजानांचमायकं ॥६॥

चक्रसंस्कारकुरु अग्निचक्रजगायत्रं सर्वलज्जामप्यर्जुपथाप्रायात्मकं स्वयं
ओं वाधित्वा यस्वाहा असृष्टस्य अंबजलगायस्वाहा शुद्धस्य ओं
वज्रयस्त्रयस्वाहा ओम् इव नम्य ओम् ईकव्यलायस्वाहा जीलवज्जाम् ओम्
वेवापदहनवजायस्वाहा किलोतां ओम् जपुष्टयस्वाहा मुखलुगुल्लोतां ओम्
सर्वसम्यदस्वाहा दध्यन्नस्य ओम् जगयस्वाहा श्वीया ओम् अग्निहोत्रवजाय
स्वाहा कृष्णतां रुद्रहृत्कमलासनस्वदवना विजनीष्यन्नचिद्रविजपनीतनं
मधुलेचकं विहावयन् समयचक्रं इनचक्रं मातृपुत्राय रुद्र आत्म

अंतर्वात्म (ध्वज) गति का न विहाय यत् शक्रा न च मनादि कं पूजा मुक्ति अर्थे पा
 घलुपुजयत् स्वदयता विजयापेक्ष सथ दवि सं कि नः पुर कं दवनां दशाप
 आश्रय दया ह हूयात् कय स फ धि कां या व न ठा न स रु स भ व च यथा दया
 न न पेक्ष अग्नि चक्र वी च क ४३ तथा हि सर्व दय्य य दय्य मग्नि चक्र दशात् समि
 लोको दिपु हा म गु ल रु क्त च म ना दि क न क स म सिले सि ह ज्ञा ध पं ग न्धं हृ दि पो
 ज नो ग म पा दो पा यं दो पे स र्थ नि व र्थ च पृ थ द शो यथा कर्म यथा पूर्वोक्तं तं विधा
 न न विषा जय दग्नि चक्र म गु लं हो कि व अग्नि चक्रं संपूर्णं लोकां रु वी हा स ज

१२०

यदि निमचलोकि कमती चकं माकोला कोरुनं तथा वागहीकल्पसंपर्कषा
यदा नामगंसमगं २ किलवीलिमहासाहंगीरुतयसुदह कोलमखीद्वीषा
एतन्ऋतिचकं दुहामहायन प्राथयतुमिमगं कार्यसिध्यगं नाकु संसयन व
फाशालो कपाताश्रयातिद्वोऽविधि विद्या ४ ४० ॥ ४० ॥ उदकचकं वि
मियं ४१ ॥ अथमहासंकं वञ्च संक्षनचकं समनगं विश्ववर्कं प्रकुं
वसासुवीक्षं कुलकमा किलाकिमाऽगिसखाच श्रुपसवसा महानका बहिन
कारण्यायसिती च संस्तिनि चिदिही राजामहानपा सुवृपाच कोनीतितामिह

नीसूखाः पूष्यकामीकुमदीचनीलायनाहुसून्दरी वागभुमहावागभच्चनामा
ख्यामहावागभकं सईनामदनपियाचकाभिनीचमहाकामिका सखाहुवासख
पियाचसखसतिमाहुपुसता मोहागधमनीमोहागभभहाकाहुपुससखि मा
तिवपीसमोख्याताकालेसखीनवतायिका पुष्पायात्सकोसर्ववर्धुनातावि.
धंरथे। उजायधंपर्वचरुयाहमिमाधममिस्तथा। समानेवत्ताहचरुख्यं
उसककावका कस्मात्संहागाकायंचमगुल्लुषुवदीनिनीचेरुल्लेखाधिकोनि
चषत्तांठंचविशुद्धिरु पूर्वादियचउर्वायागिनीहियथाक्रमं एगनीचीनी

यत्तालीघसमीवित्यस्य नरः काक्षवासी चतुर्दशी पृथ्वी सवरी तथा चतुर्दशी
मिनी कामात विरूपाय प्रवेष्टेदा वाष्काता ससात चर्क मृद्वे समुत्तम मध्यकं वाल
मृद्वे वृष्टुं धावायुधं सवदं गमं गामावर्त्तं दिपूर्वादि चिन्तय वं महाक्षयं धूमां
धजा नमस्ति च हा हा नमस्ति महा नमो वृद्ध चन्दन कर्पूरं हा हा हा हा लुभे लव नोरा
गमं च चं पकं च कृत्स्नं च देवदा नमः दिक्पालादि दुर्लेखं च विष्णो कल रुक्मिणी ४ म
निवृद्ध गुण श्रेष्ठ गुणैर्विक्रान्ता तथा देवशिखरं विरूपाय मखं नोदाति रुक्मिणी नमः
हा लोख रुक्मिणी जा च कृत्स्नं च नमो लोख विरूपाय नमः रुक्मिणी कृष्णाय नमः

पञ्चमः एकः जनगुडिकादुपादलपत्रसाद्वं पाश्चात्तमपानामसिद्धिर्जनय
 दृष्टः अथान्यः नमसं वञ्चः पूर्वहामाज्जुदलं ऊर्ध्ववदिकनीरुमिः कृष्ण
 रुचिः वदिकनीरु सर्वसंघो रुक्मसंघोः समिः ऊर्ध्ववदिकनीरु मोर्ध्ववदिकनीरु कन
 कोऽयं सर्ववञ्चकनः कनः ॥ नमिः कनसिद्धार्थेऽपूष्टिः रुक्मसंघोः कनः कि
 नपापहर्त्रं विशाध्वन्यध्वन्यार्थकपकं महावलकं मायं वायव्यगणपदेऽयं आयुर्वदिक
 योऽयं. एषध्वमागनाशनं पुष्पपदमधुजीवदध्वनं सर्वसोख्यं ॐ ध्वन्यसिद्धिदा
 वाङ्मूर्तिः दशाक्षरद्वयना एषकमनिनूयध्वन्यध्वन्यादिकर्मकं पाञ्च

प्रश्नशुभापायास्तु ५६ यहावना नकाविनिर्गंगमपि महासुतामृगमनं न
नमैकपर्वयदग्निचक्रमात्मानसंचनं एवंकभक्तिथाह्वनंचक्रंशोहागधसंपदं
५६ मिथीवज्रवानाहिकल्पसुनचक्रंरुगीयपुनं ॥६॥ अथन
चासुभावावच्छिन्नचक्रंमिदंरुगं नकवर्द्धयति काशः सर्वसुहावजंपनं ना
गिनीयज्जहीरुगीनावच्छावीचिनी पारुकाश्रुनरुवीचकूमहीनयमक्रियास्तथा
कालसूचीकृष्णलीचरुपनीरुपुतापनी गोनवीचमहानोनवीगेलपाकीद्विप
वर्मा दधीमाहाषानागीचभद्रमत्तनीरुसिका भीरुकीसंवकीसुवनाचैवकन्द

नमो इति कजा गंगकान्तगी भस्मा च पानीय प्रज्ञा कीर्तिता अस्मिन् खीवे न गहीतु
 गंधा विच चकी का कृष्ण मुकु महादवी चर्क च कसो या दृष्टं रुजा यधं पूर्व व ह्यु या पु ह्य
 पाय सून पजां दीप सभा न कं नृ ह मिध मम ध्ये गतं चिह्न सहा व शुद्ध त्वं सर्व गं च
 क क म न ४ स्वरा वं विषा क ने नात्स्यं च क वं रु रु वा गृहि सर्व धा मे व विह्यं च जा
 नां हिय थ क म ४ दान पाली च सर्व धां च रु ४ ह्य ना नि बो द न ४ उ वं धा उ न विह्यं
 नून्यं नां च विच रु ४ ह्य न विह्य न हा व ह्य न सभा न हा ग व न्न यं नृ मं नि मोक्ष च
 क वं रु य ४ का क्षा वृक्ष म न ४ अन्य सर्व मिदं पश्च च क वं रु क थ न ना ना सिद्धि पदा

१२३

X शृङ्गारः

मंजुमानावर्तुह्लादयं अंतमस्मभानवासीनहाकाभानकाभाय नयथ
अंचलपचललललालयदवलिंगमस्वाहा मवायुर्नहात्वाश्रुर्वनाशं मवायुर्नहा
हातावकुथयावदागादिपिभुक्तादिः अंचामरुधुमुकेगिविशक्तिं कुरुनरपचर
द्वदरुमानयस्वाहा वामचननगनश्रुनकलासुमनूलिखितानेसायनवकाश
ह गङ्गाः कानचकुदयंतिलिख्यमरुधुमकुपदंतिलिखितान्श्रुक्रमजपन वशीकर्तुम
रुमं अंचज्ज्वाहवलावलहनदहपचविधंसययासांद्यमावयश्चरु वाल्मीकि
मेयापंचगव्यमहिगयाचिरुस्मिमात्रकंवाशुकिं कृत्वा कनवीनदुर्लोकनसचयकु

गूधपंमविद्धिन्नंकिगुक्कयलिंद्यासफाहभाटकधनापाकयकि यदित्तचयानिसफ
 मदिबसखगुखगुं कलाघटकपुकिप्यनशांपुवाहयत वर्षेकिवषापनप्रनविधिः
 अंगगोश्रनिगमस्याहः ४ कूननापुजालितमूखेलोसं सफजापं कृत्वाकस्यविधि
 कदागदास्त्रापयत मूखवेन्धशोहवति अंमूजागिहृति मूजागदुति मूकाकादुति
 च्यांगलंमूजातांमूजेपूवीधवादवदुरुस्य मूखवेन्धनिः ४ स्यात् वलोवदस्यापतिरुच्यदृया
 हिहंस्त्रापयत यस्यकस्यचिकार्यमूखवेन्धव्यवहानपाटिरसिद्धिः ४ अंनमशनिग
 हनवायचिलिः २ किलागनूपवा मूषिकोशं कुं वधामि मर्कनगुमवसर्प्यमऊवना

हादिनां ओंजिनास्त्रिलिस्वाहा उक्तमन्त्रं उक्तहस्तनलाष्टकं वा उक्तविंशतिवा
बं पञ्चमिष्य गुरुकुवाटिकायां चरुकां लाष्टकं उपयुक्तं निम्नपदवासावमि
मृथवाविमलवक्ष माजिका मर्षपमूलवीजधेनूतकनवीजमहाकोमवीजवा
पुंगवो वस्तुसंयोज्यमहीषसक्तं गुरुगोवर्धनं नूधिनैक्ष लाष्टकं चरुदेष्टं पिपूष्यधूपं
वलिदद्यात् कृत्यं अहोरात्रं हस्तनसंग्रहं वा मननं कर्तुं नीजां नृमाजं नमहाकालान्कमः
लाघ नश्यत् ओं चल पुचल ललालय देवोर्लिंगस्वाहा सवायुर्गह्वरा
शूर्जमात्रलिंगं कृत्वा मावजपयावेदागदुतिपिबुः कृदिः ओं चामूः धूः केणीविः

यजिह्व हतश्चरश्चरुमानयत्वा हा वामचरुहातलश्रुनकतसमनूलिखितानसा
 हतनकाश्वाहाहा ४ कावचकुट्टयल्लिख्यमाध्वमकुपदल्लिखितान्मूर्कं सजयद्वनी
 कवधामूरुमं ॐ वज्रकाटवलाहवलाहनदहपचविधं स्येयास्माकंदयमा
 नामानयइंद्रं वाल्मीकं वामपापंचगोव्यं सहितयावितस्मिमात्रं वाशुकिं कल्पा
 कतवीभनचकुर्विंशतिजपयन् भीमां पाकाभं वधं कर्तारुवति ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं वि
 द्भवाहा श्रुननमकुहागमये सहिमज्जापानीयस्मानपुजिपदधिवितस्यति ऊ
 नऊं पन्मूकः ॐ भवन्मामिवकुलाय धिपकयाः कुनूगदुहजयश्चनवागानि

निश्ताभयश्चंद्रोऽस्वाहा नक्षत्रागालु मार्जनमक्तु ओं श्रुनक्षत्रं चंद्रोऽस्वाहा उद
कं ऊष्मन्तुं प्रकाशयेत् नक्षत्रागालु मार्जनमक्तु सफरपुं कृत्वा हस्त नव द्वा कनं ता
भयति अपा मार्ग मूल वक्षा चतुर्थ कनं ताभयति सफरपुं काष्ठं गद्दी चो दान मूल स
गं वाधा वयेत् मयं विन स्यति उद्धृत मा ऊट ६० ॥ द्वितीयं वा वाहिक ल्य
चि रुचक्र पुष्ये ॥ ६१ ॥ अथ वाक्कना अन्य च वाक्कना उक्त धर्म वक्तु मंजिष्ट
वर्क च षष्ठिं भासकं विरुं पूजा रुक्ता निशाल स्या धर्म चिन्ता दुष्टा वयं गृह चिन्ता
स्त्री चिन्ता च अर्थ चिन्ता विधाग कां पूज चिन्ता हिष्ण का च ध्या नो दु मक्तु जायिका

श्रीं जाचतस्नापासत्तार्थं कबूद्धाशमां माऊचिनापमडाहा ह्यनलाहापस्थिति ऊवा ममभं
 चिनासुखाचरइरागुहा श्रीचिनासिकाश्वेगुचिनागमनिका ऊमाचिऊमाऊमाऊचि
 जानादुधितापमाः सर्वकर्मकादेवीपुक्कतिचकदंसहृन् स्वचक्रवर्गुमारव्याहंसखम
 कुंडुपूर्ववत् पुष्पपायासकादेवीपुक्कत्याक्षमगुलं चरुपी००ष्वश्चकनगुहाद
 भसहृषकं ह्यनजाकितीश्राशाश्रपूजाक्षदेवतिमनं पी००वह्नानेमिभवंहूमिच
 समप्रहा सुवंह्यतादिकायाहुं ऊलागितिचायाकाभकं बलयश्चक्रनामंचविह
 यावलयागिती ॐ नमोः श्वेगुं कृणु कबूद्धाहा पावाचनपूर्वीवश्च ॐ नमो

१२६

एकनशांजन गुग्गुलुचनखं कृष्णं कवीजं मथेवच नमसांधपगुठं नयाजिर्नंधपा
यं सर्वहासुभं सलाहविक्किशाहवम अंतमाहगवतं शुक्कमूलीचामूनुचिलिमिलि
पातुके मसुकसमानयेत्वाहा न्हं दुजवचा कृष्णं गवसं पत्तथा मूषमलानाग
पृष्पचहागं सज्जनसस्यच नमनधूपिर्नवस्तुसिगदुतिविक्कियं यकाथासां संपुं
कृत्यानाममध्वनियोजयत उहुंरुपेदुसंयाद्यनस्यपठुषूवालि धातु काकपेऊ
षूवाऊषूवालेखित्यालिखेयविषयाजिका नमसां नांगमवे संयुक्ता नखं पयं स
एमेपिर्न विक्कमावागया एतन्मूषां गमवकदिने नयां पवाहमनकुठचाः

धारुवतनिपुं चकसिगनिभागत्वा. मन्त्रजापमहात्मना ॐ हूं २६८३ उच्चारनपयागः
 अष्टादशगमयनपक्षमिहमिहकृत्वा धातुभांगुलंकावयं ॥ १ ॥ नकप्येनामालिख्यं
 न इतलपुक्तिप्यकनामालुनकभूखंकुद्वपीउयं ॥ २ ॥ नकेश्ववद्वयनकभूखचसफजफ
 नमूखनभप्रहगं ॥ ३ ॥ दद्यान्महिनाहवकि. मनशि लायांवामहसूपेरुलिकालिखित्वा
 दीपभीषायांनावेअदसविधि वायूवाकांक्षामनुलमपविष्यतुर्हपददवदस्यनामालि
 ख्यरुक्पि ॥ ४ ॥ मध्यपुक्तिप्यनृकाकंदच्चाकिमच्चागयति कर्मकावकस्यहसूवईममृता
 जनसूक्ष्माधिकसहस्रंपविजप्यउदकमाल्पनिबूत्यानसृष्टापयज्ञामहिवाहवति अथस

१२१

कुं मानयकुमिदुति। कुं नवापि सुतनवापु सुतिं कृत्वा का वायकप्यं कृत्वा उपनिवाश
दकंपनिजप्य नवापु सुतिं मूलादविशं यावपादमं शुशु फांकोनयत न इपमिह सुं दत्वा कना
मं विदहिं तं मकुमका न साहसं कृत्वा देवगृहं कदली तां कृत्वा पयित्वा उपनिवाशं दकं म
विजप्यं किं सभ्यं कृत्वा कुं देवपुं यदि न स्याति पंचमं वर्षं नूधिनां कानां हलादकीटी कुं तः
ननाका नां हलादकानां कुं तना ला यमना नाम गृहं अहं स हं सुं हं हं यात सद्यं न
पस्यामहा मयति नूधि नं दृष्टयति कनश्चा नूधि नं वा मयति नममान हसे नागका
पुकि सुतिं कृत्वा दकिं सादि मुखवामपादनक्रमं मूकं निखन कुं नयस्य नान्ना अहं

सहस्रं ह्युपात्त धनधन्यस्य धिरेवति सर्वगुणहृदि न कर्मोऽहं कनवीनपूष्याहि हच
 वन्दनं तथा कृष्टद्वहविडंचपूष्यदानहविडया ननु उच्यते च पञ्चकलमवचपियगुणतप
 ष्यंचस्यनसिद्धार्थकं तथा निर्गुणो हनकं भलशचन शिकरुंकं चानदीवीरुमवच मननि
 लादिहलाचैव उभा लनिचपञ्चकं हलकलेद्वीजंच हिं गुहलाह्वंकं तथा पंचविंशः
 निभेनानि समहागनिकानयन यथेदं गुणिकां ह्यत्रादिष्वप्येयोजयत उपवासापन
 हलाह्वंकं ह्यत्रादिष्वप्येयोजयत उपवासापन हलाह्वंकं ह्यत्रादिष्वप्येयोजयत
 उपवासापन हलाह्वंकं ह्यत्रादिष्वप्येयोजयत उपवासापन हलाह्वंकं ह्यत्रादिष्वप्येयोजयत
 उपवासापन हलाह्वंकं ह्यत्रादिष्वप्येयोजयत उपवासापन हलाह्वंकं ह्यत्रादिष्वप्येयोजयत

पंचदापयन नञ्जम् सर्वदाधम्बुमच्यनञ्जम् संस्यन गालाहानिलनिलपंगालग
हपमच्यन इष्टगहधपंदयापुभाच्यन सर्वद्वगधेनिगसिलपंदगारुवति महा
मय्यविवादचवोजहानिललाटधनयत्सजयाहवति कम्मनवलपयकृष्णिवसाहवति
कंभाधनयनसूरगमहवति इष्टपणवातावीधमनाहियानिषलपयन भीद्युष्ट
यनिसर्वकदेवागपगममूधुधपलपयत्त्वस्कारुवति अउकोलंजामेहानिधानं
पंचगव्यनसहविवन गहानिपुवनीहवतिनकगुषुनमुलादकनसहपिवन न
लंपसाम्यनिकचक्रुवागपुस्तुक्तकैलपयचक्रुवागंनोस्यति विषदणकोल (श्लोक)

नालपान्निविं एतद्वति निमृधनयति सिंहवायुमृजवनस्पतिविदुस्वरुवादिहिर सर्वग
हस्यपविशजति पनमवका सर्वजनयिषसौहागंरुति अन्यसर्वमिदं पशुदोवधीग
होकायमं ॐ नितोक्तकपयम ॐ अथवाकमात्रमंकायचकंठे
थमं अकिंमलमध्यचपागिधीचक्रवर्तिनी पनीह्लाहपहनाहं आहामृगीप १२५
रीरुमहा अममममृहीचक्रशुक्लाह्ला अन्तर्की वृषपृषपसुवाचकीचव
हृत्फलोचक्रवर्तिनी अवाहे अवायीचक्र अष्टमीउसर्धनी नैवसंस्तनात्रसंस्त
नी नोवकीपहनीकथ गोप्यो नानी अमृगीचविमानेचानिधीकथ सगीपनी

यमान्दविहृपाचक्रवर्दिनी वर्धस्वचक्रवर्दिनी वर्धस्वचक्रवर्दिनी वर्धस्वचक्रवर्दिनी वर्धस्वचक्रवर्दिनी
पूर्ववत् पश्यपयस्वमावाचउपपीतवमदिना हर्मिनिधिमृदिचर्माचदादभोगच
उचक्रणो उदुनमनिदेचक्रानिस्माशकायमंहुकं पंचलखादेभदितुसर्वलज्जाल
किउं द्विभसुदेवीकताचमचमचउमदुल वाधकश्रुदस्मानां दानयोहीचयथा
क्रमात् पूर्वस्वदास्वजाह्याउरुनगमन्मानिना पश्चिमवजनदीचदकिशवदमा
मखा काशहागचउदवी उभातादियथाक्रमात् वज्रहातामूखीदवीवक्रह
कटीमखा वज्रचवुीचचवुीचवर्धुदिउपूर्ववत् मेहागोडाकमोभमाकातामाता

विवाजिता वीवाहं वर्धुपयथ च सर्वभागिनी मल्लुमाला सुता सर्ववीवाहं पट्ट
मालिकाः ऊढमकुण्ठयन् वीवा सर्वा ऊहस्रगुग्धवा उच्चरपीना यागिन्यवटंच
चूडमल्लिकः सर्वलज्जसंपन्नावा वाक्काकृतसम्भवाः वावाहं सर्वनामानि प्रथमच
क्रादिकंपनं वज्रवावाहितां विश्वं पद्मयानिकचनत्वं खलुकपाली महाचक्रं कंका
लंचकालकं विकम्पद्वि सुवावेगी अमिताहवज्रपहा वज्राई कलिकंच वंजं किलकं
थ महायागिनी वज्रवावाहं १ सुहृदी वज्रहृदी महादेवी वृषाङ्गी महाव ५ जं ५ लवत
वज्रकी कालमूल्या कागगहोपमन रुवी वेवाचनी वज्रसत्त्वमेहा वज्रवावाहं हनज

१३०

किंती २ धर्म्यं स्ते ४ भाऊ सुनाउ पायं चि ह्वजकी १ शषंताम यथा दवी स्त्री लिङ्ग पति रुका
वयन षट्भनान्च चका ४८ हावायापि नथेवच गरुपमष दवीनां स्त्रामिदका वयं त्रुं
किंलुस्त्राम्यादिषु चकं ह्वजल्ययथ किंतां कचं सर्व विहावर्न च नूतन सस्त्रकं नामागु
भाहृदहिना निर्मोक्षकायिकीत्मकी यांयस्याचकस्याद्याहृथा गिती प्रथमा ज्ञती नया द्वाद
नविहृया संचारी पी ० प्रपीठकी १ शषावया दधीरुमी धनका क्षदिवा सिती वजादीनामः
विहृयां पूषलुल्यादिकालकी वीनीश्वरी हीनथ चैव नमभनवासि कथनं दग्धं च प्रथमं इ
यं द्वितीयं चोप्यदग्धकी रुतीयं त्रयं चोपि चतुर्थं चाप्यस्त्रागिती पंचमं हीनमभाषा कीष

पूंचापि हयंकरीं सप्रमग्नलहिन्रुडधकलुग्नसूमीं महानवकपालाश्चमृष्टमम
 नकसदा सामान्यमाकसृकाश्चपातिजागान्चरीनय अन्वरीरुगाम्नावीरुनिबकीच
 पिभचकी तानावजवसंधाचयागिनीपी०वीनकी खचबीरुचबीचमयापिमहर्षिका
 ४ कपिनृसुक्तिमानन्दमहोसमाधिकाननात कचन्धचैरधावकोन्यासिबहीनाकुनेह्य
 कं सप्रकापादहीनारुगिबंरकंकादिदुवुकी प्रवमवकिमोध्यपिकावयंनैरुकादि
 नानावेर्गुतांरुयावाहनंयस्यस्यरु निष्यन्नंमगुलंहाव्यासंवाधिकावठमत्सनां या
 दगंरुवजंचपूननपिहादगंरुहं सर्वकर्मशीश्रीतीतातिर्यग्मूखाश्चदवति का

१३१

उत्तमसमाकृष्यविष्णुमह्यदयत्तुवा न समस्तयमवजीवसापनंकवृत्तविधिं अथान्य
कमसंवर्जं न सायनविष्णुमं येनविष्णुतमागुभासाविमोयापलज्जुभा सामसिलकक
मुनीहैषधुपीकचन्दनं पथधुयक्कमागुभाजगामगुभावंचनं (१) धुयचकुलोत्पन्ना
मध्यमोज्ज्वलिसकवह सामान्यमुनीहैवहीनचन्दनवर्णविवर्जयत्त वक्कवर्णसुखदोगि
हृत्पञ्चकवजसुवाः दालिजास्त्रिगुधकैशीयासुगन्धा कृष्णवर्णको नस्यापथ्यपथासुवा
सुवोहिंसकसिद्धिदं शुक्लपञ्चपसेर्वायादयभक्तकृपादिभक्त अथनाशुचाचिगुधसुख
टिकसंनिहं पुसस्त्रासमिक्तमनाहिः स्यात्संगहसुगीशुहं हनस्पवत्तसं (१) धुयचकुलोत्पन्ना

संग्रहं वं जीवादिहाजनात्मनं पीकचन्दनसंग्रहं गीर्षजं नालिकाख्यानं मांसजं च द्विधायकं
उरुमं गीर्षजं सर्पिः मधुमं नालिकाख्यानं श्रुधमं मांससंयुक्तं वसायनविरेधकृतं वं
षपूहिहचन्दं सुवृक्षसर्वलज्जतर व्याधिघ्निसृगनाहिसोहं षजं भक्तिकावर्धं चतु
रसमो हृत्वनिस्पृष्टप्रसंवर्तसदा चन्दनमिषाकृतं चन्दचवतितापिनि सूर्यसूर्य
क्षप्राकृतं सूर्योवहगिषासुवि उरुहृत्सुसमायासं नस्यदद्याचनिस्पृष्टं षष्ट्यासक्त
कपाक्षानश्रुयवर्द्धनिसर्वदा वामनस्यंप्रदानतपानि शुद्धनकर्मक्ष जीवनिगुजं स
र्वशुक्लपङ्कगभीयथा निरंजनपीकहविर्गं मलामलविवर्गिणं शुद्धं अहवयु चतुदासविव

१३२

जितं धीमाविनातः सगुणं ह्यदहं परिपालयत् साक्षात् शिष्यं समायुक्तं गुरुतः प्रवृत्तयत् द्व
तात्रा धनं कार्यं अलिखति समन्वितं स्वाधिद्वयेत्यागतं अविदितं सकृज्जापितं दानपूजं क
तं कार्यं शिष्यं सकोषकावयत् निम्नोक्ष्वातसंप्रापि निश्चयनिविष्टीकृतं शुखमाप्त
तसंप्राप्तं भोतं कृत्वा शुचिमाने सुदहं सुधयत्संम्यक्तं शुक्लवत्तानि च कुरुपश्चात्सुव
यत्केर्मदनावर्षादिना वक्तुं वेद्यं च संवक्तुं सिद्धिकामसुधी सदा दादमसिद्धिं संप्रा
प्तवालिपालिगवर्जितं नानाभागाविनिमूक्तं जीवदाचरुतामकं द्वाशुभमनूष्यातां मुनि
नां रुवति वल्लहः पंचगवहिवम्बुनां निशं वाधु रुजयत्सदा उक्तकर्मसंपूर्णं मिष्टुसि

द्विप्रवक्तुं कामरत्नसमदहं स्वचविमिद्विमाप्रयात् वृक्षांगीनरुकातनुनिगुणी
 चाप्रवक्तुं ४ धृष्टपञ्चनिर्योसकास्तुनिचन्दनान्वितैः ४ उग्रपतिपदस्योक्तं च
 वलिसमन्वितैः ४ सर्वभागाविनिमक्तिः तिर्विषयास्तकानिमान् विद्वत्तचन्दनात्
 नीचवर्गुणीकलयासह कस्तुर्योय्यैः पितृवर्षसहवर्गिज्जानुजो ४ विद्वत्तचन्द
 नचर्गु कस्तुरीसहसवयवत् यत्मासमाप्तसंभवादीर्घासूयात्सवृषवात् वस्तुनी
 विद्वत्तचन्दनात्पादाभाभासंस्तुनं यदपीवसकगंपीकसहवर्गिनिनूजावृजं चन्द्रमार्गिक
 पायाभाषणासंस्तुनं यत्सकजयनसिद्धिः विविदितातल्लसंस्तुय एवंसर्वकि

१३३

यादीवानजयागिनीकुलाद्रवा निर्मोक्षकायमखिलंयाग्निविधितरुना ॐ
ॐ मिथीवज्रवानाहिकल्पेति कायात्मकमहामहामन्त्रप्रयोगसमायसविधि ॐ
मूथेवज्रवानाकाहुपूजांस्तथायथाविधि ॐ शोधकप्रवज्राभिः मूद्राद्वगुर्वस्यं चं
विकोचतथावामाजकिनीविकीवगर पगहकानेवदिनी पागिनी षट्पत्राकथा वाम
हस्तदुमाहुदर्शयशागहदिकां क्षिप्रिमेवस्यदुवीनाश्चक्षिविधिवर्धकां तथागकव
जसूर्यंभ्रातालिकपनमाश्वकं हनूकवागहस्तांविस्मृयागंविश्र वचनमास
कीमावापायुवाचनवास्मिकार वज्रधातीश्वदीहयावचोवमितास्तथा अवक्षिपि

धं ह्या कुवा वा सर्वं गतं किं किं गार्होदिकं तदुक्तं तथा जाकादिनायकी करुण इत्युगतादवी
 अर्जुनी वृत्तगतिं गुप्तं सत्त्व तथा देवी कलहस्त तथा गतिं नखशुकी तथा वीज ० कलुप्त
 प्यागिनी अग्रहस्त मयकुगुप्त विस्तर्ये दध ४ यायस्याधिपति चंद्र तस्य तस्ये वल ऊयत्
 सुवाह्मि प्रयागम कोशिक नागिकायता रुज हो जन कर्तव्या स्मृति वल न चात्सना ४ सुग्रह
 लुमहाम्ना सुसूत्रा सर्वजा नजां वाह्का नाति सूर्या रुगुगहना सागु सक्तथा रुजयित्वा
 विषं मां च सुश्रादयं च वृषिकिं कीनी खन सप्त रुकु सुमं चिगु वीज कीं अवंक नाति
 यागिनी हि ४ सुगपून प्रसु स्यनी काद लुगुगार्होदिकं माता संविश्ववपकीं समन

१३४

सा स्वादतंचकीयनानुसंगयः ललनास्त्रवसामर्थो गतं वीरुमना ऊवं कल्कालवसदा
मूडालसमवीनशुमया प्रवीणाकिवाधिचकं सातनदपूना साधकं नाभ्यापोयस्त्रिसंसा
त्रिभुक्तिः मयाविना यागिनीगठपस्या रुसला रुक्तिमहायसि सफूर्तिमसहाचकं
मकुडुमकुडुसाधकी ओं समकुहातिविमृद्यमन्त्रमिक्वा नाहीनियत इह इह इह इह
दृष्ट्वा स्वाहा हा ओं बंचकवा नाहि य इह इह स्वाहा एवं मकुवाजा नापित रुमान हविष्य
हि भस्त्रिसंहात्रकवा रुदं पदं मूडाहतां प्रहृष्टाया मितादबीवर्तु संस्ताने पूर्वकीं प
तिमूडामर्वरुहितदागवाश्रुतिरुया अहं नया महामूडा सिद्धा हि या निपुनः नन

[illegible]

१३५

[illegible]

93E

हो मयत्त

च वावाक्काचकबुद्धायागाद्वीमध्यमयसुथ कासुखंकस्यवताडुकापनमार्थलग्नचनं
लिप्यमानंमहायागविज्ञनंकाषकर्मनं गमनासर्वसंधर्षजनासर्वमहात्मनां कपा
लसंपुटवधार्कलोहामंविधीयते अतंतुससमाख्यातंममयंप्रतिपात्यते योगिनीषू
जयन्निशंभामपानंदिनदिन एवंकृतसुमकुहः सर्वसिद्धिप्रदायकः रत्नमानसंरुप
लाज्यवामरुक्तनहामयत्त सर्वदेवसर्वनरुक्तहागादिनिदरासह वृद्धापिवसमाणा
तिकिंपूनःकृदमानुषाः निष्ठावनंयनंकासंस्वदहाद्वरुक्तंरथा नान्नामशाकहा
भनंसर्वज्ञाकेवसमानेयत्त गजस्ववायानकनरुक्तंमूनीर्गुहाजनं संयुक्तमोनधेः

करणे ४ सद्यमाकवर्षा पत्रं ह्यकाया घनम् जीर्णं सुकरं ४ हा मय धूध ४ निचका ह्यग्नि
संदिफ सद्य विद्वषनं पत्रं काकपत्रं कृत्वा मधुपुराग्निं समाहि न ४ कटुं नैलन संरुक्तं स
था च्चाटनमावशं नवसहस्रा इति च अग्निचावाडा जमा प्रया ताथा रुहा कि आरुनी मा भनन
कृत्वा च ४ कस्य मात्सक या इव दानिदं न गन्तुं कृत्वा न गतेनं सार्यं न यस्तु सतव कृतवत्तु
उक्त विंशति वा ४ सिद्धि न नाग संशय ४ अतः जगित या म्पु कि ४ सिद्धि न मदना सुर्व ४ को
विद्वल ताका नां आरु दाम्य रुक् च ४ की ४ रुक् न सिद्धि म्पु काटि कि ४ पवित्रं ४ श्री
वज्रवा राही कल्या की ४ रुक् समाया रां वजाचार्य पत्रं कृत सर्व जीव न सत्त्वां सिद्धिं

क्रिष्णलोकप्रसमाचारनक्तिनं चवंहामक्तं सिद्धिः पूर्वोक्तथागशागिकं तथागस्तुपनाक
र्मनकर्मधारोर्विना मुक्ताकिदादर्शोऽकर्मवायुर्वाहनकांगारः हामस्त्याकनपूष्यउरुय
सक्तिमीलनात् द्विनाहिषमलायाश्च सर्वसन्धिषूकपूतः तस्मिन्काले विरुयामक्तः
चनेऊमऊनं अपित्वा जलद्वारा गुफं कृत्वा सिद्धिसमक्तः कृत्वा यत्कृत्वा द्वाका नपंचा
भक्तः काष्ठातिष्ठापयद्भूमौ स्मृत्वा जस्य मक्तिः कृत्वा चेतनं पृथमं सफमचपूतः स
च तवमस्त्या नदद्या कृत्वा दर्शनात्वा नक्तं सफदर्शनात्वा नक्तं च जका विंशतिरूपतः एक
विंशच्चकानंदद्या कृत्वा विंशतिगुका नक्तं सफविंशतिगुका नक्तं दद्या कृत्वा विंशतिगुका नक्तं सफविं

भक्तमंद्यातद्रुकावंधाजयदूध सकचत्तामिंशसुकावंधापयद्रुध जयचत्तामिंशसु
हसनवीजनिधोजयत् सकानपंचाभमदयातद्रुकावंधासर्वसंरुक्तं विनीयकाष्टपूनदशाक्ष
दोतासादिस्त्रुनं षष्टकाष्टरुधसुपवधं सर्वकावगठं द्वाभंगकानंदशाखादशपकावग
ठं श्रुष्टादशद्रुकावंधाकिंशुपनमाजुनं श्रुष्टाकिंशुद्रुकावंधाचत्तामिंशद्रुकावंधं
चोचत्तामिंशरुधसुकावंधापयत्युनरं श्रुष्टचत्तामिंशमलीइंकावंधाहगंसदा
श्रुष्टमरुधसुकावंधासर्ववर्णसुयंपनरं चतुदशजकानश्चपाठशचिरुकावंधं विंशमश्रा
कावंधं चतुर्विंशगकावंधं षड्विंशनपूनदशाकिंशमवांनिधोजयत् चतुस्त्रिंशपदं

यास्तु-षष्टिभवा कानकंगथा वाचस्वामिंश इंदया द्रजयस्तु समासकः वाद्वभनास्तुकाष्ट
धं साध्यानांमविदहिताः इंजावसर्वकाष्टानांमध्यसाध्यानामंलिखन् मूलमस्तु समावष्ट
वजमानस्तु कानयस्तु यूगमचक्रं समास्तु ख्यवग्धकृत्तुहमीचल वग्धद्वे समास्तु लिख्यस्तु
वजसमास्तु वं आगेदुतिनदा नीधुं वृद्धवजधनं पिवा समयं कर्तुं व्यापंचामस्तु निपातना अर्थ
स्त्रिकहाभनस्तु नव्यामस्तु नायकी ॐ अथ कर्मचनं वं वीनस्यादयथागतः ४४ यागिनी
गुक्तपूजाचसदालिंघवलपदा पूजयस्तु तास्तु वं वृद्धा सर्वनाथोचसाधकी पिग्धचमलम
खंपुक्तिप्ययावदिदुति तावत्तिगंकर्म ॥ इति नास्तथाप्यवदाम्यहं ह्मीलनापिलगैल

नपचयादकलापकृत् कलिगं हगवतीविश्रुतां सर्वकालं नयं विश्रु पाथकडकभाहिनी-
श्रुग-भालिचकानिच समहागभानिकानिकानयद्विभिचेषमहाकृपः श्रीकृष्णभक्तपि
कृष्णकृष्णतावद्विहसिगङ्गं प्रमेषमानमिदुकिचकृत्पुमाभंरुवदिकिभीयुमपुष्पादकन पुजा
लयकपूर्वपुमाभंरुवकपसकभक्तं चरुवकिलंरुथपनं नवनीकदीनस्यमूलंमधुना
सहंरुगेर पिष्कानाहिलपंदत्वाकोवलिगंनयंरुति नजनीद्वयंसंगृह्णमवामिदिकंरु
मा पुष्कृद्वयंवाथिकंचयावत्युष्कृद्वयंरुवति अवंपीलासफदिवसतिप्यादयदसायनं च
वंयागवनेरुहंरुम्यकीनपुष्पाधिरु वाननस्यफलंगहिलाचूम्नचूर्णंरुकावयंरु स

१३५

कलियुगमायुर्कं वशीकवक्षमरुमं वज्रवागहीजाप्यमाभाम्युयगापिवस्तिरुः सफज्जक
नरुर्जन्मोभवसेव्यनरुजनं यैयंचिरुयगिरिसचरुहिसर्वपदापयक ध्यानवस्तुसर्वरुच
हृरुहाश्रानथानकं रसर्वमात्रयाभेऽतीरुहीचाप्रविषनयने अविवावकनकच
उकीरुत्वाहसाधकं विद्ययासफज्जभनसस्यगहननरुन पदपूनेषविवावहवगच
नान्यथा अतयाविद्यतसहृरुफनोदकमोर्जं एवंचयस्ययस्यरुसचस्यनकगूधिनंभरु
हृविनंसहृवक्षभजफननूपधविनं सर्वेषामदमाज्जहवगंनारुसंश्रयः क्रियेदह्मासु
पाहुनाजानांचमहीपतिं श्रीकपयक्तितां सर्वासेदह्माश्चापिसाधकि सफाहिरुमस्तिरु

कृतानि सायां गच्छति स च सनवन सफाह श्रुभादिति न संगयः एवं कृत्वा कृतं सर्वं कर्म वक्ति
 पश्चिगात् स्वयं यद्यनया गमत्सा सिध्यन् ह्यनया नगरं यत्तुं धातुकास्तु कं हुनाति कास्तु
 नृपिकाः श्रुजन् च महावायुदेवता सर्वगमिकाः वज्रानाही महादेवी या गिनी ह्यनया
 गमोः ॥३॥ श्रुतिं जीवज्जवाहिकं त्रया गिनी दत्तं त्रयं होमयत्तु लज्जया पटलः श्रुत्वा
 दत्तं पटलः ॥३॥ अथ पुनरप्याह चरुगवा च ज्ञाया मि किं स्रुज्या गिनी दत्तं ह्यया
 यामिनी यूपया गतः पुनरवलम्ब्य विहृया यत्तु मन्त्रगति स्तुतः पुनरिदं यागस्ति न यागी मन्त्रं
 स्मरुं ह्यनया स्यात् स्यात्मा संतुष्टिः स श्रमाय हं तं सर्वं कर्म मन्त्राति संचाग ह्यपनाहं स्रुत्

स्वाध्यायविदुषः सर्वपापहरकर्म हन्तुमाक्षिमस्तु कर्म कृत्वा मलमन्त्रस्तु इत्यपि त्वामृतसाकुरु
हस्तमधुचक्रं सफटिं भासकं कुरु तन्मन्त्रमातातुवाधिर्जं यावदाकाशसादवीनायकीहि ८ पाया
सिकां कंकायवानविहसतगत्वास्तम्भनमात्मनां बीजाकुनं कृत्वा सत्ताड्यत्तिशक्तिहिंसदा
जुक्तैकस्य विदुषः स्रक्तचमलमन्त्रं ॐ महाह्वनपिण्डसैर्गन्धनपुमिहाचवर्ष सा ईं हा हूँ नि
हूँ हूँ स्वां हूँ हूँ हूँ स्वाहा ॐ हूँ हूँ हूँ हूँ स्वाहा एवमन्त्रासमूहं तावन्तु नृपं कुरु कर्म
॥ हावयै गुह्यमरुधागामरु सुवपका वलिहामन्त्रं कुरु व्यापञ्चकर्म समावर्तक
जागवज्ज्वापकुरु कृत्वा मन्त्रिण सदेवतु यत्तु चक्रं पञ्चमि सर्वसत्त्वहितादयं पूर्ववपलु

चक्रमूलकामसुमिमंन्यसक्त वेशचनंप्रथमद्वितीयविन्यसक्त कृतीयइंकावदशाकपंच
मडौकावकं षष्ठ्युकावकदद्याइंकावंसफभवदु म्रष्टमहेकावकंदद्यादशमचष्टकोवकं
हादशइंकावंदद्याचतुदशगकावकं पंचदशमकावकं षडंकावकं सप्तद
शमकावकं चतुविंशतिविन्यसक्त विंशत्सकृदकावदद्यातद्कावंचैकविंशकं चत्वारिंश
मकावतिंशं द्वाविंशमस्तथा पथद्वैतुवौ षड्विंशं द्वाकावंदद्यादष्टविंशं सप्तकावकां च
त्याविंशचवांदद्याद्वाविंशमृज्ज्वास्तथा चतुर्विंशयकावंचपंचविंशनाजाऊचौ दशच
त्वारिंशं द्वाकावंचोचत्वारिंशइंइ कोषचचत्वारिंशं गगुदसफचत्वारिंशं नच म्रष्ट

चत्वारिंशदशाहं कानाकन वचरु हरासकं पनर्देशादका नयंचाभयच मूलमर्क
लिखितं पांचरुषं कषसाधकां हयणी बलिं वसुधो मम कात्य निवद्विहं द्वितीयं नामा
वर्हचसं पटं यत्तु यत्किं शुभ्रकन वचात्य हि विहं पासहयामिनी नागभक्तु वरुषं
चदनादीनां लुमानं सदा कृपात्मका योगी सामनां स्वभिहं जंपनर तथा मानिक सर्वहि
षापि सापिचइहकं नान्यंच मागो भसिद्धिः प्राप्ता इह चरुसा सस्वभां रूपाय कर्मकत्त
र्वं जीयमं क्वं वं शुभ्रक हसं कया जकं कर्म किंचित् नागनाज कथा चाक्षो हावयं नान
माक्रमान् प्राक्षानां शुकि विहं यात्रा भाग्यपालक समातापन नाग रुध्वा नासह

चपयकं ज्ञानसूक्तनागचः नागहृत् हृत् प्रसादं कर्मकदिकविहयसूक्तनागचः दवदः
विजयसूक्तनागचः धनजय श्रीकर्मसंप्रवर्णनमचकनविसृजनं वर्षापनककननितानमं
समगायनां तातिन्याविहयनात्याविहयनककथा हृत्नाकोशद्वयं चान्यदंगविहयनहृत्
कं हृत्कोशद्वयसूक्तं दद्यात्समाधिनागाविधकथा अन्त्यान्यंपंसमावाकं नागीन्याहृत्संगकं
महावज्रनागाहीमन्त्यामाधयनागमन्तु यथाक्रमेण प्रवर्णनं निश्रुत्पुनर्नदिसंघिकं य
त्समाधि धानतत्विहयनागनातिनी इत्ययं तीतकं हृत्कोशविहयनातिनी इत्ययं तीतकं
यं कर्मनाशकं हृत्तं कर्मवसन्तयत् वृषपदविहयनातिनी इत्ययं तीतकं हृत्कोशविहयनातिनी

मात्स्यांरुत्तात्सुदनाम् सर्वाधिपत्यया गच्छं देवताकीयकथम् नान्यदेवसमाख्या कंवा
कल्याणि कंयनं ननसर्वोक्तिभननया एतानजायमदुष्टम् सत्ता नंवा सहादावावाक्यमधाय
पशुति वासनाकृत्यका लुनमधनामाश्च पशुति ॥ १ ॥ हगवा न्त्वामिवजवावाहि रु
अगकस सर्वयोगिलि समायागम कजमत्वसुखंपन ॥ २ ॥ विधीवजवावाहिक
अमहायागिनीकलुवाजयका द्वा कलनो गकर्म विधिलज्जम विधिपदमेत नविंठाकिर ॥ ३ ॥
३ अथमनपूजयित्वा देवापजांकलुवा वावाक्वा वागयक नदुष्टादेवपुजावाधन जीमा
हनीपुयागनकाया सर्वेषकालकेर समाधिसेवा चान्द्रकृदयसमवलिर्न ह्यमनादेसवीज

दुदिमध्मास्तिनापिच हादशंजाहियप्रहृषकिं गंयागिनीसदा तस्मिन्कंरुस्यजाहिम
 ननयाहयादिकाः नवायानचसाद्वीव्यकाव्यकसत्रपिका कामधन्वसंपन्नार
 माकुवपाठुकमोक्षां आकाशचवतधम्मोमूकिसर्वविदोक्तवान् सफकिंभन्मकंमध्व
 हावधत्मावकर्मकां यंयमात्तकमोक्षिदुकीयेकगुवदाहक मोसमन्त्राहकंवापिरुथाप
 चानकव्योदिकं विषयाकिंलवहाधुनागमानस्यभानकं स्वतर्गन्त्यावृद्धिर्नचच
 कंलहापुयत्नः यमयत्नसदागस्यक्रियतेनान्यथावच पृथक्काष्टकंस्त्रयाभक्तुमात्मा
 मिमांस्यस् वेलाचनपथमद्वितीयमविधीयते इतीयंरुजानंद्यात्यंमव्यदायंत

था षष्ठ्युक्तानां कंचेव श्रुतानां सफमपुनः श्रुतमहिर्द्वयं च नवमं फल्कावंगथा दशमनि
जानं चैव द्वादशमं श्रुतानां पुनः द्वादशमं फल्कावंच गजानां च त्रुदं श्रुतं इकावंच द
शतं फल्कावंच श्रुतं चतुः सफदशमं फल्कावंच इकावंचानां विंशकं विंशमं फल्कावंच दशा
तमं फल्कावंचैकविंशकं वैलाचनं फल्कावंचानां विंशमं पुनः एकविंशं फल्कावंच द्वादशमं
वैलाचनं चतुस्त्रिंशं फल्कावंच चतुः पञ्चविंशं फल्कावंच चतुः पञ्चविंशं फल्कावंच
था षष्ठिंशं इति इदं दशा सफविंशं फल्कावंच श्रुतं फल्कावंच द्वादशमं फल्कावंच
पथं एकचत्वारिंशं फल्कावंच चत्वारिंशं फल्कावंच द्वादशमं फल्कावंच चत्वारिंशं फल्कावंच

को चक्षुश्चाविशमद्रूपं चक्षुर्विशमद्रूपं सप्तचक्षुर्विशमद्रूपं सप्तचक्षुर्विशमद्रूपं वि
 धामसंपन्नसंकीर्णस्य सप्तचक्षुर्विशमद्रूपं वांकावंचपूदयादिकानपंचाशकं एषाठमं कवेचा
 मर्तुंसाध्यनामविदितं यमनेरव सर्वकाशवहस्योदादि संन्यस्तं दृश्ययमरुमिलुनस्य
 सप्तचक्षुहावयत्त एतद्विज्ञानन्दहमपनयत्त आह येष्वहिवर्गजद्वेनिकिविवागर्ककठ हल
 कर्म्मोन्नपुरुगृहसर्वसूखालयं नष्टकर्म्मोन्नपुरुगृहसर्वसूखालयं नष्टकर्म्मोन्नपुरुगृहसर्वसूखालयं
 तावांचुवर्णाहतावप्रथं सप्तचक्षुर्विशमद्रूपं सप्तचक्षुर्विशमद्रूपं सप्तचक्षुर्विशमद्रूपं सप्तचक्षुर्विशमद्रूपं
 नायाविचक्रहोः कर्म्मोन्नपुरुगृहसर्वसूखालयं नष्टकर्म्मोन्नपुरुगृहसर्वसूखालयं नष्टकर्म्मोन्नपुरुगृहसर्वसूखालयं

कनकं कदाचित्कालवसतु कर्मपत्नसिद्धिनि तस्मात्पूर्वकर्मचवीडुगित्याविचंचकौ
 ४ धारुवीनस्वरावाडुमगुमगुडुहयनं कनसाचिकमात्मानं सत्वधाडुषमवचो कृपा
 मृत्पाश्र्मपत्नसमानांकीयकधुवं कृपाहीनानसिद्धिर्न ॥ १० ॥ हलाकेपनकच ॥
 ॥ ११ ॥ विजवावाहिकल्यथा गिनीसहाकुरुगुं कवचमूलमनुसमानाकर्मपटल
 ४ विंशति ॥ १२ ॥ मृधुडन्महिकनकां प्रयागं सर्वेइन्द्रा कथंयागिनीसमास
 नखगमननाप्रयागगठ वीर्यसंवाध्यने धर्महिमात्तथयसंस्मिन् नारिचक्राषमरध
 घृहावधचक्रताययं रयत्पमात्मनाश्रिमात्तवजात्मसात्मकी नृजिफंसनवारान

गायनासह गायन्धनध्वनायककवचंरुतयागान चार्यमाख्यानचाप्यममस्यसक्तिठमहिदुः
विस्मयनंवायनासह मयाकालगतताचयठपठ्यसर्ववैकुण्ठं सख्यकादृशवसुधुदुर्गा
दुहानयक विभक्त्यमूलंरुतयागानचाप्यममस्यसक्तिठमहिदुः
यन्तुजगन्मयादीयैर्वैवाध्वेयंरुतयागानचाप्यममस्यसक्तिठमहिदुः
दर्शनोक्तं जोकालंललचिजोह्यनंस्वयंवीनवराधिनं माचाऊवुंस्वमवययस्मात्माकावपद
स्त्रिं लयगागमवालनयाजायमकाववपकं श्रुतासत्वाथंगद्युक्तिस्वयंव शार्थवदि
तां सप्रतिभामंस्वकमस्वरावययकर्मयोगिनी वर्णद्वयपथपर्वमक्तयोगमसमूहवा

ॐ श्री कुरु वे माना लागम धा नां विष्णो र्नाम धई ॥ इंकुट म्कुट न स्वा विहा डा पठा य इंकु
टुल्ला खाहा ॐ खेगा नन इ २ रुट लाहा ॐ किमकु यागात्सो पुष्टं प्रायस्व हावची यंकुच
कस्य वक्रा मियथा च दन पूर्वसः ॥ पुनश्च कंसदाये च मकुमाता मिमं न्यसक्त पुंथमवेनाच न
चाद्वि कियंरुति आउयत रुताय सक्त द्याकु पंचम वदमादिकं न्द्रका वंषष्टे म द्याकु इंक
नं सफ मन्य सक्त श्रुम सक्तान्कु नवम सवदा पयत दशम इ विद्या कु द्वादश गको नं पन
४ कुयादश इंकानं च चकु द्वादश इंकानं पंचदशानि कानं च इंकानं धाउला हा मक्त स
फ दश फला नं कु इंकानं धाउ सन्य सक्त इंकानं विष्णु म द्याकु कानं च कविंशकं वश

[illegible]

वाधिना नागगतिमहायानां स्वरावं सर्वयुक्तं वेताङ्गुलशुद्धगतिमत्येषु वंचनां
अन्ययानरुपचापिदशनापूर्वकर्मिकां अथार्गचक्रवक्त्रचक्रवक्त्रप्रयोगात् पुनपुनोषवाध
ऊषीतिनामसमासतः संकृतं सर्ववीराभं चक्रवक्त्रादिकर्मिकं द्वाविंशकपालवक्त्रं हस्तैस्त्रयद
लकर्मिणिं चलेकिमर्वकालेनास्यादष्टमाधैतयं हस्तवाकानवपात्मागतागतिमुक्त
न कुमास्वामनकूर्योऽनुदिव्यमदागनालयं स्वयंविश्वसुखपुगातिमर्वात्मकं वि३४ वपन
नरुवद्रूपसर्वकालवधिमान क्रियाप्रवर्तिनान्यस्यपुनवकिष्कृत्तंमनात् गमहयदावयं
तस्यकर्मतावद्भुक्तं यथाहोवस्मन्नयोगीतं चक्रवक्त्रं पुनितं कंतं कर्मिष्ठानात्यं कर्म

[illegible]

[illegible]

नाष्टाकिंशुनेकाक्षचत्वारिंशकं चत्वारिंशश्रद्धाह उं ग क च त्वा विंशम ग कानं चत्वा
विंशकिं चत्वारिंशहृदयसक्त इं कानं चत्वा विंश इं पंचमसक्त सफस्तिं चत्वारिंश
हृदयवयपर्ववर्तिनां मन्त्रोक्तमय चत्वारिंशपञ्चमसक्त सफस्तिं चत्वारिंश
सक्तिहृदयसक्तमन्त्रोक्तमय चत्वारिंशपञ्चमसक्त सफस्तिं चत्वारिंश
मन्त्रोक्तमय चत्वारिंशपञ्चमसक्त सफस्तिं चत्वारिंश
यं यामनालयो वंशचनंप्रथमकुटुम्बमय चत्वारिंशपञ्चमसक्त सफस्तिं चत्वारिंश
नक्तं चत्वारिंशपञ्चमसक्त सफस्तिं चत्वारिंशपञ्चमसक्त सफस्तिं चत्वारिंश

१४८

भवेषाचनरुगकानेकादशस्यसु द्वादशद्राकानंचतुषादशान्कानकं चतुदशान
वीजंचपंचदशद्विंशं तथाषाडशोदकावंचसप्तदशोवेवाचनं श्रुष्टादशद्राकानंचतु
कानविंशगुण्यसु विंशमपकावंदश्यादवाविंशयथाजयत द्वाविंशइकावंचतुविं
शइंद्रनसु इकावंचविंशदश्यास्तफविंशयथाजयत इकाविकातविंशतुजका
वाकंचेदापयत विंशमसेवदश्याकुपीकावंचेकविंशका द्वाविंशमइकावंचचंद्रका
तुयविंशक चतुस्त्रिंशकगकानंदश्यातहापंचविंशमन्यसु यद्विंशमसेवदश्यान्तुग
हानंशद्विंशइंद्रं श्रुष्टाविंशयवीजंचतुकावंचत्वाविंशपरं द्वाचत्वाविंशदश्याइचे

कचत्वाविंशकहकारं वाचत्वाविंशकनिकयंच वाविंशक चाचकुचत्वाविंशकविपंचचत्वाविंशक
 नां सफचत्वाविंशकगचाचत्वाविंशक हकायानपंचाशदुवगाउयलमादि(अ)क पंच
 काष्टसूत्राध्यस्यपयोगित्याकांचेष्टसक मकुंमंदर्गपदुचवगाउस्यसूत्रन्यस्यक वावाकाउना
 मतप्रित्वेयकुमहाकूपर वजवावाविजानीयाइच्छाकनंविचकताः श्रुपकाधंमहागुकंसिद्धी
 हेवजन्मति श्रुतवाविंशककुंशागीहावनाविनापिगः पुनूववाकादशषयधदोविहमन्युउठ
 नस्मात्सूत्राद्योउगुनूवागधयसहात्महिः कनउदहनलसककयसमगाधोधिसंतनः मसूत्राप
 विशाविगोउदययकवातनः मेश्वसिद्धिविजानीयात्मान्यजालयपुमिद्धक नदस्याहकगवान्

१४३

वृद्धावाकाचीनताप्रकीं सर्ववीभन्वदीकल्पवजसत्त्वसत्त्वान्तमं ४२ ॥ मिथीव
ऊवावाहीकला महाकलुभाजं मकुमकुचक मच्चाटयक कर्मसक्तुषु कविंशानिह मपकल
१ ॥ २५०० ॥ अथ रुसंप्रवक्ष्यामि यत्कुविदेषषां कथे ॥ रुतवगोडयगलं सोनिनीच
पुयागानं ४ यनविह्वलमाकुहासिद्यं कलाकुहयनं मरुविंसमरुमाहिलकं सफदिग
मिच रुतमानसमाख्यातामकषां कल्पनायनं सोवाहृत्तातमासाद्यंगपविचकुय
कर्म वाधिसंसयसात्रागिचिहृयागुष्ककाम्यका हृदयं कल्पनसंधिनक्षोसहस्रम
वच संधयगिमहासयं सोवाहृत्तातमासाद्यंगपविचकुय कर्म

कु.स.भ.पिचयाकलिगतावजसत्याकथा समापदिजायमानेहुगुष्ककाचानुकायं
गुष्कभंनंविहसतंपूर्वेनगुष्ककावशी. नेवात्माकनननंषुतीकावाजुवसुचिं न्नादभनि
चल्लेतातिषहचकिचेसहसुकं कुतलोवीसमाख्यातासुतामिसुविचउवाहकमसाया
सुयासंधिसहसुषाकिधीयन चहुषष्टिसंस्तुमिअष्टोत्तज्जसोत्तिकं पिनितास
वसाभुपुसाशष्टकल्पसंश्रया सावित्तकाविसरव्यथत्वाविस्तरसमेच वाकिंनस
ह्मिनिचत्वाविगजसहसुकं कार्यकनयासंधिश्चचहुषष्टिमवचं पुनयांसावाह
प्रासिद्धननासंसयः वाविष्यमिगनाथसोवाहृदीपरावना पूर्वविदहउरुनेक

अपवर्गमजानि जुवच अकमांसो वायु मसिद्धनंतासंभयः कनिष्ठासिन्धुनाथ सो वायुः
दोषहावना पूर्वविदह उरुवकुन अपवर्गमजानि जुवच अकमांसो वायु मसिद्धनंतासंभयः
हमिचवस्ति ताः अन्वेष्टोपशुभो जाते सिद्धहमी विधीयते उपदोषस्य जातस्य पृष्ठ
निर्धेयतादयं सो वायुः दोषसाध्यान्कपसक्तं सर्वमक्रिया ॥ ४ ॥ मरुत्कं पीत्वा मरुत्
जवयस्यचिन् विदधनं कदापि ययुर्धकवर्किमानसं सो वायुः मरुत्कं पीत्वा मरुत्
हन्तासं नच नावध शासनमृधवा सो देयं किंच अस्मद्व्यापिमरुत्कं विदधं पाण्डुपानेकं ह
पयन्ति न ह्यदहाकुकां सर्वमधिगमं अंगपविचयनेन वजनेनात्मवाधिगमं अतनमरुत्

शाश्वतविद्यमधुमात्रं नृद्विषयं सर्वं विषयं ब्रह्म लोकिं कृपयासाधितं न बाह्यं
नाम किं ह्यहं तावाक्काचक मरध्वं हाव्यं चकनायकं क्रमध्वं दशमूपाहिस्वितं
वावकमायध्वं तस्मिं काले च संरुतां सफेसिं गम कुवपूच पुष्पायासं वृषादेविहया
चकनायकीं ओं वज्रवाक्का सर्वसमरूपवर्षरूपनायकं ३ रुद्रं ३ स्वस्वाहाहा ओं सोमि
नीयं २ रुद्रं २ स्वाहा हावितात्मा मेहायागी कर्मकुर्याथ पित्रं सगमनां गमं संस्कील
त्यसमान्वास्मि ताः सर्वोपपन्नं धितं कुशात्पुष्पादिस्मध्वं रुना चक्रपूर्वहावायका
ध्वं चैकान्तयं वाक्का नृत्यान्त्ययगमं सक्तुमकुनं च न्यसद्वधः चक्रुर्वाक्का वेत्राचनच

उद्यमप्रयोगिनीं एवप्रथमपक्षाचरुकाष्टप्रयथाक्रमं द्वाहवजसकृद्वितीयसक
काष्टकं श्रुत्वागपहाकारंगरुगावाविश्रयक्रमं रुनीयमध्यप्राप्तुयकृत्यकषदाप्रयत्न
चंद्रद्राहंरुद्रातिदद्याचरुथमन्त्रात्तर्वषाखायाजर्वकादिभनां दक्षिणरुव
वावकं माध्यप्राप्तुविश्वकृत्तम२३२४ यातशावावाकाप्रयत्न षष्ठपक्षिप्रविहृषा
वश्रानयहंरुद्राकथाकृत्तम२५२६ हयथाक्रमंदाप्रयत्नसर्वमकुर्वे सप्तमकाष्टप्रचाकं
द्यमप्रवर्जितंक्रमान् दाप्रयत्नचमकुर्वेसर्वमहामहं माध्यपंचकाष्टानिक्तथावावच
उष्टयं साध्यानामविदित्वामकुर्वेसप्तपदेष्ट वताउष्टयमातंचयूगलंकावयव्यव

गम्यतयतसिद्धान्तसाधकीसिद्धिदुना सामान्ययोगकलाक्षं बहसं नविशन्ति नर सिद्धी
नांपनमांसिद्धिं वृत्तानांचवृत्तारुमं शुभं वरुतरं मन्त्राचनी सदा रुवन् सफविं वामहात्साही
सुश्रवाचनगीरुध्वा पूर्वो नम्रयेथध्वा प्रोक्तिसुताप्रोक्तिहितार कामकोधहया लोक मोह
मानेचवर्जयन् दिजात्वाष्वाभुदास्यकमन्त्राक्षं संगुहकथा एतच्चासौ योपविर्तुचेदयाद
यं न कल्पयन् नकाथाहिमानेचमुक्तिनिद्राविषयेयन् सर्वसाधननंदुष्टतिरसंग
तिस्सहासदा तमाहातचपूजांचतजापंचाऊमालया दिवं संवानतऊयं पंचाननकर्म
कल्पयन् पनमात्माश्रुतनेपहाविह्वतिर्विसेनैरु नृकाभभाचन सर्वकासकिं

चतुर्माचमक निव्यसनं व्याघ्रचर्मं च पंचमूला विरुषितं प्रह्वपायात्मकं शागीरुगुलं
विह्वयधक हसनकहृदचयोयां विह्वयसखमानसं शुभकनोकिरुगुलं पंचश्रावयकूप
सक नानातकलयागानविह्वयपथिवीकल अथवाचाकुजानामचव्याकर्तुं हृदयं
श्रुसखायप्यर्कनिसंजकाकिप्रकमानसं उद्यानयलेवज्जामइत्मकयुक्तमाशिकं गमन
उकलिंगजउकहजाननवन पर्वतागुतदीक्षावमहादधिकटपिच उद्यानरुनकूपवाजासा
दगन्यवमस चहुष्यरूपमूर्तद्वानमथापिवा पथिकनिर्मात्यस्त्रापियकाचयनक
नचिक स्मणनलिंगानिर्मात्यं रुनमूर्तिपपञ्जयक शुद्धामनवयत्कल्लवमस

विष्णुपुत्रः मरुत्तावधयस्तेनपुत्रवचवधायः जुल्यनंजयमाख्यातं हस्तजय
 सुमृदया निर्विकल्पोविद्यागतेविह्वययोगिसदासुखं सिंहवद्विचययोगिसर्वसंका
 विस्मृदेनं मृधवाश्रानिचवहमात्रिसेचनमकुल्यसिधय गन्धगाभगहस्तानं कृष्णमव
 डिङ्गगह विह्वनमोनयागनयावल्लेपलेधिरुगध सफगदुपुदाजीननाकुसुमय
 ४ वरुषोसोनाकुमरध्वपयदिहस्तमकुमात्रिकं किङ्करव्युसंज्ञाकमकुल्यकडुयादिह
 सि सोवाहृदानंदशापेध्वल्लेपसमानरुत वताजपय्येयागिन्यानिमलरुवकिति
 ध्वयं सर्वयोगिनीसमायुक्तवज्रसुत्रपनसुखं ६२ वृत्तिशीवजवावीहीक

१५३

ल्यं महत्कुरु राजसो गच्छ प्रदुर्गमपुत्रि वरुणतलजगं यत्तु चर्कनासु कविं गतिपटलः
२६३३ अथान्येकमसुवच्छुवाहाहिरुक्तुगुक्तकारं यावाक्कागुत्तुपुमानं कथं
गृहमादजातं अथद्वीपं जगत्तु पुत्रिपुत्रं भवमाह साधुसुहृतावात्सवामिप्रागक्तु
समानिच गृहगुक्तुपुत्रजामिवजतायिकीपुत्रागारं यागिनीकुरुपुमां च यत्का
टिखलभवच वाजारीकल्पमाख्यातं घाजगकाटिसंख्यायां सुखमया दुयानावीवा
धिसिद्धम्यश्रुतं महोपायस्य पथकुरु जानमशीति काटिनच्यं पाचामल्लुका
टिश्च प्राप्तिमानयभवच पुनानि सुवीधिउका निमूनी जातिदि कायहृत् केशवि

स्फुटकथागीसंवत्सराचकं रागागाविमिष्टं च नायकिऊगद्रुपिनी कनेवसंभंगं
 स्मा संवत्सपुर्वचयया सुगकस्य दशानानिविनयविदधपिच नातोसुजांमहाहावी
 वाधिसत्त्वस्येदना योगिनियांगारुक्षुसुनरुसंवत्सराचकं वेविहायगाहाह
 श्रीकायषचसंरुवक धर्मसंहागनिर्वाहापाघातीतिनसंगयतर अगधमानयेया
 चिरुमिवमाध्वपुलीनता सहजकायमात्रातिस्वयंवयात्मवाधेयक पाणिनीक
 सर्वासां द्वातात्मकदेवतां धर्मसंहागनिर्वाहामहासुखविहावना पुहपायात्मकं
 योगीनीषुवत्समापूयात् नसमाधिऊहांदवीतिरुयंस्यत्तीनतां सादयऊहाविरुया

यागिनीनां न्यदहितां एवं सत्त्वात्तु वेत्तुं यागीनां गुणैः सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु
कथं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु
४ कलं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु
यागिनीनामादिकं कृत्वा प्राप्तं वास्तव्यं कीदृशं ४ उत्पत्तिं सर्वं देवानां मन्त्रिणीं कथं यव
च प्राप्तं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु
४ नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु
उत्पत्तिं सर्वं देवानां मन्त्रिणीं कथं यव ४ नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु सर्वं नृध्यामसत्त्वात्तु

४ द्वाधश्वनमरश्चेवतवात्मकं चत्वारिंशसमारख्यानापंचविंशचिकान्ता उवंतसर्वला
कासांसंहानं नृदिक्कथं द्वादशमहासायाजीवनपाकलास्मिताः नागयक्षसमारख्या
नापंचविंशचिकान्ता उवंतसर्वलाकासांसंहानं नृदिक्कथं द्वादशमहासायाजी
वनपाकलास्मिताः नागयक्षसमारख्यानां सर्वविजसमाचिताः चतुस्र्यविंशतान्त्र्य
उद्विंशतान्त्र्य स्त्रिचनद्वयद्वयमज्जवादिंसप्तकान्त्र्यं अजयगतथाख्यातंदीर्घतयजया
जयं उद्विंशसप्तयंशकं मरुत्समागमं सूर्यपावनगाताः सर्वमज्जवाणिगहास्तथा
उद्विंशतिनपिस्तुद्विंशतिवाणिगहास्तथा पाण्डित्यसमायुक्तं ह्यन्यसर्वनास्यः क

कंठसिंहकंठश्चकुरुषकलसंज्ञताः उदयनिवादिताश्चगुरुस्त्वयकमेः दृष्टिकावाभिज
श्चैवमुराकुरुसमाचिताः पंचकलापमानतउदयनिगुहाचादिता समपषकुरुषचैव
कन्दनवगर्गता कलाश्चकुरुषचैवउदयउदयागम हायादयसकनंचकलनामसम
त्विगं कुरुहादिविचित्ररूपचउर्विवापनिक्तामात कलंनषचैविरुयायादृष्टंनामतादृष्टं
दिरुभाकुदिलिफोचउदियागसमचिताः लज्जाहोलाचैविरुया(हा)घाहानासमास
ता आत्मतासर्वकार्येषुप्रभवांचैवयाजयत हस्तशुभाशुभकर्मवाकायकनषच
यागिनादयवलायांलज्जयनिर्विकल्पिता यगुहास्तसुवाययत्वास्तुचवागध

सुवनास्त्रिस्तुमजं सुवपाक्षिचपञ्चजी संधारणमविनासासिनिद्रुल्लवश्रवणं
चलादयंचलावोमहिवावनिश्चरंरुचन निशुबंरुवमिश्रंगत्वा नां पृथ्वरुदुशां देवा
नां मादिहुरुत्वावज्जवावाहिरावय सफेदिगात्मवचकं यागासिद्रिकवंपरं वरुत्तुलक
हामंरुनंरुहामवामाइनसावगर सुवाद्वदानवाश्चववीक्षं चक्रसंवरीं श्रूथानकन
नक्रहंपुतिह्वाविधियाचता पूर्वाकवजारधपतमावचयोयत्रिकल्यथरु यदिरुसंस्त्रात
पुतिमादीनांपुतकह्वापिनं आकाशमलुलंचक्रंपंचापंचानयज्जकं विनातंयजपताकांचला
शिररूपनिकमं समयत्यं समवाहंकिहिवृचानपतर यथाहिसर्वसंवद्रास्तुविनंयूचस्तहि

ता मायाद्व्यासकृत्कोसुवह्निष्ठुसागता अगुसुं सकर्मनाथहृत्वापूष्पादियामिकां
गृहानयागिनीस्थार्थवाधिविचिद्रूपवधम अतननकथागताधिहातकुकिंरुत्वाविचक्रुः नि
मर्जनं सर्वपापविनाशनं च कामये सगन्धर्मेलेषा कल्कलंदुचस्त्रापयत पुनपुनकिल्लः
नस्त्रापयेरुतः पश्चाच्चपाकाशसुंयोगिनीचक्रमबुलं प्रतीमादिषु सर्वयोगिमन्त्रपर्वण
यत् दशकर्मैककं काप्येयाचव्यावहानादिकं अजीक्षीत्तुत्सीत्तयद्वजचक्रमधिकिष्टं
पूष्पधूपैस्तथागन्धदीपनेविद्यमवच सर्वकर्मैककृत्यश्चरुहामकर्मैकपूजयत् दद्याद्गन्धि
मन्त्रास्तर्पणप्रतिष्ठाकानयवधुः ४८ एकिष्टालेकृषासंपादिसुकिमांवात्यकानयेत्तु वासुदंगद्व्या

निधायैऽयथावाहं पूजयन् राजनदानदाकि ह्यं जनदुस्त्रिचपूष्टिकं पूष्टिं दुजनसोरागं
 समागत्याच्च भान्ति कं भान्ति कं इह स्वयं वागं नाना इह स्वमपदवं अप्रतिह्ययथादवंप्रति
 ह्यकुरुं सुत्कतां भिष्यस्य ध्वषमकुरुं कुरुं व्यापूष्य ह्यदुक्तं निर्विकल्पकनपयप्रतिह्यद
 वगत्तं देवतालाकपालाश्च मिह्यं भान्ति कं यथा कथाचसंतिह्यदवपूजापयप्रममचिहं
 ॐ ह्यह्यह्यगवान्दववेविह्यवज्यागिनी सर्ववीनसमापसावज्यावाहीकल्पयन् ॐ
 ॐ मिथीवज्यावाहीकल्पमहाकुरुवाजवर्त्मजुगोप्रतिह्यविधिपयनमद्यविह्यमिह
 पदल २६०० अथ सर्ववीनायागिनीहिह समाजं कल्पापदुति दवदानवस्यानां

कथं सूर्यं च दायकि यदि सर्वं भस्मात् अग्नि कर्म शुभाशुभं अथ सहगवान्दवी हामं स
सं प्रदायकः अकिंच संभयं मस्ति अयं नयं रुद्रपुत्रा ॥ १ ॥ देवी महासाया वा नाका मनकथा
सुखं होमान् सायं सत्यानां दवनायकां सवपताम मनास्ति विधाविचिमहा इवाह सुखं
वगुधमश्च वरुद्रपुत्रा हामं संरुवर कस्माद् हामं वीक्ष्य हामं संकल्पमाप्नुयात् ॥ २ ॥ देव्यां
वक्ष्यामि हामं कर्मोदितं रुद्रां रुमि (१) अथि कर्म रुद्रां अग्नि कर्म निगानय अत्र हामं गुल्लमना
नयपावकं रुद्रं सुरुभुक् अस्माद् गुल्लं निनत्याहं कथं गुल्लपादिहं कथं दादमं गुल्लवण
गुल्लवणमहाश्च रुद्रं दगाभानि सवच वा ॥ ३ ॥ गुल्लिवा ॥ न कुरु स हामं काननाहं अहं

गुल्ममात्रादशनाकलवर्धनं विंशदंगुलकालुतमलजागणान्तिका कान्तिचयम
 कृष्णानिहयद्वयंप्रसातनं कर्मभान्नपकार्यपातीचविचक्रुः४ मूत्राकस्यद्विदि
 कोरादिहोगंखलिहंरुवत् सर्वकान्तिचकस्यसामान्यंपातलज्जं कालुस्याद्वहोरात्र
 गुल्मंरुचकानपत् उल्लिख्यसाहायननेमिकेवशाजयत् यथावाहननमीचयथा
 सुकनमवच रुधाकवदिकाकार्येयथाइहपुमातन४ कृष्णमध्यवजातांमूलंरु
 मंरुविशेष४ स्वकपीतंचनकंरुहविगमवच यथाकर्मनूगमलठाकृष्णानां
 वरुलज्जं किरुसर्वकर्मिककृष्णसहर्गंविशेष४ भक्तिकवडलाकालीशुव

पूर्वोत्तमं हवत् चक्रवर्त्योऽष्टिकंगी कंडरुमासनमवच उच्चातनं महिचानं कर्मचक्र
पश्चिमातनं विद्वत्प्रभासा नयं कर्मदक्षिणोत्तमं नितिकामकं वग्धमस्तु विविधदीचनक
वर्गुष्टिकाशकं सुकृतं माहृतं कर्मनैमिषातनं हवत् उच्चातनं धुमवर्चं च वायव्यात
नमवच हलदायकं कर्मसातनं सदा गोसतं चक्रं कर्मनैमिषातनं वयं रुद्र
इंकातनं शर्मिषातनं दिशुजकातनं रुद्रावयत् महावलपथातनं सर्वधोहिवास्तु
सर्वकृशं स मातुं निरविचलपाशोत्तमं अटिकातनं चानयत् कर्ममटिकातनं दवतात्तकं
हवत् उष्टोऽष्टिकंगी कर्मनितिकं वग्धमस्तु विविधदीचनक

५ चिह्ननउच्चाटनाटिचावकं आयेचस्यंरुहूननिसविद्रूपकं अतिविश्वमिदंयागिमरुं
प्रकृतिलकुशं अयेपादादिकंरुपायअतिचवाहयनकरं स्वहृदांरुजइकावचजसुखं
विहारयकं सिद्धानाठासमाख्याताभालिजंरुमुलंयकरं दधनंचसदामधुआरुहंरुहिवा
धिविद्रुवं शुक्रवारुद्रवावागंपरुधसन्निधिविचकीडां नत्सर्धचनेवीजंनेकवर्षसुहा १७३
वने४ दधुजकृतितावामदक्षिणकुमातामथा यथामकृतिनेवभादनेसुर्वावर्षरुहि
नं आधिगमकिंरुहयंइवापाठमदिवायवा मयवीपासांचेवचंदनंचकमुनिवा४ न
कापूपासमाख्यातंरुधमरुणनधपायसं रुन्धनंनखदंताकिचर्मवसुसमासन क

[illegible]

सदा कन्दसन्तिहस्त्रिभारप्रवेदसन्तिहार निर्धूमविमलावर्द्धिवागाग्यगम्यवृद्धिकर चय
काकापानिपरत्नसुसागंगकावकापमं पृष्णमागविहचोपिः सर्वपापं दुवस्य दु वन्धकपप्यजवा
कृणुमसन्तिहा सफहामुदुवर्द्धुसंवाकेभ्यर्थसंपदं चंपकाजात्यलागीलमालंतीगीरवा
भंगान कर्पूलावशगन्धिचगुरुहृद्राधिपपयन वीरभवं मृदंगमश्वगंखकारानसूचन
४ श्रीगङ्गापानिनिर्घोषाग्निवस्यसूत्रावहर शिवसूत्रसंखाकुडिभूलकलकामकामि ४ ध
ऊचासलसर्वजत्वस्त्रिकाचगङ्गाकामि निश्चयदकिभवं नृकपिभुमसहार्थद ४ जगवां
गुरुसंपदिरुनायवागपसंपदं चंचलादिमखाकालादिभित्तावस्थमला रुचकिसूत्र

५३०

लिंगानि विदुः सान्द्राकरी मूर्ध्नि कं पितृयाग्निमूर्ध्नि निरुलं मूर्ध्नि मन्त्रिवाभन
मूर्ध्नि मन्त्रिवाभनो ह्यमूर्ध्नि चिह्नो वा सोमकि (गम्य) कं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स
नाथं मेधुवं चिह्नं (गम्य) मन्त्रिवाभनो कं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स
सर्वांगे (गम्य) कं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स सर्वांगे (गम्य) कं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स
नादायादु मं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स नादायादु मं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स
प्योहिः उद्धृतं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स प्योहिः उद्धृतं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स
दद्यादग्निमं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स दद्यादग्निमं ध्रुवं नृपातां चरुनाथं यदा स

दत्ति संति सुमानस ॥ ॐ अग्नि सूक्तं यत्प्राहा ॥ अस्मत्सु ॥ ॐ वज्रं ललाय स्वाहा ॥ अजं ॥ ॐ
 वज्रं ललाय स्वाहा ॥ इत्युक्तं ॥ ॐ वज्रं कृत्वा यत्प्राहा ॥ अजी ललाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वपापदहनं व
 जाय स्वाहा ॥ नीलानां ॥ ॐ वज्रं पृथुकाय स्वाहा ॥ अखभुक्तं सुखं ॥ ॐ सर्वसंपदं स्वाहा ॥ द
 ध्यस्तु ॥ ॐ वजाय ध्व स्वाहा ॥ इवां ॥ ॐ अप्रतिहं वजाय स्वाहा ॥ कृष्णं ॥ अनां ॥
 मत्ता सेनं स्वदेवता निष्यन् चिद्रवीजं यत्नितं मंगुलं चक्रं विराचयत् समर्थं चक्रं हन
 चक्रं अक्षय्यं यत्नितं ॥ अग्न्याहं सध्वं कुमदिता कानं विराचयत् प्राकृता समया
 दिवं पूजास्तुति अर्घ्यं पादं दुपूजयत् स्वदेवता वीजं जायते ॥ समर्थं दधि संकिं ॥ प्रथकं

दवतांदशापश्चादपाम्भूत उपसफाधिकं पावकगतसाहसुभवच यथाद्वयानु
पहाहामभयविचक्रुः ॥ तथाहि सर्वद्वयक दानिमं रवदयातं सन्तिकुम्भदिप्रहामभु
लरुक्काचयनादिकं कस्ममिनिस्मितालाधपगन्धं हृदिप्रकेर्वांगुणायं पाद दीप
मयनिवेशं चयनदशाशयकमं यथापेर्वाकृतविधाननविभर्जयमनुलं चवं लोकिक
हामसंपूर्णं लोकाकृतवहामययदि दिनचलोकिकं हामं बाह्यलोकाकृतं तथा यागिनीया
गिसंमिलेखायपानं विष्णुघट्ट किलिकिलीमहासाहं गीतनयसूखासवे स्वाधिदवता
यागानचनं कृतवहामयत् प्रार्थयदहितं कार्यं सिद्धं नोदसंभयर ओं कृतवसर्वसत्तार्थं

सिद्धिंदत्तायथानगर गरुधं वृद्धविषयविनरुधं यथा मूलं बुद्ध्या ता कपालाश्रयानिरु
 ताविधिजिज्ञा मोक्तिस्त्वस्य नैकत्वाकृतं दानपत्रगहं एवं जयं वाचो नृचाये कृत्वा पयद
 नरपवर अथान्यकमसर्वं सर्वयस्य ज्ञं रुतं ऊर्ध्वरुमी कवी विद्याकृत्वांगहविचरि
 कृतं सर्वसंपदं हि सात्म्योऽसि तं जे चिवादि कार सोर्षाधिकन कनं का स्रे सर्वं कनो कनर
 कृतेऽभाक्तिस्त्वसि तसि द्वाथे पद्वि साकृत्तुवामनर किल सापहज विद्या धात्य धात्यार्थ
 सर्वं कं महावनकं साधं चक्राय वगैः पदं यवं आयुर्ध्वि कवी इवो रगेधु माभारा नाशनं
 प्रहृषपदमधुक्रावं दधनं सर्वसंपदं इत्यर्थ सर्वशोचिद्रमद्रोदत्ता विष्टदवता २४

१३२

संकर्मोन्मूलपक्षप्रयंभान्यादिकर्मस्तक पूर्वदुःखं विजातीयान्कनिष्पद्भिर्नायकां ॐ
द्वियं सर्वं नृपतिगोपतिचक्रासनं नानावर्धमहासादं हुज्जनं कंबूदभदिने महाचलं ह
विताडु सर्वप्रादमन्यधिपतिं तनदुःखसर्वस्मिद्धिः सर्वकर्मिकहास्य पाण्डुशुद्धासूतापाय
नरभधरावना कलाचिनिर्गकं सुपिः ४ महासूतकस्य मनसंकीडककद सर्वलाकायका
दुष्य यस्मिं काले हवदग्निस्तस्मिं वपुर्वरुत साधनानुगृहकदुःखमाभ्यस्तिकदधीनारु
कतसंकर्षोयदग्निमात्मानं सर्ववोचनं पुर्वकवाकियाहमसिद्धिसौभाग्यसंपदं लोकला
काह्नं हनलायान्कषमधमा चध्वकवमहाचिह्नं पनमाय सर्वसंधिषु रुद्रयित्वा रुदासं

पन्त्रं वा सतां वा धिनिर्मिता लङ्का लङ्का पुहा धाव वा ल्या लु स्रु मर्हति तयंच कोपक कृष्ण
 या दधम लङ्का ॥ १३॥ ॥ इति श्री वज्र वागी जी कथे महा कुरु वा जी आ ध्या स्रु मर्हति ॥
 ॥ म विधि पंके वरां नाम कुरु वा विंशति पद लं ॥ १४॥ ॥ अथ न्यारु म सं व रं धर्म प्र स वा दय
 वल्लव कुरु पार ग वा सिद्धि नि च व धु रिका नाना सिद्धि प्र धा म कुरु नाना वल्लु ला दयं व मे हिया
 गिति स्रु मर्हति न मा र्थे व स्रु मर्हति कुरु न न पार ग न म हि मा ध्या ना गु वा ह्नु रिति क को प न व ल्ला यां च
 धा मि र्हा ना द वा कुरु न नाना नू र्थ मा तां वा ला नां वा धि मा गा ता वज्र वल्लं न्य स्रु मर्हति कुरु न न म र्हा
 सं दनं वरु न व धु रिका डि डु र्ध म वा ल ला क गं स्व वा न धा न य वज्रं कुरु न न का ल थ क वृ धि मा न ॥

१३३

ऊवममनहाइमपूवाधिविचिह्नपूजाउतां लंघनंरुवदापंचद्विरुचनमयंरुचरु हगवन्गति
ऊलुसादिकयादिनादिन रुस्मिजहाइयादृष्टिपतितासर्ववस्तुकी महाभाजनमात्माचसर्ववः
निसदात्मन यागकलस्यरुत्वषदभदधवजायक योगिनीरुकुंडनस्यापुसत्त्वार्थंरुननिश्च
पर पद्मवेलाचवज्राभिधर्मचयसनादयं चडकायस्ययागानस्यसंस्तवदास्यहं उ-काभिया
गजास्त्रनंबत्ववजस्यपवा तायकीडाकीनायानमभाषयडागवोद्विना वाधिविह्नसदभ
ऊंजिह्वायांचकनपूच गवमदेवगङ्गायात्मरुजच्युगितऊनं इतीहत्यामखननेवदनश्चका
वयककठ वलंचकयसर्वासांभलीजागीसलऊनं हामंचसर्वरुनेचययं वग्धादिकान

यत् कथाचन्द्रिका माधवा कादशां नवा रूपा गुलिका वापि सूक्ष्मस्य स्वयंवी भूषिता हगमध्व
षूँषधीनत्ववज्रिकं मन्त्रुलंधादुनां सच नाना भागप का शिर्षं ओं नमः सौम्यतवा सि सहा
कालानुनाय कथाया ओं चेलपचललेललीतयचलिंगा स्यात् सवायद्वंशलाई बाजुलि
गंगहीला भावकूय यायावदागच्छति पिंभु कदिर ओं चामू गुधु कलि विद्युक्ति रु रुन
रूपचरदवदरुमा तथ स्यात् गमचनरुने श्रवकं गसुमनं लिखितो ह स्या सनेव को ह
हगजीरे कानचरुष्टु पंलिखित सलुपदं लिखि श्राक म्यजपदनी कनमरुमं ओं कजको ध
वलावल हतदरुपचविधं गथात्मा कमाने य इह द कल्मीकं मया प्रचराय सहि मवितर

१५४

विकल्पी मातृकं वा शुचिं कृत्वा कनवीनद्वयादकनसनसचयक गुणुनूपमविदिन्नं छिन्नं
लिंदशाक सफारुतादकभनायाक्यकि यदिनचर्येनिसफेमदिवसखुखुं कृत्वा घ
टकेपुकिपोनशांपवाह्यक वर्षेकिचयोपनयनविधिः अंगगनश्रुतिगमस्वाहा अनेन
प्रजापतिमस्तुलाष्टसंकेतं कृत्वा कस्वविदिकवागस्तुपथकमुखबंधकागोरुवति अं
मूकाकिहकिमकागस्तुकिमकारकाहकितागालमकानामुठवनीषकादवदरुस्यमस्तुव
न्धानिस्वाहा बलिबर्द्धत्यापकिरुवस्तुयादित्वंस्तुपथक यस्यकस्यचित्कार्यंमुखबंधव
वहानपठितसिद्धिः अंनेमरनिभमहेनवायचित्तिरकित्ताकनूपनूपमस्तुविकासंस्तु

वन्धमि मर्कटभूगावसर्पसकाचनाहादिभोगिगविलिश्वाहा अतनमकुंठावकहसून
लोपुकांवाचवाविंभोतिवावंपभिजपगहृजंवातिकायांचकुकाहालायुकांऊपयलिलेपद
वाहवति न्नाथवाविषलवनराजिकासुषेपमूलवीजधुवकनवीजमहागानवीजंवी अत
षांचकुसंवायमहिषभुवनगमवाहोवधिनहमलायचकुंदेभपिपूष्यधपंचलिनंदया इ
सम्भदकिगहसुहासंगकवामनरुईनीकोधवाजनचकुर्विशानिकुपयक भीमाप्राकाल
वन्धमगारुवति ओंफाफोइहृदविहश्वाहा अतनमकुंठावकहसूनमयमहिमेलापाणिथसूः
लापकिप्पदधिविनस्यति जीवकुपयसूक ओंनेवक्तस्वामिवडलाकाधिपगयकूनश्गद

१५५

[illegible]

[illegible]

किं मनसि लायां चामहस्य पूरुषी कां लिखि च दीपनिखायां तापय हवसति विधि याप्यका
शकममुलमूपलिप्य रुजै पश्य देवदरुस्य नामं लिख्य रुक्मिण्युमा धर्मिणि नृहकारं दया
हिमचातयति कुम्भकोलहस्य चिह्नममृततां जनत्वदधिकसहस्रं पवित्रजप उदकमध्यानि
वृत्ताक्षेन सुप्रयत्नं गुह्यमंस्ति शोचति अथ सङ्गमा मामभ्यर्चुमिच्छति सिद्धं कनवापिष्ठकं
नवापिष्ठकं काषायकपर्पणं नतां पति कर्म मत्वादानसंयावकपादयत्नं शुशुफां कानय
न रुद्रपानिचाष्टादकं पवित्रजपं हि संध्यं कुर्वन् जपं पूजयति दिनस्यति पंचसंख्यं पञ्च
शोकांतां रुद्राष्टकं हि कृतं लना कानां रुद्राष्टकं हि कृतं लना अथ लोच्य स्यात्तामसगच्छे

हस्तसंज्ञायाः सप्तम्यप्यस्यावधमयनिबन्धिनं हस्तमिदं नवानुविनमन्वावाययनि नम
 भनरुभमसातागकृष्टपुनिकतिं हस्तमिदं नवानुविनमन्वावाययनि नम
 पियसंज्ञायाः हस्तसंज्ञायाः सप्तम्यप्यस्यावधमयनिबन्धिनं हस्तमिदं नवानुविनमन्वावाययनि नम
 हस्तसंज्ञायाः पियसंज्ञायाः सप्तम्यप्यस्यावधमयनिबन्धिनं हस्तमिदं नवानुविनमन्वावाययनि नम
 थमिदं नवानुविनमन्वावाययनि नम हस्तसंज्ञायाः पियसंज्ञायाः सप्तम्यप्यस्यावधमयनिबन्धिनं हस्तमिदं नवानुविनमन्वावाययनि नम
 कर्तव्यं यजं च हिंशुहस्तसंज्ञायाः सप्तम्यप्यस्यावधमयनिबन्धिनं हस्तमिदं नवानुविनमन्वावाययनि नम
 पृक्तं भाष्यं च गव्यं नपि वयम् यथदंशुनिकां हस्तमिदं नवानुविनमन्वावाययनि नम

कृष्णस्योत्पत्तिः सप्त सप्तदशवर्षाः गुणपदसहस्रकं चतुर्पर्वविधाननपुनिसहस्रमनप
कथं गुहासंमंजुतं लपंमसुक्तं पंचदापयत् ननु सप्तदशवर्षाः सप्तदशसंमयत् न
लातो निलसिलपंचालगुरुपुमच्यत् इष्टगुरुष्वधुपंदत्यापुमच्यत् सर्वदत्तं वृत्तिव
निलनिद्राचारवत् सप्तमस्य विवादनमाजदामनल्लाटर्क धानयत्तजयाहवतिक
मननचलपयत् सुविभाहवतिकं त्याधानयत्तजयाहवतिक इष्टप्रभावाभावीधं
नाहियातिषलपयत् भाधुपुस्यत्तिसर्वकृष्णगणवत्तमसुक्तं सप्तदशवर्षाहवतिक
मनुकानंजाहवतिकं पंचगव्यनसहपिवत् गणोत्पत्तिपुत्रवतीहवतिक नक्षत्र

लघु ककुत्सादकसहस्रपिवन गूलंप्रताम्यति चक्रुशारायसक्तकलपयत् चक्रुशारायनाययति
 विषदंशकात्तरभ्रमनात्तपयन्निर्विषाहवहितिनिग्रंधाग्रयति सिंहयाद्युभ्रजवनस्यति
 विरुखर्जनादिहिः सर्वगुह्येष्वपविसर्जति परममज्ञासर्वजस्यपिपित्तसंग्रहोति
 समंता तापिताहतामरध्वपूषधायत्ववज्रिकां मकुलंधाहुनामचनानांभारानिवाव
 दं नृश्याहंरुगवाचकर्मसूत्रावल्धसुदाहितिः सर्ववीवजरात्माताओषधीतांहुनायकी
 उ नृकिश्रीचक्रवागहिक्लेशमहाकृत्वाजपसवलाकर्मपुस्रभोषधायकन
 हानिदशचक्रविंशतिपटलः २६० अथसंज्ञातपालकोटिरुहकोथ्यहचवसाय

१३८

नं ह्यग्रीवपयागानसाधयद्वज्रलकुक्षं ह्यन्यथातिमरुधुपकानमस्तुकस्तुनं श्रीका
वंप्रममरुधुवकावद्वद्वयप्रच धर्ममानं महायागं सनसतीमसायनं हवेति सर्वत्रागतं
यत्प्रकृतान्वरुधुन वसायलुसदालाकस्तित्वाका एतेन याचसा ह्यकावगीयायांनः
सायनायागः शेषकं गद्युर्ननयागाननविष्ठासमपदीका वक्ष्येयनं वज्रसत्त्वं कुसम्भ
चक्षुधरुधुनं गगक्षसूचनितस्तनगद्युक्तिवाधिमानसां वाधितारण्यनसाचक्रपगिनी
यागनायकी सर्वसत्त्वद्रवसजासमारोषप्रदशकं तत्त्वरावसदालाकहवेनातमासा
न्धकं ह्यविकावसेनाथेयगिनी चक्रमारोगमः उदयति साधनाश्रुतीधनयातिन्यास्तु

पुजायक विनाशयति नागाश्च विष्ठाया नाशयति च मूषहन्नापि सर्वेष्वप्युत्तमादिन
 लकुम्भार यरुनसा नां लाक्ष सर्वसाधयकं कुरुमक वसायनकुर्वीकृति नेनात्म्याय
 पुसासना नसाक कोयं कुर्वीक होययागमदिभवच यथैस्त्वेष्वीधन्यं वज्रधनत्वमा
 प्रयातु नागानवागमा लोका वद्विदग्धा दुदाहकं कदावागानमोचसज्जमानं नवाध
 क वसायनं वसकर्म कृत्वा शुशुभिल्लकुम्भं वसायननकुर्वीक मध्यमास्थिति साधयान वा
 कृष्णहनिनां हनंयागिनी वज्रधनं दिकं कयस्त्वैकानवदत्त लोकाय संरुवा ४ वसाय
 हाविधिं वज्रनसायन विष्णुमं यनचिह्नक मात्रेण सावि मायाहिलकुम्भं सासमिह

१५५

ककभुगीहेषसुपीकचन्दनं पथकथकमाकवाऊनामनवाचंचनं एधपंचकुला
त्यन्नामधमागमहिसंहवः सामान्यास्त्रीहचहीनेहइकनडाचिवईयेरु रुकवरेरु
हडाङ्गीककूपकनजस्वनाः दानिकास्त्रिगधकेगीयासूगन्धककृपागकाः नस्यापूषं
पुसकस्यासर्वोहिमनसिद्धिदं शुक्लपञ्चपस्योपायस्यंऊनादितान् आशक्तोशुवा
चशुक्लपटिकसन्निहाः पुगस्तानिसमिरुमनाहिरसात्कम्बुविशुद्धं नस्यवनसंशुद्धं
हेषसुसंगहंवनं कीनादिहऊनात्यन्तपीकचन्दनसंगुहं भीर्यऊनंलिकाख्यानंमान्द
ऊंचछिधायनं उरुमंशीर्यऊसपि मध्ममंनलिकारुचं अथमंमांससंयकंनसाय

नविस्तरं यत्पुष्पपरिष्कारं दंडुनूकसर्वलज्जं १ आधिनिमगताहिस्या हेमजंभा
निकान्धं चक्रसमाह्वयनिस्पृष्टधर्मवर्गसदा चन्दनविपाकव्यंचन्दनविनायि
ति सूर्योत्पन्नपातव्यं स्यात्वरुणिभस्मवि एतद्वदुसमायासुं नभ्यंदद्याच्चनिष्पन्नं
षष्ठांशकमपारागद्व्यायुचक्रमिगर्वदा वाभनभ्यं पदानिहाय निशुद्धनरुमेरा जीवन्
वर्जं सर्वशुक्लपुष्पगोपीयम् निर्वर्जनपीतुहनिगं मलामलविचर्जितं शुद्धभानरुवयश्च
दुर्गोषविचर्जितं पुसन्ननिर्मलं स्वदं किंचित्कटिकसन्निभं शुद्धरुटिकरुचदेवपिण्ड
सन्धनमूर्ध्मं मत्समान्तरथापातं स्त्रीसंगंचविचर्जितं धीवाविनीकटसगुणं स्वदहं

विष्णुत्वं मादृष्टिभ्यं समायुक्तं गुह्यं प्रवक्ष्यामि दशनानाधनं कार्यं श्रुतिवत्सम
न्वितां स्वाभिदवन्तानि श्रुतिविद्वन्मनुजानि दत्तं पूषं कर्तुं कार्यं सिध्यं सन्तोषको
यत् निर्वोक्तानसंपादि तिर्यक्षं निविश्यात् सर्वमासन्नसंपादं भोतं कृत्वा स्ववर्धि
मानं स्वदहसाधयत्सम्यक्कफवलानि कुरुयन्मन्त्रवयं कर्मदशवर्षाणि तावत् वर्ष
द्वयं च संयुज्ये सिद्धिं काले सुमी सदा द्वादशसिद्धिं संपादयति पवित्रवर्जितं ताताभागाधि
निमक्तं जीवदाचक्षुःकालं दवाशुभमन्त्रव्याचक्षुः तां रुचति वज्रसारं पंचववहिवरु
क्षं निस्त्रिंशद्वर्षं कुरुयत्सदा उरुवर्त्मसंपूर्णं सिद्धिं सिद्धिपवर्णं कासाधनसमं

हंस्वचविसिद्धिमाप्नुयात् वृद्धीं लल्लं जायन्तु निगुम्भी चण्डवलाजः धूम्रवपुर्निग्रो
 सुकस्तूनीचन्दनान्वितः उदामयमिषः स्वाकंश्च वानसमन्वितः सर्वभोगविनिमूर्कः
 शनिविषेष्टासकानिमान् किरुलाचन्दनात्पलांचभुङ्गीकलेयासह कस्तूर्यार्थेभ्यः
 वद्वर्षसंहर्षेन्निजं लावजः चन्दमंष्ट्रिगयापोशेषमासं हजयत्तवः कस्तूरीदि
 फलायकैषां पाशमायुसंस्तुतं यत्पीवत्सुततं पीतं सहर्षेन्निबूजावजं षष्मासमा
 जसं सन्मोदीर्घायुस्यात्सगुणपवान् यस्तुष्टुजायतसिद्धिनिधिस्तु नोऽयमस्यतः तीर्थ
 कर्मैव वृद्धवृद्धनस्तु सर्वथा विवृद्धसर्वथागतास्तु समासातां विदन्वकाठ वाचनं

सर्वविद्वत्पूज्यं कस्तूरसुतसुतिना ॐ स्वाहा हृगवान्त्वामि लोकि कंच सदास्मिन् सर्वथा
गिति स माया गमज्जगो धा धृचवर्द्धिं अथेया गिति प्रहंजनं गुह्यं कथं न भवे साधकं च
जं वा बाह्या गच्छावज्जवाय स न क्तं संवद्वेष विवद्वेष्यं कृत्या न कृपा राकं धारुणं च न व
हृया न भक्त्या राग प्रसंहितं वज्र रूप समाख्या ता श्रवण मित्या गिहा वक्तं याता राग प्रसंहितं च
पुहं जन माय च न अचल श सर्व को लेष चलं वा ता ह संभय ४ सर्व हता मना या गी सर्व च
हृया प्रवर्द्धं होला हलादि या गी या गिनी मा ऊदा मकी नादा विद्वत्स विद्वत्परा स्वभावा
कल्पं न स्मा या गि गार्ह च विद्वत्परा जा क या गि हि ४ आत्मा मध्यम या गान स प्रोक्तं च प स म्भ

न आलस्यं सर्वो विरुपादप्यं संवत्सरं वयं धर्मोधिकं एव पिता नकादिगणिकथा वृद्धा
 नां वाधिसत्त्वा नां स्तानं च वाधिसत्त्वा नां गणिमा र्गोपथ्या व्यासं च वना र्गोपथ्या गिनी रुस्मि
 का लन वरुणा दगम्या वाल गणिनी गगनां सत्त्वा नां रुस्या गगं पुका गिनी प्रक्षपा
 या ल्य कं न व भवेत्तु हय मवच रुगा वत्ति स्तु व न्धु व न्धु हिर्य मे स गिनी वृद्ध लोक
 समन्तानि की ड मिश्र व न न यं एवं सा का म न व न्धु नि वा का व प द हिर्यं वृद्धा दयं या
 कि चि हिर्य विरुप न स क कि मध्य मा ह हिर्य या गी हिर्य न क रुद्र मा म लं यदि वृद्धा न वा
 राहा धर्म सत्त्वा नां वयं यदि निर्यि क विधं स न्धु वृद्ध धर्म सहा न यं यदि प्रक्षपा या ल्य

१०२

यागंभूततात्पर्यंकां यदि सर्वमतिर्यात्मा रावयत्तु ॥ दंतं किं वदन्तात्तु क
नधर्मधमकुयदिह किं योगिनी धर्मकं वृषं हाविता वदन्तात्तु कं चक्षुलवधका नोथे ॥ मा
भार्थयसंस्थितान् सर्वं नरुत्पदेन मय मकिं मागो नूतायिना मगुलवमरधध्यागिन्यावू
एसिद्धिसेमाचुतं सिद्धिमा प्राप्तिमृदात्ता ॥ १॥ रुला केपनकुच ॥ २॥ सोहहगवान् न्यागि
वसायनकुनदिगद सर्वविह्वनयोगमत्ता भूततागारुकेवलं ॥ ३॥ किंशिवज
वावाहिकत्वं महोक्तुवाजुह्यशीवपकमठा हाषरुममठपंचविशक्तिपटल ॥ ४॥
मथवा नाहीपजां कृतापनिपश्चमाहच हाषरुहगवान् नजीसुसंबधस्यलकुशं नह

सं सर्वकलाधामनचरायादुपधिविधिं कथ्यते दुपध्यायं न हसं हसनमूरुमं श्रीरुनकी
 पुया रातया गंचलुगतिस्वयं शुक्रादिपतिपधुवधन हसनसागं पुथभजायनहसनं
 दिगीयगजनपितं नृत्तियेनालागांदिचंचकुर्थलऊनूपिषां पंचभपंचभकात्सावष्टष
 रुदुससुव सफभसागवंगपंरुष्टमपचकनूपिषी नवभनसायनंचंददशमसहज
 नूपिषी नृकादराशिवनपंदोदसचक्रनूपिषी रुयादरामारुचचकुदेराचलुम
 मय्ये गारूपंचदराचेवषादराविन्दनामदे स्वयंचंदविजातियातषादकमकालनृज
 श्रीरुनकी पुया रातचक्रषसाधयत् नरुनातचमरुयाधिकाष्टोदिवर्जितं श्रीका

लंच हव न्ना होरु कायं द्रुदयं न्यसक्त नूतानं कवचं चक्रं प्रकीर्तनं दुर्गापालकी चतुर्विंश
काननस्य संवत्सरं काननयनं वादकानां काननं च शान्तिनां पत्रमाकृतं स्तुतानां स्तुतमावर्तनं
च पविष्टं संधर्मनं चतुश्चक्रदलं गाननायना कपनं सर्वकलं सर्वयोगिनी विजानिया
यसं हवं यागमानां मर्हात्तिरुं पापमभाघदो नात सुप्राजापक निश्चु सर्वकाले स्ववस्थिं
सुसंफेन न ददुष्टि निर्वाहां रागनकुहां कर्मोत्पुनने वात्स्यं नूदीथ स सं हवं जुवं चक्रेति
तायां गीमार्गमाप्तिनिश्चिं प्रहृतं समागम्य सूर्यानां प्रयत्नं न वसोयनं सं हवायां
कुरुपक व्याहृती वादकानां दुर्कलानां सूर्योचवं न वातनं काननं काननं यागम द्रुदकार

लाहलाहलं मधुलचक्रमध्वचिन्तयित्वा श्रीरुक्मीं सर्वलक्षणसंस्कृतं वसायनलुजा
यत् अथमग्नयकुलवसायनात्पट्टिकावेनं मधुलं हनवजात्वं अमृतं ऊर्वसागन
खधमधुमध्वमसुतं कुकी नोदसागनं शुभं तत्तात्पर्यं नोदवी कन्यको कामनूपिणी
उदिताम्भुसमावर्तुलाजा नमसमपरा नानानलविचित्राङ्गी पद्मवज्रसमपरा अ
रुदराङ्गी दिव्यामङ्गा नो हवसन्निहा नानानकाधनिदविर्लोकं वसध्वनेही ख
कुचाङ्गं कृत्स्नव्यकपालकालिगधजं तथावादं तथा घञं नमस्तु वलपदं दृष्टवाध
नृपाङ्गं च खेदाङ्गं सकमलं गन्धमज्जववीक्ष्य च गच्छति चारुमकम जवयोवनसम्प

त्रिदित्तज्ञासूत्रसूत्रगी मगुलापटिकितासर्वनदीरूतानिमध्यगः श्रीनसागननामंचवह
रघुनमधूपमा सोमपानं दुसाकन्यादेहवज्रवैराचनी वैराचनीदेहमध्वरुहेनकीचदुर्करु
वृत्त सर्ववीरसमायागजाकिनीजालसंभरणी पुकीरूतानिसर्वातिश्रमं बोद्धव्यपिनी ह
ल्लोकेल्लोचलाकाचरुस्यगर्तामनं तथा कुन्दधर्मोदयोख्याकरेभलकमेतंगीयत यासु
वावजयोगिनीयासदसचहवकी पमनस्यवन्नंश्चनंवरुयागनत्वसंरुव ४ यदस्यादस
सुमाद्यं च्यावगायचनरुस्वरं निर्मदस्यकनक्षनविहसर्तमकृणरुवरु ह्यनविहसतस
म्यन्त्रमदनयासाहजंजगत् पी० रुद्रं च संभाहंभलापकसंगेनमवेच पूषापूषक

संन्यस्तमं अर्घ्यमर्हं पञ्चमलाङ्कनं मङ्गलं च सखात्वं पिष्टदन्तमनघं विवाहं
 यद्गुरुकर्मणी विद्याभ्यासः कर्मण्युद्धियाद्योचविशेषं वंशनामङ्गलार्थं यस्मात्संभवेति
 धिसौधनं प्रवक्ष्यामि काले यदीयं ज्ञात्वा नराचलं प्रविष्टाहमकाले यदीयं ज्ञात्वा नराचलं
 चक्रं नेमिहियागिनीपञ्चमलाङ्कनं काले यदीयं ज्ञात्वा नराचलं प्रविष्टाहमकाले यदीयं ज्ञात्वा नराचलं
 न ह्यधिकानस्य च अस्मिन्नेन गुरुगुणकाधिपः पुण्यवीनश्च भगिनीपञ्चमलाङ्कनं यदन्तःप्राप्तं
 न ॐ श्रीगुरु इन्द्रमल्लिकाधिविकावयनसदा हरे हरे इन्द्रमल्लिकाधिविकावयनसदा हरे हरे
 नमः हकारो हवर्गवर्ग हकारो मङ्गलार्थं ॐ कारो वीजहन्ता च नमः कारो वीजहन्ता च नमः

हावयक्तु विदुषादिव्यक्तिचिकनपिवक्तुयदिदोक्तिं विषयकस्य न संदहामक्तुसिद्धिनजा
यक्तं २ मदनं विक्तुलाकविद्विद्विप्राकजायक्त मदनविक्तुमक्तिकासाक्षीमभूतन
ति नक्षत्रसहस्रं च कलहाद्युक्तिधुवं निन्दिकागुमरावापिषच्यक्तनननीनव क
धावयागिनीसर्वपायात्मो न वक्तुं अत व्याधिसाकं ह्येक्तु विद्वक्तु ह्येतका गु
नतितागु मूढाहिसत्त्वडाह न कामथक्त अतुक्तु ह्येक्तु सिद्धिसाधननिस्तुलं अतश्च
वक्तुं यत्नः प्रवृत्तं न हापिक्तं प्राप्तेयद्विधिसंयक्तं च वृत्ते विद्यसंयक्तं धागीयागिनी
मलार्थनचंचयेद्विधिनादिक्तं सर्वसाधननं वक्तु हागाहागक्तु न कल्पेयक्तु नतसत्त्वाद

कंशाफं सिद्धिवाह च कल्याण प्रसूचद्विवलंकल्यं सोहागफलसंपदा सुवाहंगतमेभ्य
 लकनरूपदं द्वाजामलजाचेरं एभडी पिष्टचमयजा श्रुजाओचकूजाचेव एभसन्नाम
 होतल साधीपंचविधं शाकं यष्टकाष्टविधास्तार एभडीसफविधानेच कुसुमप्रभाविधान
 कं नानादेशविधायकं मयसहस्रवर्कं मिद्रुमिक जाफं च मधुलिधं वजायं न नूनक
 वागुकी वननं मादीनं रुहाचयं पृथगुगुनं पंचचलिंदया च्छाहभक्त कृष्णोच
 विधिं संपूर्णं जायं चवलचानुगो स्यास्यं यदाचिदुदितदिनरुको वयेरु एवंपा
 गवलिंदीर्घं स्यास्यं वसदा मयठ श्रम कयेन कलुवसका मलकातिच प्रसूभ

११३

ककुनीनस्यद्विवृद्धिमलकानिच गुडस्यैकवलंगमकमकंदककुकांनयन स्यात्सर्व
मिदं पाकं पार्थिवं न न विलस्मिहि ४ आकलकाशे च ४ सव्यं धातुकि पृष्णं च न पृष्णं च धा
त्यकं मलयं मलिकाकां रकोले यतिश्च वल्कलं पुनानि स मागमनि पादां रोनपक
त्यथ न दाडिभं मलित त्यापि गुडस्यैकपनं रुचं जायते मदिगचे वृद्धिदिदिव सति
यते पुरुकं मनिचं सव्यं मंजिष्ठा नागकीशलादाडिमचरुथा चानं लवंगमागधावि
ह गुडमकवलं चैव सफं चादकदापयते अस्य वंशीरुगन्धं च जायते स्वदुशीरुतलं
मकं मासहसं यो गं मालां च कजवृद्धिमात् त्वेगला नलदं चकं मालं नृणां चिद्व

सफमादिसमजाहिरकृत्यस्यसदाकृतं निगुन्तसाहुवाताप्यंजामत्तनसमन्वितं गृह्यत
नपदाकृत्यंस्मृतास्तुविचक्रा ४ याचयत्तधूसस्यहुंतावधंप्रदाप्रथक दिह्लाकंकुसंनारिह
कर्पलपूजकागुनवातांस्तनसर्वाहोवधयार्थेनयाजयत्त धान्यमध्यगतस्तुप्यचकुदिनविह
षक याचयित्वाहुमधवीत्वागर्वचमगंरुवत्त सोराजनंचरुगत्तमसिद्धिंदुर्गुं हि वि
धस्तुहितनारिहजातिहस्तसमन्वितं सगामदंसमंचवमदिवाचसमंरुवत्त पवार्धभक्तकि
पूष्यंजामत्तसमन्वितं सिद्धिमायायावृक्षस्यस्यवाचरुत्तपूत ४ पवार्धगन्धपूष्य
सगाममिथुकावयत्त अन्ननवदुयागानमासेमासेनदुयाजत्त नाताआगवद्दुवांचेस

५००

बादभानुगमरुचक यनदागवरुदंचकडरुजालुसुपयक मदेयानंविनापसंक्षमंचेवघन
विनाभाकुनंचविनाधर्मनमकिदं मान्यासंरुचामयंतकाश्चित्समयारुचक आत्मयुग्मच
संकश्चिदुनुरुषुनलसक अथवानुशिपानंचदेवतामहिताषयक पप्रनसुभननवपुयाग
नास्यसंरुचं वानुशीचसमारत्याकनेरुयन्यानवापना न्दीश्वरीवाधिवेजनरुषांचरुच
प्रल्लिताह रुजयलुसुसंवेयंपिवक्ति कनूहममूखाक कोटिस्पदययागिन्यासिद्धिमाया
नगममिनी रुत्साहावालुदवीधेमशपानलुकावयक सवितापप्रनसुभंयथाविधिपूज
ऊहमह रुजावापवपुवगाहपप्रनकावंचरुपायन ओंकावाऊवयागच ओंकावाचदेवकी

रुकावादिबलायमुच्यते वातात्मनरुडकं शंका नंरुचनिर्गोक्षपयागंरुसकावयत् रुका नं
हावयासर्वविहयायागमरुमं गतिवपसमापि सपमनस्यभनरस्यं रुकीसर्ववीक्ष
ववर्जवागहिनायकी पमनस्यभनरविहयासर्वयागिनी पमनस्यनसमाख्यामंनरुम
वैविह्यतकं दयादयंरुसंरुमसर्वेदवहवंरुड जागसर्वतदावृदादिडुवनचनरुकं नरुस्य
नमहाविभ्यनिर्मिहंलजयरुगठ आकाशमरुनपनजायकपममाहुं यागिनीचक्रमध
षुसहजवपिनीक्रिडितं वधकर्मसदाक्रमआतन्दंकेवृगरुचि यस्यस्यरुडकमाशिरुस्य
स्येचरावकर सर्वयागिनीवसंयागिनिधनवाधिमूलकं नावरुगंरुकाकल्यानसुमानाडप

मधुक सर्वपापप्रभम्पुगतायुषं निवर्द्धे कामना सर्वसिद्धिनिपातिनां रुचशुद्धयः सिद्धि
लक्षांश्चिह्नं न चिकत्तं नैवकावयत् अन्त्यधरुचयागनचिह्नं सर्वप्रवर्द्धे कथिक्तानां कुमेन
वृत्तमभनवाचकार्ये कृतासनापनिष्ठाकसूत्रपंथगतदृशं वृत्तमहर्गवान्दविनृत्तमान
स्तथागतः सर्वमद्यसमायोगमहजयषसदास्तितः ॐ वृत्तिधीवजवावाहीकल्पमस्त
रुक्तवाजवावृत्तीनिर्देशपसन्तुष्टनपकनानासमधिगतिः पटलः ॐ अथवि
ह्वविधि वशुह्वया सर्वमस्तितः वावाक्कादिपुयागनसाधयलुवजयं वाधिचिह्नं ह्वितं
यजुनपनिनीकं चिह्नचक्रविजानीयायागिन्यापनमाकनं कालिकासां प्रयागनवाय

शोहनमां प्रकिर पञ्चवात्यन्नचलाश्चरस्मिं काले लयगता साहिस्वचक्रुषाभं हि जययंरुह
नचक्रुषा जगत्सात्कर्गनेपणुध्वनिगद्यमानसा भस्वागतिविधेनादुदियगन्धानूलपयं
किं कामानन्दनस्याजायोदिव्यनसपुषागकः जिह्वाविस्वनसमाशिसइस्यंजनिकमध्वमा
स्पर्शकाननकायस्यसमाध्वं पनमाकनं पूर्वनिवासानस्यस्यजायेकरुत्तयागयात् अहनि
भंसमंक्रुषानात्रीषवत्तमवच षष्ठीपनकुहासाधिघटिकाहुनिवाजयेत् दादभंजुलमा
पासाश्रुहोगुलयेवमाह्निं षष्ठाङ्गलापमाहानगलाका दादभंगुला ऊभानवमह्म
चकाष्टयमनामेषाः आह्नादुचविह्वाभहिस्वत्वासचानकः षष्ठावचमितायासांलक

११३

होमकर्मसमाहृत्य हवयशानिन्यादिकां कालान्तिवाचकम् मनुजानां कनिककृत्यापि नील
ऊजापतर विश्वनृपमिदं चिरं यद्गच्छति साक्षात् स्वरावाप्तातिर्नेवास्म्यं गच्छीतां लग्नया
स्ति हामं कथामिदं मुपवताया विवमानिकं सर्वोक्तोक्तुविहयाधमोदयाकथारुतां
हामेयहसमाधिस्तु कं कस्यां कथं स्ति च पंचचक्रविजानीयात्वात्माया पचचायवः रुहा
तिनाथयं वीजवज्जवाहादियागवान् पचविजानि होमादिनामपंचमां अथानसृष्ट
वश्चामिहामकर्मविशेषकः राजहोमाजपस्तुतुं दशं सहस्रानि साधकः पूर्वोक्तविधानेन
हामकर्मसमावहकं महामास्तुकीवशात्तां असाधनामविदहिंरुः रुह्यानिर्विकल्प

४४ संपूर्णसकटकं वरुणं राभमनजं शुभालसां सनदद्यात्तत्र साहसिं मध्यकीनं समात्ताञ्चल
 कुम्भकलुहामयं लहरीतिगानं शुभं जायते च महाशुभं विष्णुं कुरुते तन्मानसात्सिद्धिं कुहाम
 यं कुरुते नारायणे प्रकृतं तदुषकं गन्धर्वं कथाकोटविष्णुमकुरुते न एते दक्षिणहिमं
 कुरुते प्रविने भममन्त्रा मध्याद्रवोदकमिगम ४४ हामयदकचिद्वनचभुगानि महानि ॥ साधना १८०
 पसमायागं मच्चनयावनादिकं सहेत्यवलवानस्य मन्यथा मपि वाक्या उच्चाटनकथावच
 नकुम्भं वनदपि ४४ काकपुत्रवन्मतिन्वतिर्यो सन्ते लविप्रुह विष्णुचस्याग्निप्रहात्यव्याय
 व्यादिनिकम्पुवा ४ उच्चाटनसंदह ४ सफनाशक कर्मणि विदेष कर्ममार्गो निम्बप्रकुम्भ

[illegible]

थान्नवंचभूमिभक्तचतुनकासुकं प्रमाकर्तुं कृत्वाचसुवर्कवाचनन नामाहि साधन
 खचद्रुदयसुपयसुधा अथवाअथमिष्टिर्नरदाकार्ययति कनर द्विकरुकेनविलिखंशि
 माससूचीकुविध्वर साधसुद्रुदयनाहोगेकविध्यासुतयसुधा सुवर्कलोनिजायाहना
 मालिख्येकस्यउपनिवासहस्तनासुशक्तंअथर यस्यानामसूच्यार्थंअथसुवर्कलज्जमरु दवागदुमि
 उजाकयउसंगेकसाधका मालिख्यनयजलेकाकपक मालिख्याउर्द्धउर्द्धगतायनेजिपक उच्चा
 टनमरुशयापिवातवाहिसमयं किलगकर्षसाकुलसफाहिमनिक्षमकृत्वायस्यवागसकननिलेनरु
 ह्यगमशद्वन्द्वारुवति रगमहस्तीश्वसवगद्वमोहिवातांस्तुनेनिरवनेदिनामरुवति अथकिमपक

वस्तुनस्तननककलं पाटयतु तागमन्त्रिकासभनकालयत हृदयसञ्जुमालिकाऊप
ल्लुचुचुदंभंविभाषकर अऊपदंजनकससर्वजाकिनिपण्यति अंरुतलिराखाहा वेत्
पौमाऊनसकुः ककुपसखत्यनेमादायहस्तिनदिगहीबागहृधूपपदापयत उरुनपससंभा
किमददरापिनिधिर्न अंडेदकेनसमाजाकउदकेनसंरुवा कषाचेगुडपङ्कचंरुदाचध्वगिस
हानलः मसकाःरुपासाचवडांरुदसमागदुकि सूर्योदयखाहा मऊचुचुधोपलाचकं
नथ गऊंनकशालंचविंशतिवानभवेच ऊपचुचुपूदिशर किपलमकातिवानभं रुखाक
उसखीरुवगिमानवाश्चसमकता सुखनलरुहमऊंजापंवातूरुनंरुवतु उरंभागवत्

पूर्वसर्वथागवचारुमं हावहनकमखिलं इव न पविचर्जितं सर्वथा न हावकः सर्वथा
 यागवान् सर्वमेतत्समाधातुं स रुजयागवर्जितं मूधावस्तुनपुनित्वायां मलकलपुष्टान्
 यागिनीकलुषाय सर्वोपकर्मोपिहिरः अहनीयं सदाचार्यो कर्तव्यं च यथात्मनो नो
 कावन्मननरूपस्य हावजनितं पत्तः प्रकिमंलं यथा मम प्रकिमाचापातकपच सूचीज
 गच्छतस्त्वायं पक्षिं कालवसंरुवत पंचदशविन्याम कस्य मलु मूर्ध्नि कोनवाक
 कालिका मेव हावकवीर्यस्यो दिमेऊवो उदयमलु वागच्छावायुविह्वनभश्च नोतिं
 कालदुषामन्या सर्वसंपत्तिकानाम् विनामलु ह्यनपुष्टातिनां पतिद्विनां संसा

शीयं ह्येकस्मात्कारुव्या ह्यपथागवित् माद्रुमस्व्याहिकांक्रानांमिहसूखमहासूखं श्यागिनी
महिमानुदंतदारागविकानयत् मत्ताभं चयथा चापि सचिह्नममलेपयत् पंचामरनद्व्या
निमिथाहृत्पदापयत् मत्ताभं नंस्त्रापयदीमान्द्व्यालये मगुलेस्त्रह समत्तादयाधमो
दयालुभसमानिच विहायकस्त्राभममत्ताभं जल्यकवातिच एकांक्रानसमासायवंचानंय
जयाग्राहिका वंचायादिप्रतिष्ठाचंचुवाकृवादिवांस्त्रगाः शुक्रमकस्त्रिंमत्ताभं संक
ताद्रुममत्ताका समयंचरुगावान्द्व्यापुतिष्ठाचंचकानयद्व्याः सर्वकथागरुपदधर्मधुः
सन्तानकाः कायवात्त्रि रूपद्वयोगिनीनान्यकांक्रिडः हेरावपंचपंचकत्ताभं क्रिया

दिनिनिबुद्धं विजहायुवंभवंच यागिन्यादिप्रतिष्ठिता सत्त्वावज्ञानभीकृत्यामलिङ्गसर्वं
 कर्तृत्वं सदायमाकुपयोगिन्यामलादयपनिष्ठितां कस्मैकिंसदयैकलोकिरुक्तं सर्वदिकां स्व
 संवयमहाज्ञानंस्वसंययास्मदवगाः स्वसंवयमयंकर्मसादन्याप्रतिष्ठेयं नृन्यंचेवप्रकृतं
 यं रूपया सर्वकर्तृत्वं विभुर्द्विस्वयंज्ञानस्यमंगुलस्यादिदवर्गं विरूपादिमत्त्वाचैवमर्त्यजायंवि
 शुद्धं नृन्यानां शुद्धिनाम्बुं सजसंवाधिवाऽऽः सकदशमनाख्यानाः हवनिर्वाशापाइका
 ४ सर्वाचमनाहवमविशुद्धिंरुद्रं हवन् मलमलादिशुद्धिंच सर्वयानार्थं स्वचर्कं वज्रपमा
 दिजनानां शूलकस्यशुचर्कं मंगुलशुद्धिं सर्वचधर्मसंग्रहस्वचर्कं वादभाह विभुवात्मा

इति श्रुत्वा वदति नो स्वभावनशुद्धिविरुपाषाडभावां कलाकर्म सर्वशुद्धिविजातिपादुज्ज्वल
मथाह्वयं सर्वरूपानकं सर्वमाशुद्धिविधानकं यन्मसंगं रूपं च पृथक् पृथक् रूपतवादि
तं नाम संगीतिशुद्धिरुपांगपागिति कुरुकं माथापमकं गत्सर्वं मशुलकं मशुमया उ
कं स्वसंविदं रूपं यजुज्ज्वलविधानकं स्वयं गुणमूलात्सर्वमायासिद्धान्तलज्जं उपदधागम
मानं प्रति संधि महास्वरं तस्मिं काले दुयाशुद्धिवद्वाहूमरगमचनैत ४ अथ वयागीतीत्य
च उह्वयति स्वरं यदुयावस्वरं परं मशुद्धिस्त्यादय होयसंवात्यनाक वावाको मलुमवाक
४ साशुद्धिः सर्वरूपकं इन्द्रियविषयालीकं समनसं सर्वपागिनी धर्मकायकं शुद्धि

सात्त्विकगुणकामिकं च विदुः शिरोऽर्थाय यथायथा सहजकायिकं चैव सत्त्वादिपूतं कुरुचक्रं
 शुद्धिद्वितीयं कुरुचक्रं मर्त्यं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं
 किं कुरुचक्रं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं
 शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं
 शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं
 शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं
 शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं शुद्धिद्वितीयं

अहंकारवक्ताः कथाविद्याहिदाप्रवृत्तवादिदुर्धनं वत्साध्यागिसंवेद्यमयंशागी
योगकथामपूनर इत्याहृगवात्सामोदकवावाहिकत्यकार सर्वेशानिसमाधाम
वज्रसत्वरसखात्म्यं २३३ इति श्रीवज्रवावाहिकत्यमहाकुरुवाजीहानादिमुद्रि
हिदात्मजनामसफविभक्तिपटल २३३ अथ कथं लज्जामूढासहजका
विद्यां अहंशाध्यागिनीनां कुरुवाधिकवर्चकी अहंशास्रवृषाडुदिव्यामाडुकासिनी
कर्मजाशाविनीभजादाधाविद्याचमातवा समान्याहृददाताचमासकीसमनस्तथ ह
वत्ताहाववृषाचमूलावनिष्पपंचतां ध्यागिन्यादिमयंकर्महावनाप्यनहावना ललनाच

लसनाचत्रवधूनीरुष्टवदला प्रवलाचासासिवाचत्रज्ञासर्वजनप्रिया कंकनीसावरी
हंसाचूचिताकोमिनीगुहा चण्डिकामानदामिकाचक्रसूर्योमिवाहूका षड्विंशगिरियागि
नाजकेकसुखदादगः हृदयिन्नालुसर्वचउदभांसडिकिपनः अकारुगुलीदशज्वेनरुष्टयं
गुलदर्शयन् श्रीधार्जसहमानकातःकुम्भगुष्टदर्शयन्तः सर्वेषालुयागिनोडुतस्मादर्थसमा
नको नानाकर्मविहयासर्वजगत्प्रताप्यनं कनिष्ठाकस्यपदर्शयन्सूयाकूबूडुनसुड नामिका
दगथयाडुतदातस्यपदर्शितो चक्रसूर्येहूकासांललनायादियप्रवचनैर्जनीदर्शययाडुमथ
सांचपदर्शयन् वजीपत्रप्रवारानडर्धमल्लिप्यनयन् ललाटदर्शययालुयदिसंगस्यपदर्शय

१८५

उच्छ्रितां नहि संयागी कदापि दयया हि नाह भक्तं च दर्शयथा सुदृश्यतस्तस्य प्रदर्शयत स्वमंचय
सूत्रं कुरु बंधनमुद्रयायुक्तं चकंदर्शयय सुमदिनी तस्य प्रदर्शयत एतां स्वनंपदधनं रुदि व्यंदि
यमूकान्ननाह उक्तं न कुरु यथा ह नाहिरस्य प्रदर्शयत धर्मधातुस्ववृत्तं च हाति विहय नमस्कृतं
आकाशं दर्शयथा सुसूर्यं तस्य प्रदर्शयत गन्धता केवूना संम्यक्तं नीलीया रात्रपदधनं
लुकुटि दर्शयथा सुमकुं तस्य प्रदर्शयत कुंडं तस्य यागित्याश्नरुवं स्वयंत स्वयं तदिदं दर्श
यथा सुसुदं तस्य प्रदर्शयत उक्तं ह मी प्रयाग न सर्वं ह मिपुत्रास्यं जो नंदं दर्शयथा सुपादं
तस्य प्रदर्शयत सुगतिं गति कालं लुच्छ्रियं वस्तुतस्तुतः कुरु न संदर्शयथा सुपीदी तस्य

पदार्थक सुखं शास्त्रकं जातं याचदाहवसंप्रवह वाहं दर्शयशास्त्रकं कस्यपदार्थक
क कलितोदकवक्रातिपंचामकं वृजापयत दुनूचदर्शयशास्त्रकं कस्यपदार्थक कादल्यु
कोत्रपाक्षीमध्वमचलीनकं जिह्वासंदर्शयशास्त्रकं कस्यपदार्थक चणुलीसर्वनाडी
ममिलित्वाकुचवसिना गण्डदर्शयशास्त्रकं कस्यपदार्थक मूवाच्यसर्वधर्मसंविस्त
मिसर्वमिन्द्रियं मूकुल्यागुंदर्शयशास्त्रकं कस्यपदार्थक कटिलं सर्ववर्गचक्रं क
कस्यननयकं गिरंदर्शयशास्त्रकं पादांगुष्ठपदार्थक मणिमूकुलस्य चत्पाक्षद्वयधर्म
ध्वमाखिलं कण्ठदर्शयशास्त्रकं गीवाकस्यपदार्थक यमंसर्वहं पण्डितमनुलामकं

१८३

यथ सूर्यदर्शयथाशुक्राकाशंरस्यदर्शयत् दृष्ट्याहृतं सर्वलावस्ययत्तपनमाहुवात्
भदिवादर्शयथाशुक्रादकलपुदर्शयत् अवेसमिकलंयस्यपमपुमितास्वना गगुंदर्श
यंयाहुकपालंरस्यदर्शयत् सर्वसुखियोगीनांपुलावाकोशयोगिनां लिंगंदर्शयथासुशु
कंरस्यपदर्शयत् अऊनोऊनोय्यमायोनमवाहृतं समदजा कमगुलदर्शयथासुपर्वत्
रस्यपदर्शयत् अवन्यामरुधमासुपर्वतास्यांनदीयथ कर्तुंस्थगहियानावीपुष्टव
रस्यपदर्शयत् सहजसंयोगिनी याहुप्राप्यगुं किंरगचनान् वसुदर्शयथासुनागक
स्यपदर्शयत् सर्वधर्मास्वहावधनेनात्म्यं पश्यन्कृष्णान् दक्षताष्टसंगकृष्णपादककिटादर्श

[illegible]

नारु नुवंधिंभमद्रादुयागिनीमूडासुभापना अकिहवतीचानंविहृयाचवजचर्क
पुचकुमकलपस्यांचसुनआपीपिनायकी पुकथपप्यनपसंरुवकिहवाकुवंग चनधर्म
चविहृयायाचददयगमचनं अकिभीकालमारिलंसहजाहृवमीलिनं वेजाऊनवि
हृयासीनायकनूपिभी अद्विपादस्तुहावाकुदंसर्वषमद्रया उकंस्वहावमारिलं
सुअद्विपादमिषाह मूडासंकनकासर्वायागिन्यास्यद्विल्लज्जं महुलचकमध्वषू
र्वाऊवर्जनायकां सफद्विभल्लकमाध्वसक्राहसर्वषयागिनी अकिन्यादिवादगमनास
कावादिमूलग्नकाह यागिन्यादिचकुर्विभकालेनधृवास्यु सर्वचनकसंकीडावागः

[illegible]

जादवी राघवपूजाकर्मजम् सर्वपादवीनापञ्चभुवदुल्यकारिर्पूजः प्रवचनसूत्रसंज्ञाप्यपञ्चजनसंवि
दम् हनवाहपुत्रवर्जं लखांशकाशमध्यगम्यमानोस्त्वहीजकीं प्रवचनगिनीगुणंप्रवनादि
बलकर्म संचानं सर्वकालेषु ह्यन्यामक्रुसंरुवां मीलनं यागिनीषाकंप्रवचनसिद्धिर्लुका न
यत् कदाचिकालतो ह्युपास्त्वप्सिद्धिर्लुदायकी यादवी कर्मतादृशं यादवी मोदशं फलं
फलहृदकसंचयध्यागिनीजायकस्वयं हृदनास्ति प्रमृज्य प्रमृज्यकं तथा प्रमानं भक्तुमी ह
यायादवीसूत्रवादिनी चक्रसंकेतह्यन्यान्दसंप्रवचनं मीलनामीलनं समं वा मंच
दक्षिणागतिं कृत्वा प्रज्जदाकर्मचन्द्रकर्मसन्तज्जकं कोपंसेतुं नतहास्यक्षमाशुभं प्रवचनं

वा १४ माह ६ व माह १० वे वागं मान्ड ३५० ॥ सुकान्तिका मय मायावी ३४ ॥ च तामन्त
 नम ईपिहि वरुष ६० ॥ सुदवागं संग्रामं च सुदवागं संग्रामं ॥ सुदवागं संग्रामं च सुदवागं संग्रामं
 हिंसा दृष्टि को मयैतपकि मूला ३५० ॥ गिरि ३५० ॥ सदा दपेन जल मयैतपकि मूला ३५० ॥
 आकाश पदम कर्म ददवा नां च सूर्य ३५० ॥ मयि मयि पुवा लक फकां च न जाल कां काला ३५० ॥
 रुक प्या मयैतपकि मूला ३५० ॥ सदा दपेन जल मयैतपकि मूला ३५० ॥
 क्रिप दृष्टि को मयैतपकि मूला ३५० ॥ सदा दपेन जल मयैतपकि मूला ३५० ॥
 हिंसा दृष्टि को मयैतपकि मूला ३५० ॥ सदा दपेन जल मयैतपकि मूला ३५० ॥

१८३

एवं कथं विदुः पाषाणं चिद्रुवाहकां च कृष्णपादममृदागदशं व्यातमाचनम् तादीपस्तनमा
सायगिगया सर्वशंभिकां मरुत्तुर्गोमहादृष्टिर्नरुयायास्वहृदकाः प्रवृत्तासु फकिहं यथा
प्यरुसर्वसंपदा वावाहिपागिनीपस्यां इह विग्रहकालकां बाधियादिक धर्मचक्षुष्यन
सर्वपागिनी वीर्यमाधियादाश्चैव वावाहिपागिनीसदा पागिनीसर्वविकल्पयुक्त
क्षमचदृष्टियाचल प्रकृतिचिद्रुपवधनाचेकचिद्रुवा उवमायाविलोकनासुनाम
दजाकिनी संज्ञाद्विपवमार्थचक्षुःकिंभन्विता चक्षुष्यमवाहिसर्वथागपसस्पृश आ
लाकोर कनूपागीपकासं सर्वनाठिकां पागिनीचक्षुमध्वसुवय यदिमां नयं यति

नीमूपाययूक्तं सफुडिभक्तिपासकं तदाद्यमाहिधनतसर्ववाधिसूत्रयकं मन्त्राक्रममूवा
त्यन्नासंचानधामयागिकी वल्लुनपयधमस्य वागकायागितीषूच ओं सद्यं नक्षत्रासफुडन
मुहीनयसायहेरुं न इवायत इह इह दृष्ट्या दृष्ट्या हा ओं चमुकीय इह दृष्ट्या हा पूर्व
गिनीक्षणी १० प्रचमु सर्वधागितीं पूर्वमासीतलला नच चडादयमहागितीं अवमर्केकपा
गित्या स्रुक्तं नमविस्तुनां उर्केकस्य चकुर्वि शयी अभपपी ० वांपूतः ध्यानजायमन्त्रभाश्र
कभाहववर्हि जाः कालाकालसम्पात्ता इह दृष्ट्या कालेन लक्ष्यं श्रुतवाहवपिगुस्यहवर्जा
मगसंख्याः क्रियातन्महाकले विसिद्धि संवाहि कानकीं हृदयचक्र सनयाचक्र स्रुतवा

काद्विद्विः वानाकाहलिगान्त्यार्द्धदयस्यस्युपागिनी ॥३॥ आहृगवान्जीवज्जवा
कथागकः सर्वथागिनीसमायागाः ४ वर्जसत्तपनंमुखं ॥४॥ ॥५॥ किंजीवज्जवागि
कल्पसहागकः ५ वर्जसत्तपनंमुखं ॥५॥ ॥६॥ अथ
॥६॥ संप्रवक्तव्यमिदं साकं नपथाविधिः सत्तावेमच्यते किंप्रंयागीसंस्तोमवन्धनात् दाजलि
जातांसप्तदपिषितवाजिकाचटः ॥७॥ किंपिटकणीकूटनृकापूरं सिमनकं स्वयंभुः ॥८॥ कल्पलि
गाथासमंवाककं नं कालीकनं ॥९॥ अलीवीनं नृपकंपिण्डवनेभ्यंजनं ॥१०॥ नालीन्धनं न
हसंरुवं ॥११॥ कूटनृकापूरं सिमनकं स्वयंभुः ॥१२॥ अथ ॥१३॥ उच्यते किं

सर्ववृत्तिरूपसंयोगिनी पूर्ववृत्तिरूपसंयोगिनी मध्यमासंयोगिनी अथवा उभयवृत्ति
याः सौम्यतंशुक्रं वक्रं सासंजं वक्रं स्त्रीसंशुक्रं चलिगयप्रमत्तायकसंयोगिनी दिग्गमासं
सर्ववृत्तिरूपसंयोगिनी तं निलसासंयोगिनी पञ्चपिपिपिं संग्रहसंयोगिनी हस्तिमखननं
विहसंशुक्रं वक्रं मज्जं एवं च पञ्चमिदं सवाह्यरूपं मज्जिनी उत्पत्ति सर्वकालेषु योगि १३९
नां सारसंयोगिनी उत्पत्तिरूपं सवाह्यरूपं निर्मासं सत्त्वकावयं वाधिविहसंयोगिनी
संयोगिनी च पिथीपिथीवक्रं यावाप्युच्यते आकाशं सत्त्वकावयं मपि वक्रं सत्त्वकावयं
हिन्वा सत्त्वकावयं सत्त्वकावयं सत्त्वकावयं सत्त्वकावयं सत्त्वकावयं सत्त्वकावयं सत्त्वकावयं

[illegible]

चलाः उत्पत्तिः सर्वस्वतामिद्विधाः अथर्वजिह्वां यकात्राकावकं वृषं आपादान्कषमस्तुको नाद
मांडात्रिहं सर्वस्वयं रुधर्मिहिकां एवं च रुद्राज्जाहिकायधर्मोहिकातिच नीचमस्तुको सकास्तु
न संजाहोमीमास्तुच अद्विपादाविहवनं लाकमस्तुच रुद्रस्व सर्वगुहचकचदीयकमीहिकेहना
नात्यापायाति संसाव सर्वगुहमस्तुच ना मडाकत्वमहं वक्ष्यथाच कत्वहावनां हावनाह
ववृषं च म्हावहचवृषं ह्यसंवयमसंकर्महावनाप्यनहावना मडाकत्वविधोरागनऊरुमहं व
प्रजापते मडाकत्वमिदहसर्नवाक्यामीहगाचव जायते म्रुद्राकालं सर्वहृहपनस्तुमयं सर्व
हृहवावचसमस्तुहृहगमस्तुहृहजिह्वा मडाकत्वनिजप्रतिहावनाः प्रकृतिप्रहावस्वम

डाहकसंविचारागचलर निर्विवादरभाकननिश्चिष्टमसंवादिगस्तुतार अवाच्यालजभासर्वो
हावसुहावसंलिकर भूयाकानमडागलगाद्यागुहावर्जितार इदंमडासुवाद्यंयमृजाद्य
वहिनं नोद्यदिहंमयाकाश्चिदध्यासुनसुमपलिकर पुनिसमास्तुदेगितंजितेहस्त्यम
दायका नस्यागपकटपपटसंलुहिसहागारम घनानद्याहकोरुपवननमासंपूर्णमडाग
लुचनंनम सुल्लनानाकानेभूडपचिरुसमानिच समस्तान्नगरातविनयहकुलोकोल
यमृदया स्वहावसहजमित्कं सर्वकालैकसंवनं मगुलंसर्वसहंरिमडाकालेविह
ऊहमर पागिन्यापागिनीसर्वोमडायाहवत्तमगुल सर्वोदधकावसायइस्तुलितंर

वृक्षाक्षिं नानाहासोपनाकाभमहाप्रमननायकं सर्वहावस्वहावत्वात्सर्वहावसुदाक्षिं
 स्वपंपंयुहावतांस्वपंपनेवहावतां निर्पंपंरुमासातन्दरस्वर्यगुन्दयस्वशो कथं
 चिरुनयाचिरुंजकविश्वचवाधकः हावाहावेविवकताविनहिनस्वयमाजंन सानन्दा
 नन्दमपठपवाधमहिमाध्मासान्नवंपापनः तानाकावविभातिनिर्मदकयादर्शरुलंम
 भुलं प्रायसर्वसुखानयोरसहजानन्दचक्रुध्माख्याया नाहुपसुनन्धापायसंस्पकस्वाववा
 धकः यायिन्यकल्यताःसर्वोऽमभुलंरुवहाक्यं धर्मसंहागानिर्मानंमहासुखमिहिक
 मः महासुखस्वहावेनसमंचकचक्रुध्मं तिःसंराचिचनयागीसर्वहावषसर्वदा नि

१९३

नयः प्रकमध्यमि संसा नित्तकालय शुभगुहासममगास्तनवांचीर्यमकरं गुनजन
मथरुकरवीशुभवदुत्तं अधिगर्जितधमरसासतनपुसंनरं सवंधुहगावतिपाक
रस्यकुर्यापसादं रनानपादिहिन्नं धारुकसंविदां सयागी नामविद्धिन्नमातन्दापिम
हावतिः यावन्नावाधिसंराचरतावन्नाधिबनिर्मलाः पुह्यपायात्मकायागी अतर्दुन
रुत्तंयक साधनाम्नाययागात्मा आलिकालि यथाकृताः धर्मकर्मसमायागमहामूडा
स्वरावकं चक्रमूडाहिधानत्वा चारुगोककल्पनां श्रीसंवद्धविहया मूडाभविषोदरु
ध आकाशचक्रमाख्यातं दिव्ययागिनी मीलकं अधिपतिमहामूडा नामासफका

सूच श्रुत्या न नासत्यात्मासंप्रयगहि न सुतकं मध्यलक्षयिलक्षुवमहसर्वपाणिनीं वयंसन
 त्वनीयातीमध्वगंगमडवाहिनी धनरुध्मदकथा गानपाशापाशकधामयत्त वानचि ह्यनकंस
 ताल्लक्ष्मंरुक्षयत्तच चिह्नचनियतयदसुक्तविध्मावगमहयत्त सननगहर्कंमादुहसर्वद्वम
 यामयत्त मनुलचकमध्वषूलावयदिमांपनर प्रक्षपायासुहावेदमद्राक्रममद्रुवा वरुससु
 नपूर्वचहैववराजालवाहिकं वीनवीनगमकुंरापाप्यरदित्यकायजां निवसिखाहललागंचवा
 मदक्षिभकार्गुयाह पक्षवंसवाहृच्चनामरुनेहम्रास्यकं वरुहृदयवाहृच्चकजसुतकुपा
 र्वेकं नाहिमनुगुल्लिगानूजानर्जघपादकं म्रुल्लिनंगुहृगलुंपादकनलुसर्वथा म्रु

शुभाक्षिहस्तचर्मकर्मशिलालापार्थकं सीमाउदनकंरुयंघागिन्यादिप्रसदा युक्तिस्तदा
यागिनहस्तोदुदीयकयथाक्रमं वंशवीधमकंसागीतामकन्दामृगजादिकाः सात्तालाग्या
नृशुकलाधरागन्धानेविशकाः छत्ताक्रमापात्रापाद्याश्रंगदीपाकलषका वस्तुद्वेषा
दुष्टचित्रितानेचामनाकथा पताकागानेदामंचधुजागन्धकूटकं शक्तिहाराध्वहमंचकिं
किष्ठीजालकंपूतः सिंहसनसकूटंचनत्तनाताविधकथा एतजवर्णापपी०रुद्राशुर्वः
लियस्वरावकाः वीरवीरेश्वरीधारानसर्वमूद्रापकथनं वीथिसहजहावायांषड्विंश
हावकास्त्वकं स्रन्धधुष्टविषयमिदियकर्मकर्मिकं विषयमाद्यंरथाकृष्यद्यदंस्व

यथाक्रमान् कथं गन्तव्यं तस्य संहजं तान्यवसुषु गच्छिदित्युपायान् यथासंभवम्
 च संहजं यागिन् स्रष्टुमर्हति न तं महासमयं भलात्पश्यन् गच्छेत् संविदकु
 र्यात्पुनरास्त्यं सदा दक्षिणं व्यवस्थिता २॥ गच्छन् यत्तव द्रष्टुं स्वसंयथागिनी सख्यं
 धर्म्यमानं सहाचरेव सादक्षं न गच्छेत् तं वर्जयाम्युपविष्टस्य कुरु कुरु शंभुं यागि
 नीचतमोऽस्य स्यात्तच्छ्रुतिहिंसायां च ३॥ गच्छन् यत्तव द्रष्टुं स्वसंयथागिनी सख्यं
 न भवतीति चेन्न चक्रे मध्यं तास्यकी सफटिभस्मकं यागी मल्लुपकं नायकीं तानाविक
 ल्पमदासु संहजं विर्यं तामेतां वर्ज्यं संस्तुतपूर्वेषु कुर्याच्च सर्वयागिनीं विर्यं संस्तुत

१३५

अथ स्मादतिथानसममद्रवां तान् नूतयागयकनक्रियतनसंशयः वस्तुजिह्वदुविह्वयां
यमकापूर्वदशिकां प्रतिक्रियमानेचांन्यासिप्रतिजिह्वद्वयंदिपं नानागामेषकृषनवर्त्ति
तंसमानवरे ॥ इदंरुद्रंयथागकनरुद्रानरुद्रविध्यति यदिषकिजनामर्द्रोन्विद्याइष्ट
चकसाः प्राप्नातिनसंवर्द्धनंनमवापच्यतधुवं नस्मान्पुसंतचिन्नात्मास्विद्याकृताद
वां प्राप्नातिवृद्धत्वमविचानमृदसंरुधयमां हकिनमुसदाहृत्वाश्रूयमागोपवर्द्धतां
वायुचक्रमृयागिन्यावल्वान्चीर्यमस्तकां लीयतेषमहाचिद्रवजयायुःपरुदकां ॥ इत्या
हृगवान्स्वामीवावाकासर्वकथागतः सर्वधागिनीसमायागः वज्रसत्त्वसुखात्यं

[illegible]

दयनिर्बन्धः कृतमन्त्रचक्रं कृतस्य कृतनासां मन्त्रान्तरः हस्तकान्तद्विषया लुब्धाः ॥ १० ॥
 निचाकुरे च कुनकुल्यकस्य कुनकुल्यकस्य च कुलंगुलसंरुकासां पादाकान्तान्तरं
 च द्वादशकालकालस्य द्वादशकालस्य च द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य च द्वादशकालस्य
 पिताकालकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य
 यलुपासनाकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य
 कुनकुल्यकस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य
 निचाकुरे च कुनकुल्यकस्य कुनकुल्यकस्य च कुलंगुलसंरुकासां पादाकान्तान्तरं
 च द्वादशकालकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य द्वादशकालस्य

सापितालमखं कृता उदयापीनयस्तदा वर्जयत्किरिगुल्पासन्धिसन्धिलुसर्वशः का
ध्वजा (स) श्रीदेवी चटिचटि कुकिं कवी घालवीरुसूत्रपंडुनेवतामविचितीर्न कामकम
शया कव्यं मनुलाचक्रदवता मध्ववर्जवाहाहिनुनालेकभविदितां किशीदीर्घमहाद्वी
विवर्जं घस्यदेवी उच्चावस्तानुसूपागिनां नियतात्मन श्रीनिद्रसुमहादेवी नास
कर्मदिमकुली दत्तनाशसंगकचर्षयदावकंसूत्रात् पञ्चभुजाभयचिचिधिया
नालुगएवच नियतंसिद्धिहानिलुमिदवेचनमप्रवीत् किंनिस्तुलमहायागजघापादा
दिगनुयाः मानविप्राभयाइनंसाधकान्नियतात्मना श्रीनिविभमहादशकपालिडुन

पञ्चमं हवकमर्थहानिकुशीयुं नान्यसंगयः विनिवदमहाभागं कृतककुललाटकं
कलहाशुपीवले मचिबनेवसाधक श्रीनिहीनमहादासः उन्कायउनदयं ह्याश्र
पचोरोनां मृषायलुनसंगयः केवलं हि न तासं कर्तुं शक्यं नलाटकं नानाविधं च
मनभोगीनां नियमस्मनः उद्भट्टि ह्यासचचनमासंचहिन्नकः हवकमर्थहानिकु
स्वाभनंलरुसदा उन्दीवादिमंगस्य मृसंख्यादाखकीर्तिं चरुहिनादिमोनायवि
पर्याचिंद्रमूदया एतकसंगपइरवस्य विन्चदाषादिमृकं विहिंसंकटकायस्य
आयाशमदुमानसं मरुह्यातिथियाइषामृपियाचकं पवयागिमहादासनिमी

जाशुविचानुभं विनिरुसर्वसात्त्वयचिह्नं ससमाहिमं सर्वलज्जुसंपूर्णं सनपावि
 भिदर्शनं सोम्यासोम्यरुद्रपस्यचिह्नविधिं सोम्यासोम्यरुद्रपस्यरुद्रोदरयन
 क वीरवीराङ्गसंकाशाहसिंहिगना माजामरुद्रपारागानदभं द्विकषेजाधिका ४ मूजा
 चपतिचिह्नयवदयसमयोधना जवंमूजावमरुद्रत्वाकपाटं सर्वदहिभं चिह्नं दयपु
 याएषसर्वोवाङ्गसन्निहा ४ मूजाद्वमीलनं कृत्वा योगयागिनीनायकां ऊर्ध्वचत्वारि
 सस्यानिरुस्यानन्दचिह्नकथा चिह्नानिर्वचकानिजवंपागकानिच उद्देशमिदं कुरु
 नदिर्दक्षमन्यरां स्तुतं सर्ववीचपयारागानरुद्रयं मन्त्रिभं विधिः स्वसंविहिनसा

१३८

नांश्च वीचनस्य वाचा हा प्रसूपात्मानि बाधमपगच्छति ब्रह्मस्य चिद्विज्ञानां च भूत
कोलस्य भूत गत्व बर्जा न भविष्यं देव्यं किं ब्रह्म न वा सर्वसंज्ञा यो गमत्मा च त्वान च
दुर्वात्मकां ब्रह्मस्य विध्यं दियं स न व्यं प न मां दुर्गं वा गम वा गो वि मिश्रं च न सं ह च वि मिश्रं
॥४॥ या गि मा ध्व स ध्व स ना पंच रू त्म का त्म ना र स्या स च कं र दान स रू द्र य क्रु र्थ गता
॥ ब्रह्म ना देव ना गम ॥ ब्रू ऋ ऋ ऋ ना वि च क्रु र्थ रया हि र सर्व का न क्रु च्य कि च सर्व द हि नां
न व द्वा ना त्म कां च्या मं सा हि र स च क्रु र्गु र्थं एवं क पा न स्तु ना नि ष्र डिं ग रू व र स द्वा वा र ह
दन वि ह्म र गु र्ग द्वा प क्रु र्वा दिं गं न त्म स म्भ क्रु र्ग द्वा र क्रु र्ग म्भं च्य कि का न र ॥ ४ ॥ सु मा र्ग ॥ ४ ॥

नं सनं नमो माहो हवदा मकर विन्दुना न स्य उर्ध्वानां च कृता नमो नि कर्तुया प्राप्ता नमो प्राप्ता नमो
 स्य लज्जाम ताहि कामिक स्य गच्छे विन्दुना नमो मदेहिनां उर्ध्व उर्ध्व च स्य नमो गता नमि प्रकी
 दितारे यत्नाय हावना नमो नो कच्छे त्या सिद्ध दवना च श्रये दिशतं सनं नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
 तां रुगय चानं स्य प्रयाता नां मूढ च विन्ये कनथा अथो नमो कता चानां मपान सर्व दहिनां
 अथो नमो शिवा शिवा नमो तां संचान कविश्व सफो विंशति जा नालु कृ द्दिकार्यो अथ
 ऊका विशुद्धि सनं नमो याना लु चाना कस्य हि दानिनां वीर्ये दिशतं प्रयाता नमो सर्वोपचा नमो नमो
 धं सफो नमो अथ क मध्य हावना स्य वदन्तिनां वजा रोमयो दिवीर्ये कपोत स्य नमो नमो

१६६

ॐ नमः पुष्पपायात्मकादयीपथिविसर्वपागारं मन्त्राजगद्विरुक्ति ॐ माविहकगठ
हमपरेखातिहापुनानिचकवामयन्ता इयं इयं इयं इयं इयं इयं इयं इयं ॐ खर्ववीयइंइंइं
८२ स्वाहा उवंसंक्रासमस्यनंपानमार्थिकयागजो पूनमपिपूजां कृत्वापुनश्चमइ
मैइंइं हावस्यनममूइंइं कीटगंरुगवाच्यनः गृहाश्चकनताहृत्वात्तजगंकाथ
रुमया सहजंमुखं न्यंचस्यसंचयमहासूरं धर्मकायसंहागकुनिमोहोवायम
हाहुमं पुनश्चनंचवैचिहंभक्तनिर्यागयोगार्ज पानमिनाश्रुइंइं माकुचपनमार्थजं
हसनविहसनवाधिवधर्मधामपुनरुत्थ पद्माधर्मादयान्ताचनेवात्स्यवर्गकंपुनः

निवन्नादंगुर्विशंभुत्वाकं कल्पवज्रिहं वसायनशोनकंचपुपापास्तु मचिठिका आयाऊनंपथ
 लंत्वसर्वेचपतिशुभकं यथाऊनकथाचार्थेविहृया नमकविषां यागिभ्वमीषयाएतनकरुंय
 यागिनात्वपि लवमानस्यवीस्यरुद्रुभमसर्वदा यागितीस्यनधादुधस्यस्वरावपुलकुरुभ
 ल्यसक्तिरुसंयगीगर्हपथेचवलिहं वीकिनीचातिसुभनंनमनरसर्वधुषु यागीलंजासा
 नजानेयाहावस्यनममिठिन ॥ २॥ वीसर्वरुमानांनस्यनं सर्वरावकार दनीकोठचपी॥ १०॥ पूसु
 मिदियवाधिपनर दसनाथयनरुद्रयुगस्यनमचिन्किं वीथिसर्वजस्यनंवीनगाएभपूयागता
 काटनात्तारुवायूनां ॥ ३॥ ल्येया नाकुर्वेर्वेत्येविहृनस्वस्वराकां स्यधर्मसलाकंचगभकंनाम

न किंचनः श्रुत्वा सर्वज्ञात्मा इत्येव सर्वविजिज्ञा न हावानच हावच कास्मिन् हावच
 न सुदीहावाश्रुता चेच विमर्कं सर्वथा गिनी पावंपर्यं गवश्च भुगुनवज्रधनं शुरं वा न
 श्रुतिमं सुलोकं देवी कलस्वहा खिलकन सफलिं भस्म सर्वं माध्यहावेयं त्वं नृपि का उषा
 यास्मिन् सर्वेषां मलस्यार्द्रनसं कृत्वा न आं लोके श्वरीयं इहं हृदस्वाहा पुनं ह्येवास्तु मर्जं
 चल धर्मिद्विस्तु यान्त्रं सर्वकर्मस्वहा वहु नान्यथापि कदाचन सिद्धिस्तु पूर्वककाम
 श्रुत्वा विना किमप्यथैः कृद्वा वा हिंसां स्यास्तु मगतिना श्रुत्वा कथा पतनवसंप्रप्याश्च
 वक्रं श्रुत्वा मघाचापवराः पूर्वहा लुनी उरुगवहस्तचिह्नस्वस्तिका विभाषा श्रुत्वा वाः

चक्षुःश्रवणस्पर्शरसगन्धका उद्भवाद्याद्यन्तरिक्षादुद्भवस्तन्मध्यनिष्कृत्या शक्तित्वत्वात्पूर्व
 दुर्बलं उद्भूतमहर्दं च भवती अन्वितीत्युक्तं ह्यवधीचक्षुःसूर्यादुद्भवाद्या वृद्धाहहस्यमिहोमाह
 गुणैर्वर्णानिश्चयं स्वस्वकाले च ह्युक्त्या गृह्यादविशक्तिगः सर्वोद्भवश्चक्षुःसूर्यादुद्भवश्च
 धनं ह्यसमा चक्षुःश्रवणस्पर्शरसगन्धका उद्भवाद्याद्यन्तरिक्षादुद्भवस्तन्मध्यनिष्कृत्या शक्तित्वत्वात्पूर्व
 द्विर्न आदिकामिकमन्त्राणां प्रतिविन्त्यादिकामय सिद्धिमापूर्यते कथं मृदां विस्तार्ये साधय
 क ॥६॥ तन्मिथीवज्रवामादिकालं महातन्त्राणां प्रतिविन्त्यमृदाश्च मन्त्रावपि वि
 स्तारणं नाम प्रतिगतिरुमहयत्नः ॥७॥ अथ ह्यवात्स्वामीवज्रजाकीमहपरा ॥

दशयष्टयथा न्यायं प्राणिनीनां लक्षं गुरुं च प्राणिनिषया शतं नवनवे के कस्य रु कस्मिन्
मे सुमय सुमहा मजा चरुथेकां सुभा लो गो वधाना नीपमगन्ध सुसूचति पद्मापवगन्ध
लुवर्धनम्यकयस्य रु दकिनी पमिनी चैव लामा रुवर्धति रुहिनी संखिनी खसु लाहा
चचिहिभी रुवर्धति चरुर्जातिस्व नृपाश्च लज्जयन्त सुविचयज्जगत् पद्मी नीलज्जगत्
कुसुमं च मधुला कानि नथमि लपूष्पा कानि नासिकोक्तानि सुखा कर्मपदराच जाती चं
पकगन्ध रुचि न च नृपधमशी वापै लचन्दनं गन्धपूगुली कदल रुवि मृग नाहि सुमा
धनी लाह्य सुवर्धितं रुद्धी वदलस्य मंगन्धं रुच्यैव लज्जयन्त नस्त्रिका लय नगन्धं च

राजावलिमुक्तसन्निहं कंठकीगन्धकं रूपं वक्रवधूयसन्निहं प्राकलीमन्त्रिकागन्धंगग
 हां वरुणपुत्रः पादोर्ममस्तिहोस्तुनीमालह्लाकोनो वाभावलीसुधाशिवलीरुगह
 तायां उवाकस्यसूक्ष्मरुतिमाकसाकसगामिनी यमगन्धदंससुत्रीपमवन्धनकास्थ
 न यमस्यरुमकंठोहस्तनसंगकडाष्टदन्तपीठयत रुगश्रीगुलिप्रकिपकासयत्यमि
 नीरुथा म्रथानकववधहस्तिनीलधंतथा मदगन्धास्तूलजघाचकुतासिका वाता
 वलीमदनालकास्तूलकायाचपलाचपीजकस्यकावयत उवस्तुष्टवन्धनागुकाका
 स्थगहस्तिनी विवाहपूलकंदवागमालिंगवास्तुन मदनास्तुष्टवस्त्रांतखदकदा

पथक नखनाकार्ययद्यदसाधनमसुग्राहस्मिनी गीतवावादिहिनगाह जुगाल
कृष्णसंपन्नाहस्मिनीचविधायक गतिहीनलक्ष्मणवत् दीर्घकक्षदीर्घनामिका ना
हिरुपा नाहिरुला सुना वाचा सुहृत्ता हानिरे दधिश्चराजतपियवतिकक्षवासह
सुनगच्छता हृदयनपीडयत गृहिगतासुवगतचंचयित्वा हृदयनखपुहर्नदापथक
भमिगन्धनसाजिद्वकावाकोकसेवागंस्तिनी जुगल्लक्ष्मणसंपूर्णगंस्तिनीकोप्यकस
दा चिह्निहीचरथयनखलाकंयाउनरस्यारुणाहर्नोद्वलावाभसुनी सुश्रुतज्ञाः
मूर्च्छिताधनिषु कलहपिपा कावजंघाउज्ञानगयनीलेपोषीपानावस्वना श्रीमि

षगन्धावाकचिस्त्रीर्षु विमिडीयति कीचवश्चक प्रथमं गहस्कृतपीठ्यचंचनं कृतं मर्दनं
निगसिपूलकंदत्तं मज्जनं न किमाह मालिङ्गं अष्टादशं गन्धकाव्यसूचौ वतालज
शसंपन्नं चिञ्चिबीवपिडीरुचं अथान्येन मसं वश्च संकाति हृदलज्जं वाक् संकाति हृ
ल्लस्यं गृह्णन् अथ आत्मकास्मत्ताः निवेति महासूत्रं चकचुदं लपयं गृह्णन् च मदस्मत्तं २०३
वैष्णवाधननूपत्वात् वाधिमनुस्वराचवीजरुतं यवाक् दण्डिं गृह्णन् लपयन् गृह्णन् इकावा
रधामेखेयवति वाधिविष्णुत्वेकाचदं कालाय च दधामि कां महासूत्रं बहूनि संयागि
नीषाडभीकलाः ललनावसनादयाः पार्श्वे वा श्रुति कालिस्त्रयपिनी कर्मजानधनं यः

हा च त्वा नानन्द मूषिणी सहजानन्द स्वराव अक्षयपनमभनी संवत्कन्दसंकाशं वृत्तिं सु
खमूषिणी वृत्तानां वाधिसत्त्वानां माध्यावयजधानिहं काष्ठसंशोच वाधादणदलनकं
सम्भ्रं उां जानं स्याद्वं मणि कावर्तु मार्गो धाम्मं धवति नितिनं नं रुदयधर्मचक्रमष्टदलं
विश्वदलपमे मरुध्मं उां माध्यामस्वास्तिरु कस्य इदं धमपधमपूवकाशु सदण जान
कस्य मध्मविहसनति एादिनं व्यापकं तथा स्वयं रुह्यनमाधानं विहसनं पनमभनी नाली
चरुषास्तिदलपमे नीलवर्णं कस्य मध्मं जानंदीयं च मे नितियथा तस्याधमपधमपूवकाद
स्वानपूवपयं हासफासिहसुषुकादध्माधनमच्यं ललनापहस्यनपधनसतोपाय

नमस्तुताः कथासंख्यागकदवींश्रुजानविश्वनृपिणी चतुष्पायात्मकादेवीचतुस्रज्ञाप्र
दायनी महासुरवपुदासिद्धिसदासंस्मृदायनी यनयनहितावनमनसंपूष्करनल्लो
कनकमयतादेवीविश्वनृपामक्षिर्यथा हावशमविचानभाबहलिकपुस्तनमपेनभाच
गुलीकलिकापुकाविलेसंज्ञिकमवासमा दग्धस्कन्दनिकल्पकेशवतितानालवसं
चदने आमव्यायसुमस्तुवस्तुसमगसंवादकंचासुतं एवंकर्ममज्ञाशुदव्यामज्ञाशु
कथं सौगकगमष्टिनतादुश्रुत्यजायागिनीपना ध्यानजापनतानिस्पृष्टाक्षणीदुपक
थं सूचिस्त्राननगतानिस्पृष्टेण कृतसमाख्यां निर्विकल्पात्सकानावीशूतवीनपूनरु

किं राजाकृतसुखस्य कथं सुखं न कथं पविर्कर्मपुनश्च भूदिकाकृतयोगिनी कथा
गहननागासायोगिनीवल्लभहारे विद्वांश्चक्रपातादुधर्मसुतेन कृप्येति वीरकृतस्य
समस्तस्य सामिषं कुंजरसदा नैजराशो गमं मार्गं राधिसत्त्वकाशया कोरुतेन कृप्येति
श्रीगोविन्देष्टपनापना एवं धर्मसुखादुसमयमद्वाहिधीयते वलिपूजासुखं समयीसाहि
धीयते पुनिष्ठासुखं चक्रसंतापपत्रमाधर समयीयोगिनीख्याता श्रीहिधकपूकंती
धर्मचक्रपवर्द्धनं निम्नं समयपालक एवं दयास्वरागुरुपदिदवीनपस्मका योगिनीय
धर्मध्वजकीर्तिकपनमाहुतं सान्द्रासर्वकालरूपप्रवृत्तिमानवानिना योगिनीपुत्र

हविर्गृह्यावजनायकीं सर्वकालेन तदस्यापहवसाज्जुगामिनीं गायन्तु सदा नाना-
समयसंकां न पालकीं जुवं समयमद्भुतमहादेव्यापकाय न सहजाऊं उजादवीमकुजा लोक-
नोयकीं यागजापी० जाचेवसासयादिभ्यामिनी पामिनी सर्वकालेन तदस्यापहवसाय न
जुवं मद्भुतसुखाय रूपमिदं मद्भुतसुखाय कां वायस्य कर्तुं गन्धं च साकस्याहि नयं स्मृतं वागाही च ऊ-
पधारगवकां नमोऽपि पृथुयि साधयदि मां मद्भुतसुखं सर्वसुखापकाय न उजावसु न गायनां
प्रविष्टं च तदमकुलं वागमननसुखाय सायागिनी च कश्चिद्भुतं कर्तुं शुक्लं मातावी अच्युतं
सर्वधामकीं श्रीमानागतवद्वानां साकला मत्सुखायिकां उजावसु रुचिर्भुस्येष्टिं गच्छतुका

लुकां कायिकं नृपकनेव ऊरुकादि उरूपकं महासक्तं नपात्मैषकी उरुवि सांप्रमं नृपानृप
 विरूपा कूलं सर्वेश्वरं वृद्धं पननृपकृदादवी रूपकार वृद्धमार्गकं ॐ त्रिय सर्वसंबद्धं प्रसूपा
 वमिकायच एवं सत्ता उवेकत्वं योगिकत्वं सतिहा ह्यनेचकं वृद्धवीना अधिपति सर्वकामदं
 पागिनी चक्रमध्यमं सक्तकाम उरूपका ॐ जमटा हाक कालोत्पयाने सक्तकृम सगतिप
 रुद्रं जाह्नव दृष्टं स्वाहं हाट्ट दृष्टं स्वाहा ॐ जवावती यं दृष्टं दृष्टं स्वाहा ॐ तिस्रं लोकां रुद्रा
 वीजां संस्तुति वनेपदां वर्धुं संस्तुतेकं परं यथा सर्वदया गिकां अथाननेन संवत्सं संकमं वि
 नृपिणीं शुक्रपतिपदां नष्टपूरु मास्यानियोचकं शुक्रपतिपदां शुद्ध अकाननं जंघायां

द्वितीयाकारः दुर्लभोदनीयश्चकारणानोचदुर्ध्वान्नीकानरः नाहोपंचम्यांउक्तानरदयः षडंड
 कानरःकृतसफस्यांमकानरः गत्रश्रुस्यांमकानरः कनकलनवस्यांशुकानरः गारुदशस्यांशु
 कानरः चक्रवीजकादस्यांजगानरः कर्णमूलकादस्यांजेकानरः दशार्दश्यांललाठ्याकानरः म
 द्विचक्रुदस्यांओकानरः मदस्ययामदक्षिणपूर्वमास्यांश्रुश्रुकानरःस्वरावा गयेवकादूपदालस
 यावदमावासिकावत्संक्रमनंरुचक वामचक्रश्रुतिजिह्वस्वरावरः दक्षिणसूर्यकालिस्त्र
 लस्वरावरः वाधिसत्वात्मस्वरावनसंक्रमणंषडङ्गंरुचक यामाद्वसंचावरुदनसंक्रान्तिषाडङ्ग
 मर्तं चद्रुमसूर्यगमसंविन्दुनिवायश्रुकाशनिवाधः एतास्मचित्तासंक्रान्तिषाडङ्गविधी

२९३

यत् निर्विकल्पमहासौख्यं आकांक्षास्पृशन्नपवात् आनन्दसौख्यमनन्तदेहल्लिङ्गा
पमं ॥ १५ ॥ आह हगवान्जीवज्जाकिनीस्तथामगरे सर्ववीनसुमाधामवजसत्परिपन्नसूखं
॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ किञ्चिद्वज्रानाहिकल्पमहाकलुषार्जयागिनीदधमदाल्लज्जशयूकिविधि
जुक्तविंशतिपटल ॥ १८ ॥ अथ वल्लिरुत्तं चक्रयथावदन्पूर्वसु ॥ धर्मादयान्कर्मकंच
यल्लिंदया यथाविधि ॥ जाकीमूर्तिरुपागच्छेत्कवचादिनजोपन ॥ समाधिसालास्यथ
रुच्यपमहासुखस्वापथ ॥ वाक्चो ध्यात्सिक्तं कुर्यादवधूतीयानिमालिखत् नाहिमध्वर्य
नन्धंचपमहासुखविकल्पथ ॥ पंचावाप्तिकामकंच समनसं सर्वकामयत् क्लेशरागद्वेषा

दिस्वर्गमाप्तासायकतातिच दालनं सूर्यचिह्ननलापनं वागवंद्रिनां साधनं यममात्मानं ममभीक
 नृक्षंपनर ध्याते मद्रसदागप्रश्रुतिष्ठानं च कोनयन आसक्त्यमृताकिन्याचलिमद्रायागिक
 कलागमरुलिगन्दीखलमध्वसूच्यांगुलवजं दृष्टसंप्रपीठसंस्थाप्यतांचललोददेश आ
 वस्त्रं वस्त्रं मेयमि आकाशपोदाद्वेष्टिमक्षिभं कनकतनूं मूर्ध्नाडुकूप्यो नृकावशादगते दश
 दिग्गोकुलविनयागिन्याकर्षितद्वय मद्राचलिंदारुग्यावामदक्षितयोगगते वामदक्षितपा
 क्षिर्गाममनदाकिभीसूर्यं बलिकर्मपवद्गामिवलिकृत्ययथाविधिं मनुजं हामजापंचपति
 ह्यसाक्षिपक्षिकं वरुणाचादनमावर्धंचरुतयजिनि साधयेत् पीठसाधनत्वात्तु सर्वकर्मेषु वा

२०१

इमं अलिखितविनाकर्मभाष्यसिद्धिनाशायकं बलिन्कननजायन्तपूर्ववृद्धं नरुषिर्गं प्रथमंद
वृत्ताकारं द्विषुः अस्त्वय्यागवान् वक्रादयनसंनरु इकावनादनादिनं चतुर्विंशतिरुत्तमनगवीव
हमरुहृषणं मटिकाकालयागनमटिकाकावमद्वयक मटिकाकालसर्वेभामटिकामरुचनरु
प्रथमंतावहृषणकारिकपूनार संसृप्यविशमधयक मरुपूवतरयंकावचायूमरुलंतइप
विबंकावभामिनिमरुलं मरुगुंक्रआकावजंमरुगुंक्रयककचत्त्रिंनूटंयमरुंजनं मरुध्वरु
कादिकं अंआंशंरंरं लांमांषांठांवं वंकावजाकदिशिद्वयंतामरुपदीपनूप्रभानिष्याय ना
पूषवितागितापनितीतवीकवादिमहिन्नवरातवर्गवसन्नपंशरुं मरुपनिचागाद

[illegible]

हृदादिमाक्रुष्वकं कृष्यदवतापर्वं ॥ १ ॥ दिसपनिवा नाना र्थक र्षय ऊर उरु न कं वन स
पनिवा नाना क र्षय ऊर पश्चिम वन नो सपनिवा नाना क र्षय ऊर दक्षिण यम सपनिवा नाना
क र्षय ऊर ॥ २ ॥ नमहा रू सपनिवा नाना क र्षय ऊर आग्नेय सपनिवा नाना क र्षय ऊर नै
म सपनिवा नाना क र्षय ऊर वायव्य वायव्य दवता सपनिवा नाना क र्षय ऊर उर्ध्व चंद्र
सूर्ये चक्राया दवता सपनिवा नाना क र्षय ऊर हंस च सचिनी अर्धं पृथिवी दवता सपनिवा नाना
क र्षय ऊर इव होर ह्रस्वा सर्व दवता साधक स गभर्ति पृथिं क न सर्व कार्य लु सिद्धिं ह वदु यथा
सूखं आ गति हा ऊर इव होर ऊर जाकि न्या समय ह्मं द र्थ हा वरु जाकि न समय ह्मं द र्थ

२०५

कुलुपात्रममलि तलं विगं वानरः शशिनीपादकं रूपां कूमानि कायधमिवा शशिनीचकं
रुचीनां पादं कूमानं कंजुवि पद्ममालामकटं चराधनो माहिधं रुपां गायनं नृस्यनं वा
यं पाठवादि सुवाकिला वलिहाभुनिमोवाशि मलिहापूर्वकोदिगः स्थापयच्चसूनां
सर्वान्पूजां ताभुनिरुद्रु पृथ्वापूजनपूजाचपूजाकांरुपत्रं प्रनाः स्वनिष्पंकागयन्नको
अथ वासमाहितान्यका वज्रं धं रुद्रनसर्वेभीर्थिकादिममलि रूपां प्रवमादिजगुमहास
रुहां विह न रुद्रं निचक्रमहां अलिनिनिमाहपुला अनजां सहजसूद
विलं मरुसहभं तिरुवेगसयलरुजनवृषसहानं वानरी रुचं वमरुसहानं

अमृतसिपवमाथनरावइरुमिषिमहिवृद्धुनपावइ अविश्रुतकवयइजिअहिन्नइ
 जानइलाअइसर्वइउरुानमुपूनइ अवि अवसादिहसर्वेअगाहिर्नपुण्यकृतइ मयात
 लुपकल्पेपदागव्यंमक्तिमरुया चन्दनंकुबककस्यनयगमिंचकावयक पाकुंपमहइ
 हुहोकेनीमास्त्रेयवती पमहइषण्डायादापयइभेवइ योगिनीतांमणपिभुंमिपादनं
 कावयक हुकावसवादिहदापयसर्वहककां दक्षिणपययइषयथासंरुवविहवां
 पुनदिनदिनकृप्यात्मासिमान्निग्रथाविना सन्धस्ववअदिनकृप्यान्तमयस्समयवज
 शं दानगमथापयइअणीवांदंकावयक पाकिन्त्यातीतनपूत्योनात्मायानव्य

२१०

[illegible]

[illegible]

ॐ श्यागशुद्धा सर्वधर्मो श्यागशुद्धा ॥ इति पथ कमलाचरं
नमो यो संजातं वलविन्द सक्तप्यामदापसंहमक्षचालिगंगा हिनय पूर्वजामानां सुदोकि
कंदशात ॐ श्यागशुद्धा सर्वसत्त्वार्थसिद्धिदत्ता यथा नगरादुद्धं वृद्धविषयपूतमायगम
नामचवित्रहृद्यथा सूर्य ॐ वज्रमूर्तिपथविषयगच्छकदेवतानात्मनि सर्वोपदेश
तु नमो यो श्यागशुद्धा वलिं संहारं करेण ॥ समग्रसिद्धयामावतनमशपूषकां
मद्रां विहावयतु धालिं श्यागशुद्धा नदनदद्यादुद्धाशुकी पृष्यधपादिकंदत्ता र्थतापम
कुमचयतु ॐ सर्वरुद्रावतवाहि ॥ उद्धिष्टवलिमद्विष्टवलिं रुद्रयस्य स्वाहा कम

आदिवसंपत्तमभुलंगमथयदुक्त सर्वकालार्थसंशुद्धनिर्दिष्टकमससूत्रं यक्षपायात्मकाया
 गी सर्वकर्माभि सिद्धिनि संवाधिदुष्टपङ्कथगापनिगमयन् दिवसदिवससुसंवापंमानिर्क
 वत्सकंमथ ॥ २५ ॥ हस्तारुहगवान्त्वामीवज्जअजीकथमगकः सर्ववीनभ्ययीथागाः वजसत्तस
 खाकं ॥ २६ ॥ ॥ निशीचकवानाहिकल्पं महाकुरुवाजं वल्यपहानचक्रपूजनि
 धितिर्दशरुमः पदलः ॥ २७ ॥ मथनननं वसामिवजवावाहिसाधनं पूजासा
 त्वा महादेवी ॥ २८ ॥ यजुर्गुक्का प्रानूलायशागीमस्यसोचादिकं कृत्वा समयगुति
 कं मस्यप्रद्विपतिविगद्वरादिमनानमस्तु नविश्ववजासनासीनः ॥ २९ ॥ अल्लिकालिंवा

[illegible]

प्रविधानवसात्समाधाय आकाशयं वं वं लं पविशतानि धनमि कारवर्द्धन
 बहुमन्त्राणि हवि रंती लन न र एव ताति चरु म हा रु रं म वु ला ति उ प र्य प र्णि प ए प्र क त
 ए प रि स् क र्ण म रं वं स म न रं च र न्द्र च र व त्त्र म यं मू र्ध नं र म प र्ण म हि रं वि चि त् र र प
 वि ओं म दि ती व ज र व रं ज व न्ध रं ओं व ज पा का न रू रं ओं व ज यं ज ल रू रं
 पां व ज वि मा न रू रं ओं व ज गं व ज म न रं ओं ओं ओं व ज द्वा ला त ला का रू रं
 क म लु च ज रू म्पा दि म कं वि धा य त द स क न च र न्द्रा दि स र्व ल ज ग रं कं क र ग म न
 वि चि त् र क र्ण म र्ण म क पं वा न ज म र्द द ल प म न र व न रं म्पा ति का ति प वि श न च र

सूर्यसंपदमार्गवज्जगत्तं न कूर्वं कानं पक्षिपहास्त्रवंप्रत्यक्षं न तत्सर्वं
विष्मत्सो न ह गवति च जवावाही जठिमी कसमप्रख्यातं दिङ्मांदकि (न न वं जं
हूँ ती का क नो वा म भ क वा ट क ख द्वां ग ध रं न कानतां चित्तं मां म क क मां प म्भूदां दि
गं व मां पंच सना सी कां सह जान द स्य हा वा पु न्या ली भू प दा का न ह न व का ल ना डि
कां सा द म सु मा ला लं क न गे जां सु व नू धि नं पि व नो हा व य न म थ म पूर्वो दि च रु द ल
षू य थ। क म वा मा व र्द न जा कि ती वा मा ख नु ना हा नू पि षी ४ हा हा स्या म न क र मा वा
४ न कान ज क व द्वा ४ च कु र्ज जा ४ वा म ख द्वां ग क पा ले ह स्मा ४ द कि (न) उ म व का दि का

४ छिन्नजामर्ककेश ४ नगना ४ आलिंहा सनसंखि ता ४ पंचमूलाचिरुत हावयत विदिद
 लषचत्ताविवाधित्ति आदिपूरुधुनि कपावाधित्ति कथत नदत्त रुगावती हृदी जेविनिगोः
 नमेनिमिहिरजरजामना सनचक्रे मानीय ओं कानमहा स्वसमयचक्रे जलजलमिषयव एष
 चकासु नवंधनं हा ४ जामना गावनांकुप्योत नत ४ हं हं सर्व आ ४ हां हं को ले वाय ननानि
 रमधयेत पदवनेषु धर्मलपदे हावती कवेचयत ओं वना हो ४ हो यो हं दि ओं मां वं
 हं ओं मोर्दि हं हं मिखायां कूरु सर्वा ४ जषष्टं नत ४ हावती कायवाधिरुप एष
 ओं आ ४ हं हं सपर्योत ध्यानात् सिन्नामर्कजपत नमस्तु ४ ओं वज्रवेवाचनीय

२१४

[illegible]

ऊरुदीजतिर्गणपचक्षुचक्षुःकीपुहावमिमहातासावीनमतीखर्वनीलंकश्वनीद्रुमसुखा
 चिरुचक्राष्टाहिः उवाचनीमहाहैननावायवगासूत्राहकीश्वमादवीसूत्राहयकर्म
 खगमेतनावाचक्राष्टाहिः चक्रवर्गाष्टाहनीनीचक्रवर्माभी मवीनामहाव
 लाचक्रवर्दिनीमहावीमोवायचक्राष्टाहिः नीलेनकविश्ववर्माहिः अक्राष्टामिता
 हिः चक्रवर्तनीनाधवाहिः चक्राष्टनमित्तपंचमद्राधवाहिः वज्रपमचक्राष्टाष्ट
 वर्जकिरीत्यालंकागनीनाहिः काहिकपानखदांगान्चिह्नं पूजाव्ययकपल्लवाहिः
 १ अर्घ्यादिपूजः सर्वपूजयित्वाचन्दनायापदशान्ता अर्घ्यनशसंवनपूजान्तादना

दिनरागसमवाधिचिह्नत्वादमागेभ्यः यथा आत्मरावतिर्योक्तता अर्थवशात् पाचन
 विधिवद्विधाय पृथग्विनिर्गम्य गन्तव्यमपि पुरुषा नसि संपदां कलिं कल्याणम्
 पाठपूर्वकं गन्तव्यमर्थवशं कर्तव्यम् ॐ सर्वसत्त्वानां सर्वसिद्धयश्च संपद्यन्तां
 सर्वकथे गन्तव्यमधिहितम् ॐ स्वरावशुद्धाश्च सर्वधर्माश्च स्वरावशुद्धा इति नन्दन
 पृथक्पृथक्पृथक् सर्वधर्माश्च न्यानि सिद्धाणि हिताः कामाश्च पृथक्पृथक्पृथक् सर्व
 धर्माधिर्मन्त्रे हस्तकृतिनराजालेन गन्तव्यम् ॐ न्यमन्त्रेन वज्रस्वरावात्मना
 ह मित्स्वहंकायां कर्मात् नन्दन स्वचिह्नं नन्दनं नन्दनं नन्दनं नन्दनं नन्दनं

मय रूपप्रापविभ्रंजानजगनजगनमहिमभुलसि तदं काभश सूर्यो सूर्ये लुसि कर्मां का बां
 धिदितागुहापंचभूचिकवर्जध्यात्वा स्मृ नभमं ह नभ प्रवर्ध के नय नीश ताधोउभवर्धोकाभां
 शमदिन्दधवेलां नक वरु नहि तजं लुधेद द्वा कला लवदना ताताकसूमविनाजिकमक
 काभम चंचलुविनाजिता शरु वजा बलिदय मध्या कनकपालमाता वेधदिशिखा च
 श्रीकृष्णलकणी वचक मयला लं कना विलसत छिप ताका कल स्रवा कन पल्लु यस्मि
 ताहपूर्योवर्ज धा हतपूर्वषय रूपास्विधायिनी श्रव सयनाध जगत्का धिधव
 गूफभीतदधु नूगत शुक्ल सोलुगिना विश्ववज कानक कलश मूल चित्तिगोक नभ शश

२१३

घटिकाचिह्नविशेषताकाविवाजितवाइदृशससकृत्खदांगचक्रमालाशितपूर्वपत्र
हाजतंधवयन्ती ऊनद्रुधिनसाजोक्तगुह्यतपंचांगसिगामाला पुलविनी नरूपभा
पवि सूर्यस्य हस्तपत्रमालातिष्ठपदसुविवक्षापचक्रसूर्यपरास्त्रनक्षत्रमालातिनी
प्रतिविम्बसमाभंगालोदिनस्यधना नानानिर्गोहोदशादिज्ञजगदर्थपेनां सूर्यसुदी
कानाभिहितसूर्यसु वज्रद्वयावजवावाहीमात्मानंध्यायात् तत्तद्द्विजवर्णिमा
लक्षसर्वसत्यान्तद्रुपापला निष्पाद्य आत्मनिष्ठवर्णमभिरुगावतीवजवावाहीसुहंकाव
सूर्यात् नदत्तसुताहोविशेषमानवशुभसूर्यमशुलभितर्कांकावन्तद्वा तत्सकृमा

लामजसूजाकावाहितांचक्रभक्षयाएतत्तदनविचरवशानिश्चयो वृद्धगशगुरामभिम
 आषधिचरुतागालिपिभमुकलादिप्रहाविमंदापवाहिविचरवप्रविसेन्नि स्वभषासर्वा
 सूनदरुनास्मिकाध्यायक कतउद्दीअवन्मिसंचादिकगगनसुं ह्यनदवीपूनतादृष्ट
 पूर्वाकदेवीगारोवर्षादिपूनरसमपूजयित्वा हंकारममक्रपाथपर्वकंक्षातामद्रास्व
 द्या ललाटवासावाचरुनेशामयत्त मय्यकलांती एवाक सत्राहंकारं कयोक्त
 रुजायमक्र उंथागशुद्धासर्वधुर्मरयागशुद्धा कतद्वद्दीअसंचादितांगरा
 शसुं अक्राद्यादिगथागतानां नीयति पंचामरुहकयचकथभरातात्मकलरुो १ क

२१०

निर्मितनातारूपं सखसदंगपतववीक्ष्यवर्गीकधुनिहिः दवास्नेथजाजात्का
वपगायहोः कौकमकपर्वकसुवीसृगन्धिकसमपवर्धिरिः पथहिजातसाकुहोः
स्वापिताहसर्वकथोगतार तथाहस्त्रापेयिष्यामिशुद्धंदिभ्यतिवाविष्ठा गमथपपन्ति
हिनात्मानहिपिंच्य ओंसर्वकथोगतोअहिषकसमधिपद् ॥ ५ ॥ यतताधिष्ठायतांवि
श्वपन्नसूर्यस्तुकात्पाधिष्ठितशिलसंविनयत् ककस्तुनिर्मितपचरुहिदवीहिः कं
निर्मित नाताहिधपूजाहिः आत्मानमहिबुक्कवेकुमाहाकमधामृतास्त्रादहात्वायाव
दिकुंआत्मास्त्रनगंमंहनगंपूर्वकं इतादिदोषवहिकंसलुंजपत् कजायमस्तुह की

[illegible]

सर्वकर्मोक्तं सर्वनामसंख्यायाः पूर्ववत्सर्वं कलाशयनकालनिर्वाहानुगुणवृत्तव्य
धिसत्त्वान्द्वयोसंप्रेक्ष्य अस्माकं पातपुत्रासामस्य नसिंहस्य यो सप्यात् नतः पुरात
संख्यायां विविधाधितः सने पूर्ववत्सर्वं कर्मोदिति यद्वा अनेन कर्मसंवाचित्युदलाशयव
पर्येकनसूत्रासनापविष्टः कपयो वलं यः सर्वसत्त्वान्यापदभानो मानस्य यावदाधिति
इत्यादपूर्वकं आकाशपविशानायां स्वजिह्वायां पद्मदला कलायां श्रीरकोनं कलासूत्रं
यावदिह विहाय विनीतः सत्त्वानां द्विजिह्वायां मालाकसूत्रं त्रिजिह्वायां चक्रसंध्यं जपया
गीसूत्रं पूर्वविधिना स्वपेत् एवं जपरावनात्स काविधिपन्नज्ञानं अस्मत्कर्म

निमक्काशार्धसंगवसंनभासु २ कपावाकल्याणमिष्टावाधनकल्याणायगी हफस्तु
 जायवासुवभासु कल्याणमिष्टावाधनकल्याणायगी हफस्तु
 नीयवादिनरुवादि कवविष्टगवगोकिन्यादिशिवनयदुताहवमि यरुजयतिरुदम
 नरुवादि सिद्धमिष्टमकुजाप्रसिन्नचक्रमज्जरुमिष्टिनाकधिनीयस्येवरुहदीपनसम
 स्वापिकरुवादि कस्यगन्धमाकुशापेन्यगमदयसंनिदितातहवमि ग्रहिनूपद्वेवपदवा
 नांश्रन्यपामपिस्त्रीपकनवासमर्थरुवादि किंवदन्तीकृतमयापिगुठधियागामिष्टम
 कनकुशानविदिफनतसा मस्यमकुसुमस्तुदयजापनन्दपद्वस्तुलाकसाधनंकारं

यपुनरस्मिन्नकलाअनकलाकगुहोर्यकारवक्तिगषांरुत्वांसिधिःस्यादिति ॥ ५॥
वासाशिवजवावाहिनायकी प्रहसाधनलोकातांवरुसुतःसुत्वाचिरं ॥ ६॥
॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥
॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥
॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥
॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥
॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥
॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥
॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥
॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥
॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥
॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥

उषा पवित्रक नारा का नग पप्रहा ॥ दश समया न वा ॥ स्व न क का नादि चहुं सिं
न व्यंजने व धिष्टि ना दहा ॥ ध्यायेवं पत्रिहा न वा या रति म सु लोपां छा ले न ता व नं क
हा समय न्य सु वी न विमि वा दि न स म हा ना नी ध न श न ह्ये न्य ग्रा य स्व न जा न च द्रु म
शु लो पा नि इं को व च उ ह न द धिष्टि ना सि न पंच ह चि न व ज हू वि न ल मि जा ले ४ व
ऊ ध न म पि च उ व ज हू च पु व न म ह उ त्या न ना वि दि वि सि दि दा धा य ग र्त्त ह इ य मि आं
का नं ध्या त्वा न कि न री सु धा ना न स न र पा प न्ना ना ना लो क अ नु हू म न म पि न
पु व न म पु न व न च पु व न म ह य धा व चि ष्य न म न गं द ह्वा वा न रु यं पि न ह्ये न धि

२२०

स्वायविधिवदम्तासादं कालायावदिदं विहाय स्वनामाङ्गनपनिशतस्यसाध्यं पद्मा
वर्द्धिनं दृष्ट्वा कल्मसु माला निर्गमनं विहिं १ तमानीय कल्मसु काला न स्य चिदु मकारं
पविशतमीन कल्मसु माला कानं ध्यात्वा कल्मसु माला निर्गमो दवीन कल्मसु माला
नशो १४ कानपाशधरां दक्षिण कानशेन काला त्यक्त नलिकातिरु यजा कृशधनासाध्य
पद्मा वर्द्धिनी दृष्ट्वा ओं श्री १४ श्री मन्त्रस्य चिदु माला कल्मसु यद् १४ ॥ १४ ॥ काला ह्यपयति
पद्मा तमोसा दवी विधिवत्यु विष्णु पाशात स व्यक्त काला कालि न चादयति यथा वदति
यत्त्वचिदु प्रवशयन् दवी कल्मसु माला काला काला दृष्ट्वा कल्मसु माला निर्गमो दवीन कल्मसु माला

गलं नकुल कामदुपाय कार्कषयवयम्भूतं कमपूजं कलिर्कसाधकानि मूलकिं क
 शामिनि श्रुतिदिगं यममककभीवज्जवागहीना देवा कार्कषयवयम्भूतं कलिर्कसाधकानि मूलकिं क
 चिन्मावभं हेवति निचजवागहीना कार्कषयवयम्भूतं कलिर्कसाधकानि मूलकिं क
 देवतीनां महाधि यानां महानं महागुक्तं महासाया महेश्वरी उल्लासं हनस्य सांख्य
 लायं मज्जपत्तं गुक्तं वानामि यं माना महासाधन विष्णुना उल्लासं हनस्य सांख्य
 पुपययं महेश्वरी जयाविशानमायया विद्यया साधकं नवम्भूतं सदेवगन्धर्वगन्धर्व
 यकाश्चरमान्पान् विद्याधनपिण्डाश्च नानाकरीनां किन्नात् वसमानयानि

रुतानिजलजलजलजलनिच महाभ्यर्ष्यो कवीविद्या नृत्तज्ञान कवीरुथ माहनंरुम्
नचैरविद्वान्नाटनादिकं वरुधकार्यमजंरुनं चानेकविधकुरुनं पठिकाकुरुनं
विद्यावाचासिद्धिचसाधकं नजपंनचनंरुस्यानापवासाविधीयेन मन्त्रमकारुवेत्ति
द्विद्वीसमंवराम्पहं मलुंरुचमहामाय सर्वेश्वलाकसाधकं पुनश्चाभिमतयोगी
दिव्यंरुपैकिरि उंनमा रुवाति वज्रवावाही आर्योपनाजिनंरुलाकसाधकं महा
विद्य सर्वरुपैरुयावहं महावज्र वजासने अजिनं अपनाजिनं वरुधं कविनेरुपुयासशि
विषयमपानि नापानि कुाधनि कलालिनि संज्ञानि मानि सपुहदधिपनाजय

[illegible]

[illegible]

पत् दाहं दर्शयति मयूषपिदुर्गं मरुत्कं श्रुजाक्षामयत् पूननूत्समयति सर्कवास्तृक्कृपाचडुदि
गं छिप्यच्छुनंगालंदर्शयति मयूषपिदुर्गं विपनिर्गं कामयत् पूनर्पुत्यानकं रं वमीति म्रधूना
महासाया ४४ मभनायच्यत् पूर्वदिग्गममशुलस्य साधकानेयहंतामभभानं उरुनम्रध्वक
वं पश्चिमकाधननं दक्षिणाधानाधकानं म्रग्नेयामहापुल्यं नैमश्चमहाभलायकयागवद्
लं वायव्यसिंहनादं महारुद्रकानं जेभनं सनजिनीनं नामभभभनं प्रयथायागंदग्धं दग्धं गं
खनिताङ्गविहीमभकानरुपंकन भूतहिन्नाईद्यवा ४ पटलाकं कलिचूतशिनीष्या इवलव
यायव्यनागकभनयादया ४ यथाक्रममभमहिममार्जानरुद्रक व्याघ्राश्च गधुगकनपिभच

मूल्यामहद्विकापकाहसमस्तधम्ममनासकभगवत्तुल्यकवायसुश्रवताउरुतादयव्वति
ॐ महामायादव्याधमभान ॥ ॐ ॥ ॐ नमावजवागही ॐ श्रीघाट्यसर्वेइत्युतइह
स्याहा बलिंदेयाध्मनंकुर्यात् नाहिमरध्ववंशवद्विकाहासग्निमहुलंतत्तमध्वचदुदलंपम
नकवर्धुंरुइपविहीशकानंकल्याग्निचदोप्यमानं नत्यविहातमात्मानंवजवागहीनकवर्धु
चदुदलंपमपंचासुगुरुपदाहंजनंध्वाचाधकासनसुंआलीहापदांतगतंउर्ध्वकीर्णं क
पालमकूर्गं पंचमूपापतंचदुर्हजादकिरुवजांकुषधवां वाभखवाजकपानमर्जनीपा
अधनां एकमुखंतिनशांरुक्मीकलालवदतां वजघातांसूरीषधं वृहद्दवांललजिः

228

मकुलं श्वरवर्णं वकुलं दधकं ॥ लं जावजं पथि वीमकुलं चडवसुं हवितं ॥ सुंका वसं रु
वंसुमनं चडवसुं चडवसुं अष्टमं ॥ गपका हितं ॥ तस्य पंका वपनिशं पंसेकस्या पनि
इंसेकं वं विं वजं क वनरं ॥ आलिकालि शो गं तस्य धर्कं वंका वपनिशं वजं ॥ नरस्य
विशं वजवा नाही नकां विं नकां मं कं कां न गतां खकु मणि कस खलां का नई साड न न
कि नमाला पलचितां ॥ वामकुज कपालं इह माला अ सुग्ध रां ॥ दक्षिण कर्जं वति
कां कल्प वंदि सहस्रं जां थ वनि नूक्षि नपियां उर्ध्व पाद स्थितां हावय क ॥ पद्मस्य पूर्वोदि प
डज किनी कु रथे नामा खकु नाहं कु नू पिधा ॥ विदिगपं कथा खया क नी ग थ ला

[illegible]

२२५

उदयान्तर्गतपमवमकचक्षुदविः सामं सूर्यं संपट्टं वंकावं वज्रकत्समः ॥ वीजं कस
मद्रुवान्दवीरुगवसावजवावाहीपल्लयानलसंनिहं एकवक्रादिज्जांदकिह रुद्रयन्त्री
दिभं सर्वइष्टमर्जनेवजिकां वामकपालखट्वांगधवां हेमवजालवागुकाकपशा लीय
नराशुपादिग्वासां मुकुटोभारखण्डमणिमभखलांदद्धाकलालवदतां द्विभक्तचिह्नता
नतां ॥ विभक्तजधनां मुद्रिवज्रमालाकपाल ॥ अहिका मूषुमग्दामदहाहय ॥ अहंका
नद्रुषिता सर्वोगी सर्ववृद्धाहिषकजाधेनाचनकूवां इवां सर्वसिद्धिपदार्यिकं स्रवसं हा
नविगुहां प्रजासुखमदास्वादस्तुत्यागीसमाहिनः साधनं हावयन्निश्चलघबूधस्वर

माप्यन्तु तावतां कृत्वा न्यासं कृष्यो वलिदशायागविक्रं ओं वं वज्रवावाहीनाहो हां यों यासिनी
हृदि ओं मां माहतीवक्कं इंद्रीं संचानती भिन्नसि इहं सजायती सिखायां हृदं च विष्णुका
सुवो ज स्रष्टुं नाहो हृदि नथावक्कं गिल्लं गिल्लो सुभनच कृत्वा यं न्यासं खलमभ्यस्य
मंगुलं वज्राहं संस्थाप्य मध्यं ललाटदशे आवर्त्तय वरुं न विष्णु मयं न्मृको नापादाहं
हृदि सुमूर्द्धां वं वाननादतः दशदिग्गला कथं कृत्वा वीनया गित्या कर्षयन्तु ओं यागशु
भाः सर्वधर्मो यागशुभाहं ओं मूलं लिहाः जहं वं वं वं वज्रजकिन्त्यं समयस्त्वं दग्धहाः
वज्रां जल्लाडुविकचा वलिदशान्विभक्त्या ओं खलवाहिः सर्वयजनाजसहस्रपतपिण

॥ २२३ ॥

ॐ शान्तादापस्मानजाकिन्याद्य ॐ दं वलिं गद्रु सुमयनकुरु मम सिद्धिं पयकुरु पाथेवम
एष ॐ जुं ध्रु पि वं थ मा ति क स थ म म सर्वा काम सत्सुख विभु द्य सहायका हवतु ॐ ॐ ॐ ॐ
स्वाहा वलिमकुर ॐ वज्रवेवाचनीय स्वाहा हृदयमकुं दशमकुनं ॐ सर्ववद्वदाकिनी
यवजवर्गुनीय ॐ ॐ ॐ ॐ स्वाहा उपहृदयमकविंशशकुनं ॐ सर्ववज्रकामिनी सर्व
हृकल्लभधयगुक्कवजिनि ॐ स्वाहा सर्वहृकल्लभधनमकुर मूथवाडपदगः स्वचिद्रुं स्ति
नीकर्तुं कामः स्वनाहिकमलापनिशामपूढानकसु सधपथ ॐ वं कामविनिर्गतसु लल
नं स्वा कामननिधध्यायात् शुभाकुं पहास्वेनं महासुखाकारं पथदिति ॐ ॐ

नमो वज्रयागश्चे नमो निरुंजगत्सत्तासंवाधिंच नमो मनः स्थापयामि नमो गदाधो वज्रयागश्चे
कात्मः मनो नमो कलभमना दोस्तदुदिचन्द्रांका नमो किमलोः नमो सिगुनवद्वयाधिसत्ता दृष्टा
पापदेशनादिकं कर्मात् नमो निगालस्य भक्त्या गां हावयत् ओं वजीं हां हं नमो दोभं भनात्
कमध्य धर्मधमरुमये धर्मो दया नमो र्गनपयव नटय चन्द्र सुने विनाम संपूठ सु वं का न वज्र सं
हवं र्गवती हावय वज्रयाग हा ही पल्ल्या नल संतिरुं दिउं क वक्रां दकिं हा नमो यन्ती इत्त
नमो नमो जि कां वा भक्त्या लख हा ज धनां हं न व का न नमो आकां प्रयाली इ न स ना गु वं
दिगां वन मूक कं कं वं वं मे निरुं भ सत्ता इन्द्रा कलान वदनां जित जा विश्व वज्र धनां वज्र

मात्साकपानमूर्ध्नां मृगुश्रद्धामदहःशमतां सर्वोलंकाराणि सर्ववृद्धादिषकावेना
चनकलाहवां सर्वसिद्धिपदायकांस्तु न संशयविग्रहां पञ्चासुति श्रुमेकस्वादनें क
त्यायोगीयोगपत्रायकां सादरं तावमनिर्णयलेखवृद्धस्वमाप्रपात तावतयास्त्रिनीमक
ऊधरु ओवजवेनाचनीयस्त्राहा मृगपदकां स्यनाहिकमलोपनिशामसंप्रदात्तगर्गम
शमत्यंतलाकारमभिधायारुद्रकंधकंप्रहासवतयागच्छिरुं सखिभक्तयनत्पन्नप
रुधदिति वामाक्षेरुद्रकपाददेवीचक्रस्य तावताकथिता सपिण्डसकलंतत्त्वद्वजाधा
गिनीकलात् नरसिंहद्वारकंदृष्टागुनकालिश्चनंप्रभुं पञ्चधन्ययज्ञीमान्तास्यपतिव

पकं स्वर्गीजं हृदयध्यात्वा पूजाभयप्रकल्पयन् अष्टाहिमादृतिर्नृपंचामरुथागतर
 गोभय्याद्याः पंचधागिन्यष्टपंचामरुधरागादे शवरीचमुलीशान्सुठमविलिंग
 नेर्यगाः अर्घ्यदर्शयन्निशंप्रथमं चैकनमादयन् किमन्तुगनक्षंयायाधो धोचिरुविरुहि
 च पुथमंध्याभेजीरुदनकनकां विहावयन् पूनवपिसूदितांध्यायाइपजां सर्वशेष
 तः रुदनजिनमकुं पथन् शन्यगाह्यनवजस्वेतावासकाइ स्वयनं विहावाभूत्यं प्रसिद्धा
 नमनस्सनेद्यागी अरुहोसूर्यपूजता विहावयन् सिंनवोइहवविश्ववजं ननेववजडा
 विहावयन् पावानकंपंजलं वन्धनं च धाताचिं रुथविधी मानपुष्टमानपुष्टभवा मवपि

२२८

शी नमिंविहावयत्तधीचकुनसां हवीरकीं एधीमगुलमाध्वसुं तांमगुलंविहावयत्
अप्यरुजअपनध्यायादग्नेचभनमगुलं भनमगुलमाध्वसुं तांमगुलंविहावयत्त
मिथीरुयत्तवैचक्रभनंकाभनं चोमना चकुकींविचकुहानंमगुलसुं पाकाकिं
हानार्जहानसंयत्तवजसुं वलंकात्त नमिंचक्रगतपाभनं चदविहावयत्त वागिनी
ताककुहादगभनमगुलं पंचदशमगुलं मागिनापविचक्रं चचन्द्रस्यापनिहात्तानं मृतया
मध्वगर्भवीजंमलंस्वनादिकंन्यसुत् आदर्शनसमता ह्यतोचन्द्रसूर्यप्रकीर्तिता मृकान
संख्याकदिः पश्यन्क्रमासूच्यते एषामेकमतस्तु नानिष्यदिः शुद्धधर्मता पंचहनात्

२२३

गवजानमृदुषां यागिनानां चक्रेषु धातुनां सुदुर्लभं कायवाक्पुनः कर्त्तव्यं द्रुध
ईषु समाहितं मृदुलं कुरुते किमृदुषां कुरुते रुधुषु ॥ इत्युक्तं यमयोगीनां वृद्धां वा
विशेषिणी को वनवज्जगति च मध्यवाहियागिनी जगन्पूज्यसीत्यात्मयोवके
अचनीरुध चकुलीनाकुसायां वा वायव्यां ओम्बिनीरुध पूर्वद्वारे पत्तयेगीदक्षिणा
चोत्रिकारुध बुद्धाली पश्चिमद्वारे रुध मध्यस्थगीरुध आवनहेचनीरुध तादुर्ध्वं रुध
नीलरुध मनमानन्दद्वारे सर्वाय वा वाहियागिनी स्वर्गीजद्वारे ध्वानगिभंतिरुध
वयं रुध आरुष्यते न संवृद्धो पूजयेदष्टमाहृदि पञ्चदशनाथ नास्ति स्वधीरुध

गवत्सु सदात्मसु हगवन्ता सर्वे कथागता हिथक पदमाददंरु नगर पञ्चमदमृगहृते कंरु
 वृद्धे नहि पिंचयत संचय सर्वसंयुद्धे चिरु संसृकटा हवत प्रथमं हावय कफ्रु दितियवकं
 विहावयत रुताय हावय सीतांचे दुर्थे हविर्नयथ पंचमं तीलववर्द्धे हावय छगु झदहि कां
 षडङ्ग हावय शागीपञ्चमवर्द्धे विवर्जितं नृपस्तान्धरुवद्वजा रौमवीचदतायां सुता संह
 यां वा विधागीनी संस्काभवजया गिति विरूपनस्कांधनूपहा हितानावावाहि प्रागिति मनु
 लंभासिगा ही मातृयस्यापिरयंकरी पृथीचपूरुसिख्या गोमूत्राकुरु भववी सता ४ न
 नचे सुस्तिनी रुशावायुर्जन्मिपकी हिता ४ नृप रौमवी स माख्या गोमूत्राची प्रकीर्तिता

४ वरुणीलीगन्धविषयमसंचयस्मरीरूपः सार्धंरुचनीरूपानाखचनीधर्मधरुच स
दाक्रासोविशुद्धावेसिद्धनरुचयगिनीः चक्रुषोमाहवज्रिका १०४ याद्वषवज्रिका प्राध
मानस्योकीरूपानावर्कचरागनरिकाः सार्धंरुचनीवज्रोचमनायागहिगिनी कवम
हिमहागुक्ताः रुडिपानांविशुद्धय नममान्धनंमंभुंकरिकाभानरुदनी कपालकृष्ण
मनितस्कंठिको वृचकपाणिबन्धस्यकामंडोहंजिह्वचमभलां पंचवृक्षस्यमंभुंठो
नीमंमदिनंरुधस्यापनिचासनं गुर्वोचार्येष्टद्वयस्यनमगार्थंरुचिकाधमा इहोवस्याथ
वकायगुनावज्रधनस्यच कूमुलंशवकायाचार्येमंभुंजफंचकः सदा ७ मय्यं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
माहाविष्णुर्द्विजयामि अक्रास्यश्चक्रि नृपशामि
माहकृशुलोत्तकार बह्वर्गकश्चमालायां हस्तवेवाचनस्तकार मयस्त्यापां हितामघशपंच
कृशुश्चपादिकार दासपनिहाश्चता धर्म्यपातिनि सशायता अर्ध्मात्मनृपं जययामि स्त्री नृप
शचज्जगन्नं श्रालिकास्ति समापस्या वाक्कादं दनि धवितं पूजकाहमल्लुर अकचदज २३१
पशस्वाहा सर्वहादिकवलिमल्लुर ॐ अक्रागामस्त्यसर्वधर्मो गामाद्यतस्त्यन्नलोहउं
अमर इह दस्वाहा वज्रवागादियागिन्याः संववं कथयामि महामुद्रा हितानाहो म
हासूखका निवाशुगा ती कृत्वा दग्निनृपशानृपितासाहसाहृतिर आदिस्त्रनस्त्रा

वासाधीति वृद्धे एकलियाता व्याप्यनी कुंभरुक्कमनसुतासापथगुनेः नेनात्मक
माध्वसुमनाहकमाध्वमखं अवस्यतिवर्द्धयागताधाधिचिह्नं सुहृदु नस्माका
पुण्यानायाल्लनानसनावधूतया कायवाञ्छिरुनप्रभाश्रुवतीर्णुकार्यसूयका
ल्ललतापस्यसुहायेननसनापयसंस्क्रिताः श्रवधूतीमध्वदेकाशुमहासुखधनन
पिशी श्रुतासोमहाल्लनानसनानकपुवाहिनी श्रवधूतीश्रुतिनाथस्याधनरावि
नीसदा कर्ममहासुखावस्थांशुयाश्वयः ४ ललावतः ४ सुवर्तिवायवाञ्छिरुः ४ वज्रवत्
कुजमिजं मयकावस्तुवजस्यवसक्तं नलध्वनिः ४ श्रुतिस्ववन्नप्रभाश्रुतिनाथ

सकथं सदेवात्यशकसुतमकं वा वासमपि वा सहजं पवमं सोऽयं पिशावपि सुखा
 वहं यथा निभमयां हिनकि कश्चिद्विद्वत्स्योतिरदपितदिपेयं संसापयद्वि कर्तुं कृतकम
 वत्साहाभ्यकारं मरुतं कथमस्या न स्वत्येकं हवसागमं विषजलं नागमदिनका कलंग
 ही वा न हनी वता विद्योतिरसाख्ये जीमं सहक कस्या वाधि याजना १ जना मपि स्वारथ
 कनिष्ठशयगारपानं याकि न मा हया सवसनं स्यामना स्वस्य दुः उत्पद्भिः कृतवनाप
 थ मग १ कृत्या सधी १ मस्यतां मृदा मरुविशुद्धिमा रुकवच सर्वेष्वे विस्मरु यथा
 इत्का यो न्चि नरपुकि मरु सत्ये कचे मा १ सुधी १ उत्पन्न कमन व सहिव दां ध्या यो स स्का स

रा व्याघ्रासीनश्च भयाविनिधेः हस्तिवने ह्यभिगायकमावाहयामं हागच्छद्विविधमधूप
तजं कागहाखालान्तिगरं कनकं साधनं नृपतिगुचिनागं कपस्रजं सुगलाकार्यं
ह्यभिगं यत्कनकजिनसूताहाभिरं यत्सयदं पृथमं सर्वसाखात्यं नृपानां विहाय
सुवाक्कात्यं नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां
कानं चिन्तयन् नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां
ह्रित्वा नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां
कानं पतिना नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां नृपानां

शुक्रं उगकि नमो उर्ध्वपादस्त्रिंशं गच्छावका कान्तं मूधपादन हेनव कालमाही समाजा न्नादि
 उजां ज्ञाननाम मूर्ककं भीनगतां निवाह नमो पीतान्नरुपमाध मांगक वरुल छिन्नजां नयनां स
 दुहंगरुकुटिनी दुष्टाकलानवदनां गामखदांग कनाटकधमां दक्षिणवज्रकहि जाधमां
 मूर्तिहीनवपां विहावथरु हावनास्त्रिन्वायागीजापंमलुं कजाय मज्जमाजर ओं सर्ववृद्धजाकि
 तीथ रजवेगोचनीथ इहं
 य उ मूधवलिमज्जर ओं वज्रयागिनी इहं वलिङ्ग इहं वरममसि विप्रपद इहं इहं
 मूधम्यांच नुर्दसां नियत्कामं वलिंदला हावथत्स इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं इहं

हृगवशाश्नगृहं कर्तुं किं साधकस्य च यदि शुद्धाभाय गुरुकाश्च न ह्युपतायागी नदींश्च
रूपवाहनहावयते पनभा निगुलि कां मर्दिष्य धर्मे दत्वा भूमेर्भांतां गमयति भाग
यह नर वक्ष्यापि चेत्स माजाति किं पुनरुदमान् पार नैज स्वभाव कृतं कृतं मञ्जी रुहा
ऊर्ने मोत्सस्य कृतं मान् ध्ये ४ का १ सद्य माकर्षे धधु वं स्वकाय ग्रीजी र्धु न्चा न ग ४ स
का १ ४ १ मय वध ४ ऊर्पे च हावय रुरु न विवात लिप्यो र्वरु न स्य प्रजि स न चि न सि
द्वि र्वति ना न्यथा मय हा म विधि र्वनि पि को धां कृ शुं कृ त्वा मान् स ह्वा म्ना ला य वा
मह म्भु न हा मथ न् निम्ब का ह्वा नि प्रहा ल्य सद्य विद व धा प न ४ का क प ४ ४ क १

हामरधुनवात्मसमाहिमे कयुनेलसमालायसुधाचाटनसारसं ज्ञायकसुफुल्ल
नामिहकुंजमातामैथनपिच सुदाजालंजपल्लुमावतस्यनविश्रुत महाहोमनि
वनसंम्यकजन्मकेनाङ्गमीशतं कस्यमाययाइष्टसंयनकधनकुलात् माहामास
नयसकश्चिन्तहामयेत्यस्यसंयतं कागमेशरुनयावगुह्यिध्वसाधकोरुमेः कुंजनेम
दिवश्मासुनजेगदमानयत वाञ्छंरुस्यप्रयदुतिपीजकिन्त्यानसंशयः अथपूजाच्य
न मशुल्लंरुत्वा धर्मादयासेर्षालयगन्तंलिखत मध्वप्रीःकावसहिर्न कनर
पक्षाकहावनयाहृदविनामध्वभ्रात्राप्य ओंसेर्वबुधजाकिनीयसादिसल्लंहाः

२३४

धम्मोदयामपूजयन् पञ्चदशैः ॐ सर्ववृद्धाकिंभीयइंस्वाहमि मल्लुषापञ्चदशमपांश्वे
ॐ वज्रवेनाचनीयइंस्वाहा ॐ सुभतेनपञ्चत्वनवपिअठितानपुर्वगिनिवामाऊसि
विहकॐ सुभतेनपूजयन् पूनवपिधम्मसंहागनिमोहामहासूखॐ सुभते ॐ सर्ववृ
द्धाकिंभीय ॐ वज्रवेनाचनीय ॐ वज्रवेनाचनीयइंइंइंस्वाहा ॐ निजपमल्लु विभूम
धम्मगवदवीकुंदिलचाइयागिनी कुषावकनिकासासुद्धजसमेकजसु नदवीचिरु
मालाकपहासुनसमाचिन जायकसवीकामाचिन्नामनिनिवाहनिहां अमृपिनीयथ
काश्याधिलकुषावर्द्धिनं महासूदात्मकं तथाचिरुनत्वंपकाश्वरं ॐ दंसं पुं पुं कथ

नरुता नरुविष्मि वरुवावाहि कल्यदं सुलु अल्पकुलपिताः भनूत्रुषमानैश्च
 सर्वैश्च सुहायिनः ॥३॥ ॥३॥ दमवाच हगवानोरुमनसः श्रुतं तापर्यं ताश्चैव
 कलिका लुङ्गानां न ॥ अमुसिंह नरुचैव कथिता यागो नगं ॥ अता न ह यं भगवत्
 वक्रानं चपे न ज न सुहायिनः राष्यमानं न मयः श्रुतिरुवत् सयाहि सागकिंषा
 फं हं गीतिका नकादिहिः हगवता राषिकश्च अल्प नंदमिदं वचे ह्या गच्छति पापे सु
 हयस्या ह स सातगाः ॥३॥ हगवान्सा मि वज्रजो को तथ गगनः सर्व वीर्यं वीर्या
 गा वज्र सत्पवन सत्पं ॥३॥ ॥३॥ मिथी वज्रवावाही कल्पं महाकुरु वाजं या रा

इतवजवागहिक्रियातत्वा^{२०२}रुवाशीकिवावाकादीमंतामकल्यपथरिंशति३पठलंस
माफर^{२०३}यधसोसादि१^{२०४}याहृंपृष्टकंहृष्टाताहृं
त्रिखिगंमया. यदिशु^{२०५}चंवामलुचंवाममदाखनलिअन^{२०६}शुरुसम्वन१०१०
स्मिथावशकुरुया११म. लिखिगंनपालममुल. काहृममुपमहानगंन. कवमलेमहा
विहानेपाका. परवलिधामपूर्वगहृवहृक. श्री३वजदवीस्थवक. श्रीवजाचायेवत्तमनि.
झासातहृस्याकपात्तामचानाथलम. धर्मचिरुउयहृहृयां३. धश्री३वजवावाहिकल
परुकेवायां३. थ३कपाथपायक. दयेका३कपाहृल. थगुधर्मनंसत्तपाहिउवाहृयमात्त.

धृष्टकर्मकृतानां आत्मप्राप्याय प्रहृष्टिदायकपापसाह निदानयातसा श्रीचक्रवर्ति
कल्पमृत्तान्तकथा श्रीसिद्धिदायकपापसाह श्रीचक्रवर्तिपापसाह श्रीचक्रवर्ति
ब्रह्मचर्यसर्वदायालुहं कथायाम् (ॐ) २२२ ॥ शुभं शुभं शुभं

२२२



